ISSN 2349-6614

फरवरी, 2017

मूल्य : 25 ₹

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

ऋतुओं में न्यारा वसंत
अग-जग का प्यारा वसंत

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 14 अंक 12 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2015-2017 Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Shastri Circle, Udaipur

KTS Prime Merchandise Pvt. Ltd.

101-102, Vinayak Plaza, 100 Ft. Road, Opp. Royal Raj villas,
Shobhagpura Chouraha, Udaipur (Raj.) 313001

9116116404, 9116116405 (M)

Website - www.ktsprime.com, Email - info@ktsprime.com

Property

Plot, Flat, Shops, Agriculture Land and Commercial land Sale and Purchase

98929 83520 Pushkar Nahar
90042 42328 Dharmesh Duggar

Marketing

Ayurvedic Product, Hotel Package Discount Coupons, Health Check-up Holiday Package, Entertainment

Y. Khatri 9314948090 (M)

Club House

Upcoming Project A Family Club House With Full Entertainment of Gaming Zone, Pool, Restaurant

Nishit Chaplot 9829839008 (M)

I-Brain, Mind Power

Mid Brain Activation, DMIT Report
Vision Improvement, Speed Reading
Super Memory, Mind Mapping

Gajendra Malviya 9214449605 (M)

फरवरी
2017
वर्ष 14, अंक 12

प्रत्यूष

मूल्य 25 ₹
वार्षिक 300 ₹

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी
Supreme Designs

कम्प्यूटर ग्राफिक्स विकास सुवालका, गिरिराज सिंह ईश्वर सिंह

मुद्रक पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि.
गुलाब बाग रोड, उदयपुर (राज.) फोन : 2418482, 2410659

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, धीरज बिलोची
लोकेश दशोरा

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता

बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

अन्दर के पृष्ठों पर...

6 चुनाव चर्चा
पांच राज्यों की चुनावी चौसर

9 समय-चक्र
यादव कुल में महाभारत

12 लेखा-जोखा
कोढ़ में खाज !

22 अर्थक्षेत्र
पचास दिन की भरपाई करेगा पूरा साल

30 स्मृति शेष
शून्य में समाया ओम

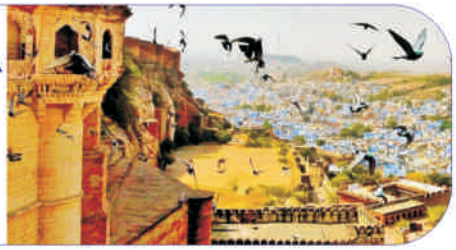

कार्यालय पता : 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष : 0294-2427616, 2414933, 2413477, 2100408-09, फेक्स : 0294-2525499
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
visit us at : www.pratyushpatrika.com, E-mail : pankajkumarsharrma@pratyushpatrika.com
pankajkumarsharma2013@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. गुलाब बाग रोड, उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर से प्रकाशित।

ॐ

Purohit Cafe

A South Indian Food Joint

N. K. Purohit

आपका विश्वास ही हमारी पहचान

सन् 1970 से 1980 तक दुबई तथा सन् 1981 से 1986 तक लंदन-अमेरिका में और सन् 1987 से उदयपुर में सेवाएं

❊ कैफे में पधारकर एक बार सेवा का मौका अवश्य देवें। ❊ आप व आपके परिवार की जायकेदार पसंद बेहतरीन, लाजवाब, शुद्ध और स्वादिष्ट इडली, डोसा, मसाला और अन्य व्यंजन। ❊ सपरिवार बैठने की व्यवस्था। ❊ पूर्ण रूप से वातानुकूलित, शान्त एवं आरामदायक। ❊ सेवकों द्वारा विनम्र आवभगत।

"Anand Plaza" Nr. Ayad Bridge, University Road,
Udaipur (Raj.) 313 001 Ph. : 0294-2429635
Visit us : www.purohitcafe.com

Jagat Niwas Palace

A Heritage Hotel

23-25, Lal Ghat, Udaipur - 313001 (Raj.) INDIA
Tel. : 0294-2422860, 2420133 Fax : 0294-2418512
E-mail : mail@jagatniwaspalace.com | Website : www.jagatniwaspalace.com

चुनाव सुधार का सही वक़्त

राजनीति और राजनेताओं की सूरत-सीरत बदलने की आज जैसी जरूरत है, वैसी शायद दशक-दो दशक पहले नहीं थी। चुनाव आयोग को इस दिशा में कदम उठाने होंगे और यदि संविधान में ही कहीं खामियां है, तो उन्हें तार्किक बहस के मंच पर लाना होगा। सबसे ज्यादा जरूरत है, राजनीतिक दलों से सम्बन्धित नियम-कानूनों को दुरूस्त करने की। सच्चे और अर्थपूर्ण लोकतंत्र के लिए यह ज़रूरी है। पिछले कुछ समय से देश में चुनाव सुधार की दिशा में सोचने का रूझान भी बढ़ा है। नववर्ष के पहले ही सप्ताह में देश की दो अहम संवैधानिक संस्थाओं ने एक ही दिन दो अलग-अलग पहल भी इस बारे में की। पांच जनवरी को एक जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव सुधार के महत्वपूर्ण मसले पर विचार के लिए सहमति दे दी। गंभीर आपराधिक मुकदमों का सामना कर रहे व्यक्तियों को चुनाव लड़ने की अनुमति दी जाए या नहीं, और चुने गए प्रतिनिधि को कब यानी किस सूरत में अयोग्य घोषित किया जा सकता है, आदि प्रश्नों पर विचार के लिए पांच न्यायाधीशों की संविधान पीठ गठित की जाएगी। दूसरी ओर इसी दिन चुनाव आयोग ने सुप्रीम कोर्ट से कहा कि प्रत्याशियों के लिए अपने आय के स्रोत का खुलासा करना भी अनिवार्य बनाया जाना चाहिए। आयोग ने यह भी सुझाया है कि उम्मीदवार स्वयं के अलावा परिवार के अन्य सदस्यों के आय के स्रोत का भी खुलासा करें।

यों तो तमाम राजनैतिक दल सैद्धान्तिक तौर पर इस बात पर हमराय हैं कि विधायिका में आपराधिक प्रवृत्ति वालों का प्रवेश रोकने के उपाय होने चाहिए, पर जब चुनाव में टिकट देने का समय आता है तो वे शुद्धिकरण की अपनी राय को धकिया कर ऐसे उम्मीदवार के चयन पर मोहर ठोक देते हैं, जो अपने धनबल और बाहुबल के जरिए भीड़ जुटाने की क्षमता रखता हो। जब गंभीर किस्म के आपराधिक मामलों के आरोपियों को टिकट से वंचित करने का कानून बनाने की बात आती है तो, राजनैतिक दलों का तर्क होता है कि राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं को प्राय: ईर्ष्या-द्वेष और आन्दोलनों के दौरान झूठे मुकदमों का शिकार बना दिया जाता है, ऐसे में उन्हें चुनाव से बाहर कर देना नागरिक अधिकारों का हनन और अलोकतांत्रिक होगा। उनकी इस दलील से नाइत्तफाकी नहीं हो सकती, किन्तु यह भी सही है कि मौजूदा जनप्रतिनिधित्व कानून में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है, जो दागियों को उम्मीदवार बनने से रोक सके।

आश्चर्यजनक बात है कि वर्तमान में दो वर्ष से कम कारावास की सजा भुगत रहे अभियुक्त को सींखचों के पीछे रहने के बावजूद न केवल चुनाव मैदान में ताल ठोकने का अधिकार प्राप्त है वरन यदि कोई अभियुक्त, चाहे उसे 5-10 साल की सजा क्यों न हुई हो, जमानत पर बाहर है तो कानून उसे वोट देने का भी अधिकार भी देता है। सितम्बर 2013 में संसद ने जन प्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा 62(5) को संशोधित कर जेल में बंद अभियुक्त को भी वोट डालने और चुनाव लड़ने का अधिकार दे दिया। इतना भी ध्यान नहीं रखा गया कि यह मुद्दा मानवाधिकारों का नहीं वरन लोकतंत्र को शुद्ध-बुद्ध रखने और अपराधिक प्रवृत्ति के लोगों को चुनाव में प्रवेश करने से रोकने का था। मानवाधिकारों की दुहाई देकर अपराधियों और समाजविरोधियों को लोकतंत्र के मंदिर में प्रवेश कैसे दिया जा सकता है ?

राजनैतिक दल और उन्हें मिलने वाला चुनावी चंदा भी चुनाव आयोग के लिए काफी बड़ी चुनौती बना हुआ है। आयकर और सम्पत्ति कर से छूट मिलने के चलते ये दल आयकर रिटर्न भरने के प्रति बेपरवाह हैं। वर्ष 1996 में लोकसभा चुनाव का खर्च प्रति प्रत्याशी बढ़कर 1,50,000 और विधानसभा के चुनावों का 50,000 रुपए तक था। 2014 में यह खर्च बढ़कर क्रमश: 70 लाख और 28 लाख तक पहुंच गया। इनके अलावा भी बहुत से ऐसे खर्च हैं जो तय सीमा के अन्दर नहीं आते। इसलिए राजनैतिक दल और प्रत्याशी दोनों इस खर्च की भरपाई के लिए अनियमित और अनुचित पगडंडियों की खोज कर निकल पड़ते हैं।

मौजूदा राजनैतिक दलों पर निगाह डाली जाए तो उनमें से ज्यादातर परिवार, वंश और व्यक्तिवाद के शिकार हैं। राजनीति में रहकर फंड जुटाना ही इनके कर्त्ताधर्ताओं का काम है, इन दलों के न संगठनात्मक चुनाव होते हैं और न ही कार्यकर्त्ताओं को आलाकमान के सामने ज़बान खोलने की इज़ाजत।

पार्टियों को मिलने वाले चंदे के बारे में जानकारी सार्वजनिक करने की मांग पुरानी है। मगर आज तक इस पर सार्थक बहस से बचा जा रहा है। भाजपा की पिछले माह नई दिल्ली में हुई राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में प्रधानमंत्री के इस वक्तव्य से कि 'पार्टियों को मिलने वाले चुनावी चंद के बारे में जानकारी पाना जनता का हक़ है', से जरूर कुछ उम्मीद जगी है। प्रधानमंत्री की इस राय को अमलीजामा पहनाने की पहल भी भाजपा से ही शुरू होनी चाहिए। इससे दूसरे दलों के लिए बाध्यता की स्थिति उत्पन्न हो सकेगी।

सर्वोच्च न्यायालय का पिछले ही दिनों दिया गया वह निर्णय भी स्वागत योग्य है, जिसमें चुनाव के दौरान धर्म-जाति के नाम पर वोट मांगने को पूर्ण रूप से अवैध ठहराया गया है। सात न्यायाधीशों की खंडपीठ ने चार-तीन के बहुमत से यह फैसला दिया। राजनैतिक दल और सम्प्रदाय इसमें भी गलियां ढूंढने की कोशिश में हैं। चुनाव आयोग पर निर्भर करता है कि वह, ऐसे प्रयासों को किस तरह नाकाम करता है।

पांच राज्यों की चुनावी चौसर

शांतिलाल शर्मा

उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, मणिपुर और गोवा में चुनावी अश्वमेध शुरू हो चुका है। राष्ट्रीय पाटियों और क्षेत्रीय दलों के इस सियासी समर में 16.8 करोड़ मतदाता और 690 सीटों पर लाखों कार्यकर्ता प्राणपण से जुट गए हैं। इन चुनावों पर नजर इसलिए भी है कि साल 2019 के लोकसभा चुनाव का रास्ता इनके परिणामों के बीच से ही आकार लेगा, खासकर उत्तरप्रदेश से।

आबादी के लिहाज से सबसे बड़े राज्य उत्तरप्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर विधानसभाओं के चुनाव चार फरवरी से शुरू होकर आठ मार्च तक चलेंगे। चुनावी नतीजे एक साथ ग्यारह मार्च को आएंगे, होली से एक दिन पहले। पांचों राज्यों में सोलह करोड़ से अधिक मतदाता हैं, जो देश के कुल वोटर्स के उन्नीस फीसद हैं। देश की पांच सौ पैंतालीस लोकसभा सीटों में से एक सौ दो इन पांच राज्यों में आती हैं। सबसे ज्यादा लोकसभा की अस्सी सीटें यूपी से होने के कारण इन चुनावों की विशेष अहमियत है। विधायिका की यहां सर्वाधिक चार सौ तीन सीटें हैं। ये चुनाव ऐसे समय हो रहे हैं, जब केन्द्र सरकार अपना आधा कार्यकाल पूरा कर चुकी है।

पंजाब, गोवा और मणिपुर विधानसभाओं का कार्यकाल 18 मार्च, उत्तराखंड का 26 मार्च और उत्तरप्रदेश विधानसभा का कार्यकाल 27 मई को पूरा हो रहा है। लिहाजा मार्च में ही नई प्रदेश सरकारों का अस्तित्व में आना जरूरी है। इन पांच राज्यों के कुल 690 निर्वाचन क्षेत्रों में से 117 पंजाब, 403 उत्तरप्रदेश, 40 गोवा, 70 उत्तराखंड और 60 मणिपुर में हैं। यह देश के कुल 4033 विस सीटों का 17 फीसद है। देश की आबादी 127 करोड़ है और 26 करोड़ यानी 21 फीसद जनसंख्या इन राज्यों में रहती हैं।

चुनाव-दर-चुनाव का सिलसिला

2017 में हो रहे इन पांच राज्यों के चुनावों के बाद गुजरात सहित कुछ और राज्यों के भी विधानसभा चुनाव निकट होंगे। 2018 में और भी राज्यों के विस चुनाव होने हैं। ऐसा होते-होते आम चुनाव का शंकनाद हो जाएगा। यानी 2019 तक चुनाव ही चुनाव हैं। यदि आम चुनाव व विधानसभा चुनाव यथासंभव एक साथ हों तो चुनाव सुधार की गुंजाइश बन सकती है। चुनाव लोकतंत्र का हिस्सा है। लेकिन इसका यह आशय कतई नहीं कि सरकार, प्रशासन और जनता हर साल चुनावी शोशेबाजी में ही उलझी रहे, जबकि देश की प्राथमिक समस्याएं सुरसा के मुंह की तरह बढ़ती ही जा रही हैं। यदि राजनीतिक दल चुनावी चक्र में उलझे रहे तो राष्ट्रीय महत्त्व के मसलों का क्या होगा? हर राज्य की भौगोलिक, सांस्कृतिक और क्षेत्रीय समस्याएं, अपनी राजनीति और अपने मुद्दे होते हैं। ऐसे में कई बार राज्यों में केन्द्र की राजनीति के मुद्दों से अलग मुद्दे हावी होकर चुनाव की दशा दिशा तय करते हैं।

नोटबंदी व चुनाव आयोग की सख्ती

8 नवम्बर को प्रधानमंत्री द्वारा नोटबंदी ऐलान के बाद देश में ये पहले चुनाव हैं। आम धारणा है कि हर चुनाव में पैसे का खेल चलता है। इसमें कालाधन मतदाताओं को प्रलोभन देकर अपने पक्ष में लाने की भरसक कोशिश करता है। भले ही दलों ने इसमें भी पतली गलियां निकाली होंगी, मगर इतना तय है कि इस बार धनबल, भ्रष्टाचार और कालाधन खुलकर बाजीगरी नहीं दिखा पाएंगे। हर पार्टी और हर उम्मीदवार के सामने खर्चों को सीमित रखने और कुछ हद तक कैशलेस भुगतान की मजबूरी भी होगी। चुनाव आयोग भी सख्ती दिखाएगा। अलग-अलग राज्य में यह सीमा प्रति उम्मीदवार 20 से 28 लाख रुपये है। आचार संहिता के चलते लोकप्रियता पाने के लिए इस बार पेड न्यूज पर पाबंदी सख्त रहेगी। चुनाव आयोग रंगीन निर्देशिका, पोस्टर्स, नो डिमांड एफिडेविट, फोटोवोटर स्लिप, ईवीएम पर कैंडिडेट्स की फोटो जैसी अनेक नई व्यवस्थाएं लागू कर रहा है। सर्वोच्च न्यायालय फैसला दे चुका है कि धर्म, जाति के आधार पर वोट मांगना गैर कानूनी होगा। नई कसौटी पर विफल किन्तु मतगणना में जीते उम्मीदवारों का चुनाव गैर-कानूनी सिद्ध हो सकता है। दूसरी ओर दागी उम्मीदवारों को चुनाव लड़ने से रोकने अथवा चुनाव लड़ने के लिए स्वीकृति देने का मसला शीर्ष अदालत के संज्ञान में है, जिस पर कोई निर्णय आ सकता है।

जंग-ए-अवध

उत्तरप्रदेश का चुनाव भाजपा और स्वयं प्रधानमंत्री मोदी के लिए 'एसिड टेस्ट' से कम नहीं है। 'सबका साथ सबका विकास' जैसे नारों की हकीकत का पता यहीं से लगेगा। उन्हें अपना राजनीतिक भविष्य सुरक्षित करने के लिए 'जंग-ए-अवध' में विजयी होना जरूरी है। यूपी के 14.16 करोड़ मतदाताओं में से जिस पार्टी को 30 फीसद से ज्यादा वोट मिलेंगे, जीत उसकी तय है। लेकिन ये तीस फीसद वोटर 4 बड़ी जातियों में बंटे हैं। 23 प्रति. अगड़ी, 41 प्रति. पिछड़ी, 21.1 प्रति दलित और 19.3 प्रति. मुस्लिम। राष्ट्रीय दल कहलाने वाली भाजपा 14 साल का वनवास काट रही है तो कांग्रेस 27 साल से सत्ता से बाहर है। कम्युनिस्ट सैकुलर पार्टियों के नाम पर गैर भाजपा दलों को समर्थन देते रहे हैं। डेढ़ दशक से यहां समाजवादी पार्टी के मुलायम सिंह यादव और बहुजन समाजवादी पार्टी की मायावती एक-दूसरे को छकाकर सत्ता सिंहासन पर आरूढ़ रहते आए हैं। 2012 के विधानसभा चुनाव में मुलायम ने अपने पुत्र को मुख्यमंत्री पद सौंपा था। इस बार अखिलेश चुनाव से पहले ही राजनीति और अखाड़े के पहलवान पिता को चित्त कर पार्टी और सत्ता के सुप्रीमो बन गए। बसपा की सुप्रीमो इस बार जीत पक्की मान कर जाति व धर्म के नाम पर ही अपना आधार मजबूत कर रही हैं। राज्य की कुल 403 सीटों में से पिछले चुनाव में सपा ने 224 सीटें जीत कर सरताज हासिल किया। राज्य के 75 जिलों में 4 फरवरी से 8 मार्च तक यानी करीबन हर चौथे दिन मतदान होना है। इंडिया टुडे-एक्सिस तथा एबीपी-लोकनीति का सर्वे सत्तारूढ़ पार्टी की आपसी कलह से भाजपा सरकार की संभावनाएं जता रहा है। वहीं माना जाता है कि 83 फीसदी सीटों पर जाति तय करती है सरकार किसकी बनेगी। भाजपा के हारने की संभावनाएं तभी बलवती होंगी जब 2014 में मिले वोट में से 15 प्रति. दूसरी पार्टी में चले जाएं।

पांच नदियों वाला पंजाब

पंजाब सरहदी इलाका है। इस प्रदेश में पिछले डेढ़ दशक से अकाली राजनीति का दबदबा है। स्वर्णमंदिर में 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' के बाद कांग्रेस की स्थिति कमजोर हुई, पर वह भी इस सूबे पर अभी पकड़ बनाए है। यहां सत्तारूढ़ अकाली-भाजपा गठबंधन लगातार तीसरी बार सत्ता में बने रहने की कोशिश में है। वहीं कांग्रेस अपने खोए जनाधार को मजबूत करने और आम आदमी पार्टी अपने पैर पसारने में जुटी है। कुल 117 सीटों पर करीब दो करोड़ मतदाताओं को रिझाने के लिए सभी दल ऐड़ी-चोटी का जोर लगा रहे हैं। शिरोमणि अकाली दल के मुखिया और मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल (89) बुढ़ाते नायक हैं। वहीं कांग्रेस ने अपनी ताकत बढ़ाने के लिए कद्दावर नेता और पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टेन अमरिंदर सिंह को कमान सौंपी है जिन्होंने नवजोत सिंह का बीजेपी से हरण कर लिया है। सत्ता विरोधी लहर से परेशान मुख्यमंत्री बादल ने कांग्रेस के तेजतर्रार नेता अमरिंदर सिंह को अपने घर में ही उलझाने के लिए पूर्व सेनाध्यक्ष जनरल जे जे सिंह को उनके सामने उतारा है। पंजाब में भाजपा वैसे भी दूसरे नम्बर की पार्टी है। नाक की लड़ाई तो पंजाबियों में ही है। अगर आम आदमी पार्टी यहां कुछ कर पाती है तो अरविंद केजरीवाल मोदी-विरोधी राजनीति के एक मजबूत विकल्प बनेंगे। यह भी हो सकता है कि कांग्रेस के परम्परागत वोटरों में से कुछ उधर खिसक गए तो वे कांग्रेस के लिए भी मुसीबत बन सकते हैं, जैसा कि पिछली बार दिल्ली प्रदेश में हुआ था। भाजपा भी राहुल की बजाय केजरीवाल को लेकर कुछ ज्यादा ही चौकन्नी है। इंडिया टुडे-एक्सिस सर्वे पंजाब में कांग्रेस को सत्ता के बिलकुल करीब ला रहा है। यह सर्वे आप को दूसरे और अकाली-भाजपा के तीसरे स्थान पर खिसकने के आसार बताता है। एबीपी-लोकनीति सर्वे अकाली-भाजपा गठबंधन की हैट्रिक और कांग्रेस-केजरीवाल को झटका लगने की संभावना बता रहे हैं।

उत्तराखंड में चुनावी जलजला

कांग्रेसी मुख्यमंत्री हरीश रावत और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष अजय भट्ट सत्ता हथियाने के लिए जी-जान से जुटे हैं। दोनों ही राज्य में तीन चौथाई बहुमत अपने पक्ष में मानते हैं। यूकेडी के काशीसिंह दोनों दलों पर जनमुद्दों की उपेक्षा के आरोप लगा रहे हैं। मुख्य मुकाबला भाजपा-कांग्रेस के बीच होना है। कुल सत्तर सीटों और पौन करोड़ मतदाताओं के बीच ऊहापोह वाली स्थिति है। पिछले साल राज्य में भारी सियासी उठापटक हुई थी और कुछ समय के लिए राष्ट्रपति शासन भी लगा। लेकिन सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद कांग्रेस की सरकार फिर बहाल हुई। चुनाव का ऐलान होते ही यहां राजनीति फिर गरमाई है। कांग्रेस अपने अस्तित्व से जूझ रही है, तो भाजपा अपने राजनीतिक वजूद को दांव पर लगा कर भी सत्ता का वरण चाहती है। दोनों के लिए यह चुनाव तलवार की धार पर चलने सरीखा है। रावत सरकार में हाल ही में बड़ी संख्या में बनाए दर्जाधारी मंत्री आचार संहिता के चलते लालबत्ती विहीन हो गए हैं। भाजपा ने यहां 2001 में नित्यानंद स्वामी के नेतृत्व में पहली बार सरकार बनाई थी। बाद में बीसी खंडूरी भी मुख्यमंत्री बने। इंडिया टुडे-एक्सिस और एबीपी-लोकनीति सर्वे उत्तराखंड में भाजपा का पलड़ा इस बार भारी मान रहे हैं। 2012 के पिछले चुनाव में कांग्रेस व भाजपा के बीच एक सीट का मामूली अंतर था और इस बार खनन, शराब और भू माफियाओं की सत्ता तक पहुंच के आरोप लगते रहे हैं।

'सेवन सिस्टर्स स्टेट'

पूर्वोत्तर को कांग्रेस का गढ़ माना जाता रहा है। लेकिन पिछले कुछ माह पहले 'सेवन सिस्टर्स स्टेट' कहे जाने वाले पूर्वी राज्यों में से एक महत्वपूर्ण राज्य असम में भाजपा की सरकार बनी और अरुणाचल प्रदेश में भी कांग्रेस को बेदखल कर दिया गया है। भाजपा को उम्मीद है कि मणिपुर में इस बार कमल खिलना संभव है। 60 सीटों और करीब 20 लाख मतदाताओं वाले मणिपुर में 2012 के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस को 42 सीटें हासिल हुई थी। वहीं टीएमसी, एमएससी और एनपीएफ जैसे दल दहाई से नीचे का आंकड़ा भी नहीं छू पाए।

भाजपा को तो एक भी सीट नसीब नहीं हुई। राज्य में इस बार चार व आठ मार्च को चुनाव होगा। मणिपुर के मुख्यमंत्री ओकराम इबोबी पिछले पन्द्रह साल से कुर्सी पर जमे हैं। पिछले चुनाव में उन्हें 49 विधायकों का समर्थन प्राप्त था। भाजपा के पास नाम के लिए सिर्फ एक विधायक है। फिर भी असम व अरूणाचल प्रदेश से उत्साहित भाजपा सम्पूर्ण पूर्वोत्तर राज्यों को अपनी मुट्ठी में लेने को बेताब है। गलफांस यह है कि भाजपा सेना को दिए गए विशेषाधिकार अफस्पा की समर्थक है, जबकि वहां के लोगों में इस कानून का भारी विरोध है। इरोम शर्मिला नामक युवती कई सालों का अनशन तोड़कर चुनाव मैदान में कूदी है। मणिपुर में बेरोजगारी भी काफी ज्यादा है और केन्द्र से चली विकास की योजनाएं भी पूरी तरह यहां नहीं पहुंची हैं। हालात बेकाबू हैं और आतंकी संगठन कहर बरपाते रहते हैं। ऐसे में यहां भाजपा की दाल गलती है या कांग्रेस चौथी बार सत्ता में वापसी कर पाती है। यह कहना चुनाव परिणाम से पूर्व मात्र कयासबाजी होगी।

समुद्री लहरों से खेलता गोवा

गोवा छोटा राज्य है। दिग्गज राजनेता केन्द्रीय रक्षामंत्री मनोहर परिकर की यहां धमक है। 2012 के विधानसभा चुनाव में उन्हीं के नेतृत्व में भाजपा की प्रदेश में सरकार बनी थी। 40 सीटों वाले गोवा राज्य में भाजपा को 21 सीटें मिली थी। करीब ग्यारह लाख मतदाताओं वाले मनोरम तटवर्ती इस राज्य में 4 फरवरी को मतदान होना है। मुख्यमंत्री लक्ष्मीकान्त पार्सेकर सरकार में दुबारा वापसी की जी-तोड़ कोशिशें कर रहे हैं। लेकिन भाजपा की सहयोगी महाराष्ट्र गोमांतक पार्टी गठबंधन तोड़ अलग से चुनाव में उतरी है। सत्ता विरोधी रूझान के चलते कांग्रेस अपनी राह आसान मान रही है। भाजपा हाईकमान विकट परेशानी भांप कर मुख्यमंत्री के नाम का एलान करने से बच रहा है। चुनाव के बाद केन्द्र की राजनीति से मनोहर परिकर को गोवा भेजने का विकल्प भी खुला है। सहयोगी एमजीपी के साथ ही शिवसेना का भी भाजपा से विश्वास उठ गया है।

अन्ततः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और रक्षामंत्री मनोहर परिकर ही भाजपा के तारणहार बन सकते हैं। इंडिया टुडे-एक्सिस सर्वे के मुताबिक भाजपा यहां पर फिर से सत्ता में वापसी करती दिख रही है। शिवसेना और एमजीपी यदि वोट काटेंगे तो कांग्रेस की राह काफी आसान बन सकती है। वहीं आम आदमी पार्टी के अरविन्द केजरीवाल दक्षिण भारत में खाता खोलने को बेताब हैं।

With Best Compliments

DHL EXPRESS INDIA PVT. LTD.

DHL

Office :- 53, Panchwati, Udaipur, Tel. : 0294-2414388

E-mail : savvyan2006@yahoo.co.in I savvyan@sancharnet.in

यादव कुल में महाभारत

पहलवान पिता को बेटे ने किया चित्त

सपा और साइकल पर अखिलेश का कब्जा

-नंदकिशोर-

इतिहास अपने को दोहराता है, नये परिवेश में वे लोग हैं जो अतीत से सबक नहीं लेते। समाजवादी पार्टी के मुखिया मुलायम सिंह यादव अपने राजनीतिक जीवन के सबसे मुश्किल दौर से गुजर रहे हैं। पार्टी और पुत्र के बीच प्राय: उन्होंने पुत्र का वरण किया। फिर भी इस यादव कुल में पांच माह से चला आ रहा संकट थमने का नाम नहीं ले रहा। इधर चुनाव की तारीखों का ऐलान हो चुका है और प्रदेश में 11 फरवरी से 8 मार्च तक चुनाव प्रक्रिया चलेगी। परन्तु बड़ा सवाल यह है कि क्या यूपी में सत्तारूढ़ समाजवादी दल द्वारा फतह हासिल कर पाएगा या कुनबे की कलह उसे ले डूबेगी। राजनीति के दंगल में 1967 से पहलवानी चरखा दांव के लिए मशहूर मुलायम सिंह यादव 2017 के विधानसभा चुनाव से पहले ही अपने बेटे अखिलेश यादव के हाथों पछाड़ खा कर चित्त हो गए। आपसी वर्चस्व की लड़ाई में महाभारत का इतिहास नये सिरे से जीवंत हो जाएगा ? पार्टी पर कब्जे की लड़ाई में मुलायम बेटे से हार चुके हैं। पिछले काफी अर्से से यूपी के हालात ही बता रहे हैं कि सपा के अंदरूनी झगड़े नहीं निपटे तो इस राजनैतिक यादव कुनबे की बरबादी तय है।

ययाति मुनि के बेटे यदु के पुत्र के नाम से अस्तित्व में आए यादव वंश के लिए महाभारत काल में कौरव-पांडव भाइयों का कलह विनाशकारी सिद्ध हुआ था। युद्ध में सभी कौरव व उनके पुत्र मारे गए। यही स्थिति पांडवों की हुई। यदुवंशी कृष्ण, उनकी अक्षोहिणी सेना व पांडव सहित दोनों पक्ष नहीं बचे। उत्तरप्रदेश की राजनीति में सबसे शक्तिशाली कहे जाने वाले यादव परिवार में भी कुछ-कुछ वैसा ही परिदृश्य बन रहा है। इस परिवार से संबद्ध 45 लोग अभी सत्ता का सुख भोग रहे हैं, जिनके बीच वर्चस्व की जंग छिड़ी है। बाप-बेटा, चाचा-भतीजा, सास-बहू, बीवी-बच्चा, भाई-भाई, सगे-रिश्तेदार सभी एक-दूसरे पर तलवारें खींच रहे हैं। प्रसिद्ध उपन्यास 'चन्द्रकांता संतति' में तिलिस्मी और ऐय्यारी के कारनामों की एक कहानी खत्म होती है तो दूसरी शुरू हो जाती है। ऐसा ही कुछ सपा में जारी है। पच्चीस साल पुरानी पार्टी दो फाड़ हो गई है। एक तरफ मुलायम-शिवपाल गुट तो दूसरी ओर अखिलेश-रामगोपाल गुट। पहले में गिनती के तो दूसरे में अधिकांश लोग बंटे हैं। दोनों तरफ शिखंडी के रूप में अमरसिंह और आजम खान अपने मोहरे चला रहे हैं।

कलह की पृष्ठभूमि

कलह की शुरुआत 15 अगस्त, 16 से हुई, जिसका कारण बने मुलायम के भाई शिवपाल तो मुलायम भाई के पक्ष में रहे। सितम्बर माह में तो परिवार का झगड़ा सड़क पर आ गया। मुख्यमंत्री अखिलेश ने अपने मुख्य सचिव को हटा दिया और चाचा शिवपाल की मंत्री पद से छुट्टी कर दी। मुलायम ने हटाए गए भाई को प्रदेशाध्यक्ष बनाया। शह और मात का यह खेल सितम्बर और अक्टूबर में चरम पर पहुंच गया। मुलायम की दूसरी पत्नी साधना भी इसमें कूद पड़ी। उसने अखिलेश की पत्नी डिंपल को तीखी बहस के बाद घर से निकाला। बाहुबली अतीक अहमद के कौमी एकता दल का सपा में विलय होने से मुख्यमंत्री अखिलेश फिर भड़क उठे। बैठकों के दौर चलते रहे। अक्टूबर के अंत में शिवपाल समेत कई मंत्री दुबारा बर्खास्त हुए तो मुलायम ने अखिलेश समर्थक रामगोपाल को पार्टी से बाहर कर दिया। सपा दफ्तर में अखिलेश-शिवपाल के बीच हाथापाई हुई और फिर सुलह भी। शिवपाल समर्थकों की वापसी हुई। असली महाभारत की शुरुआत 28 दिसम्बर को मुलायम द्वारा 325 प्रत्याशियों की सूची जारी करने से हुई। अखिलेश ने भी दूसरे दिन 235 उम्मीदवारों की सूची जारी कर दी। साल के अंत में रार बढ़ती गई और मुलायम ने अखिलेश व रामगोपाल को पार्टी से बर्खास्त किया तो दोनों ने सपा का एक जनवरी को महाधिवेशन बुला कर मुलायम को ही राष्ट्रीय अध्यक्ष पद से ही हटा दिया और स्वयं अखिलेश राष्ट्रीय अध्यक्ष बन गए। इस जोड़ी ने नया पैंतरा अख्तियार कर सियासी वोटों की खातिर कुर्मी समाज के नरेश उत्तम पटेल को प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त कर शिवपाल और अमरसिंह को पार्टी से निष्कासित कर दिया। 3 जनवरी को मंत्री आजम खां की अगुआई में पिता-पुत्र के बीच 3 घंटे बंद कमरे में हुई बातचीत बेनतीजा रही। फिर भी सुलह की कोशिशें जारी रहीं। अखिलेश चुनाव बाद पिता के लिए तो राष्ट्रीय अध्यक्ष पद छोड़ने को तैयार हैं पर चाचा

शिवपाल को राज्य की राजनीति से दिल्ली में शिफ्ट करना और अमरसिंह को हमेशा के लिए बाहर करना चाहते हैं। कुनबे की कलह का सम्पूर्ण ड्रामा, एक दूसरे को छकाने के दांव-पेच से भरपूर है। बड़ा सवाल यह है कि अखिलेश चक्रव्यूह को भेद बाहर निकल पाएंगे अथवा अभिमन्यु की तरह फंस कर दम तोड़ देंगे। सही जवाब 11 मार्च को चुनाव परिणामों के बाद ही मिल पाएगा।

कठिन परीक्षा से रुबरु अखिलेश

मुख्यमंत्री अखिलेश ने अपने पिता मुलायम की छांव तले ही अपना राजनैतिक जीवन शुरू किया। 15 मार्च, 2012 को बचपन में टीपू कहलाने वाले अखिलेश को मुलायम सिंह ने पुत्र मोह में यूपी का मुख्यमंत्री बनाया था। तकरीबन साढ़े चार साल तो पिता की छाया से मुक्त न हो पाए, परन्तु पिछले साल उन्होंने पिता से अलग छवि गढ़ना शुरू किया। हर जिले में अपनी पहचान 'विकास पुरुष' के रूप में दर्ज कराई। अचानक शुरू हुई वर्चस्व की लड़ाई सड़क पर आ गई। वे युवाओं में विशेष लोकप्रिय हैं। बाहुबलियों को दरकिनार करना, मुलायम को रास नहीं आया, जो उनकी सियासत का अभिन्न अंग रहा। रामगोपाल और अखिलेश की जोड़ी समय के साथ सब पर हावी होती गई और अब वे ऐसे निर्णायक मोड़ पर पहुंच गए, जहां से पीछे हटना नामुमकिन है। अखिलेश ने अपने पिता से सीखे दांव उन्हीं पर आजमाना शुरू कर दिया तो मुलायम ने उन्हें सपा से ही निकाल बाहर किया। इस बीच अखिलेश को परदे के पीछे से कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी और चौधरी चरणसिंह के युवा पौत्र जयंत चौधरी का साथ मिल गया। उनके चुनावी रणनीतिकार अमेरिका मूल के स्टीव जार्डिन की भी बड़ी भूमिका इस पूरे घटनाक्रम में नजर आई। चुनावी वेला में अखिलेश 1239 फैसले और घोषणाएं करके मतदाताओं को रिझाने का प्रयास कर चुके हैं। नए साल में सपा के राष्ट्रीय अधिवेशन में वे पहले ही मुलायम, शिवपाल और अमरसिंह पर कठोर प्रहार कर चुके। सियासत के सधे खिलाड़ी की तरह उन्होंने हर दांव को कुशलता से चला। बहरहाल तकनीकी पार्टी का चुनाव चिह्न 'साइकल' फिलहाल दोनों धड़ों के बीच 'साइक्लोन' बना रहा। उनके द्वारा बुलाए अधिवेशन का पार्टी विधान के अनुसार क्या होगा? अभी कई सवालों का जवाब मिलना बाकी है। बताया जा रहा है कि यूपी के मतदाताओं के बीच मुख्यमंत्री पद की लोकप्रियता में अखिलेश सिरमौर हैं। यादव-मुस्लिम गठजोड़ क्या रूप लेता है, इसी पर उनका भविष्य टिका है।

बेआबरु होकर निकले

बाप-बेटे के इस सत्ता संघर्ष में मुलायम अपने ही बनाए दल से दरकिनार हुए। समाजवादी पार्टी को बनाने और गांव-शहर तक फैलाने में मुलायम सिंह यादव ने खून-पसीना बहाया। सालों साइकल पर चंदा मांग कर, झोंपड़ी में रात-बिताकर और भूखे रह कर उसे सींचा। वे 1967 में पहली बार विधायक बने। इसके बाद सात बार विधायक और छह बार सांसद। वे देश के रक्षामंत्री भी रहे और तीन बार यूपी के मुख्यमंत्री बने। 24 साल से समाजवादी पार्टी का अध्यक्ष पद संभालने वाले मुलायम अब सपा से बड़े बेआबरू होकर निकाले गए। वे अपने जमाने के मशहूर पहलवान भी रहे। वे दांव चलने में माहिर तो हैं परन्तु हाल फिलहाल वे चारों खाने चित्त हैं। यह भी कयास है कि वे अपने पुत्र को प्रमोट करने के लिए यह ड्रामा कर रहे हैं। राजनीति के अखाड़े में नेताजी ने बार-बार स्टैण्ड बदलते हुए कई दांव चले और विरोधियों को चित्त किया। राजनीति में हमेशा दो और दो का जोड़ चार नहीं होता। जनता गंभीर नेतृत्व चाहती है, प्रहसन के नायक नहीं। सपा के अंदरूनी कलह से परम्परागत समाजवादी कार्यकर्ता सिर धुनता नजर आया। राम मनोहर लोहिया व जयप्रकाश जी की समाजवादी आत्माएं भी इस प्रहसन पर शायद जार-जार आंसू बहाती होंगी।

सपा विरोधियों ने कसी मुश्कें

पिछले आम चुनाव में यूपी की 80 लोकसभा सीटों में से अकेले 71 पर और दो पर सहयोगियों को जीता चुकी भाजपा आर-पार की लड़ाई के मूड में है। दो बार मुख्यमंत्री रही बसपा सुप्रीमो मायावती यादवी लड़ाई को अपने पक्ष में मान कर दोगुने उत्साह से मैदान में डटी हैं। जिस कांग्रेस को लोग यूपी में कोमा में जा चुकी मान चुके, उसमें अब हरकत दिखाई दे रही है। राहुल गांधी अखिलेश से गठबंधन चाहते थे और हुआ भी वही। वहीं पश्चिमी यूपी में अजित सिंह का राष्ट्रीय लोकदल अपने पांव पसारने में जुटा है। सपा का दूसरा बड़ा आधार माने जाने वाले मुस्लिम वोटर खामोश हैं। आजम खां दुविधा में तो बाहुबली अतीक अहमद व शिगबतुल्ला अंसारी ब्रेकडाउन गाड़ी छोड़कर हाईवे पर फर्राटा भरने को तैयार गाड़ी में बैठने की जुगत में हैं। अमनमणि त्रिपाठी और राजा भैया जैसे मसल्स पॉवर आरोपी भी 'तेल देखो तेल की धार देखो' की नीति पर चलते हुए अखिलेश के साथ है।

मौजूदा गणित अखिलेश के साथ

नववर्ष पर बुलाये गए सपा के राष्ट्रीय अधिवेशन में अखिलेश के साथ 223 सपा विधायकों में से करीब 200 विधायक मौजूद थे। वहीं इसी दिन मुलायम द्वारा आहूत बैठक में 15 विधायक आए। अपनी किरकिरी होते देख नेताजी ने यह चर्चा चलवा दी कि यह तो मुलायम सिंह की रणनीति ही थी। यूपी के आम मतदाता मान रहे हैं कि अखिलेश काम करने वाले नौजवान हैं। इन्हें साढ़े चार साल तक वांछित विकास कार्य नहीं करने दिया गया, अन्यथा पूरे प्रदेश की तस्वीर ही बदल देते। उनके कट्टर समर्थकों ने प्रदेश सपा कार्यालय पर कब्जा कर लिया है। पार्टी के पदाधिकारी, कार्यकर्ता, युवा, विधायक, विधान परिषद् सदस्य और सांसद अखिलेश को उगता सूरज मान कर अर्घ्य की मुद्रा में हैं। अखिलेश ने चुनाव आयोग को 220 विधायकों तथा 60 विधान परिषद् सदस्यों की सूची सौंप कर जता दिया है कि असली समाजवादी पार्टी के वही पुरोधा हैं।

सपा और साइकल पर अखिलेश का कब्जा

पन्द्रह दिन चली रस्साकशी में अखिलेश और मुलायम कभी नरम, कभी गरम होते रहे। चुनाव से ठीक पहले आजम खां जैसे नेताओं की सुलह की तमाम कोशिशें परवान न चढ़ पाईं। 16 जनवरी को चुनाव आयोग ने अंतिम फैसला देते हुए कहा कि अखिलेश धड़ा ही असली समाजवादी पार्टी है और दिए गए सबूतों के आधार पर पार्टी का चुनाव चिह्न साइकल पर भी उसका भी दावा मजबूत है। अखिलेश को आयोग के इस निर्णय से मानो ऑक्सीजन ही मिल गई। मुलायम के बुलावे पर वे उनसे मिलने भी पहुंचे, मगर सिर्फ रस्म अदायगी तक। भले ही मुलायम कह रहे कि वो कोर्ट जाएंगे और बेटे के खिलाफ चुनाव लड़ने की धमकी भी देते रहे। लेकिन लोग अब भी इसे ड्रामेबाजी मान रहे हैं। इस फैसले के बाद यूपी की सियासत में नए रंग घुलते नजर आ रहे हैं। यादव-मुस्लिम वोटरों का रूख और भाजपा-बसपा की रणनीति क्या रूप लेगी। इस पर बहुत कुछ निर्भर होगा। हाल-फिलहाल अखिलेश की पूर्व योजना सफल होती दिख रही है और बिहार की तर्ज पर महागठबंधन जमीनी हकीकत बनता नजर आ रहा है। हाल फिलहाल सपा और कांग्रेस का समीकरण बना चुका है। रालोद से बात नहीं बनी है। अब अखिलेश ही सपा के कर्ताधर्ता रहेंगे, वहीं मुलायम घुटने टेकते हुए अपने बेटे की ताजपोशी की ख्वाहिशें संजोते नजर आएंगे। सबकी नजरें होली के पहले होने वाले चुनावी नतीजों पर टिकी है।

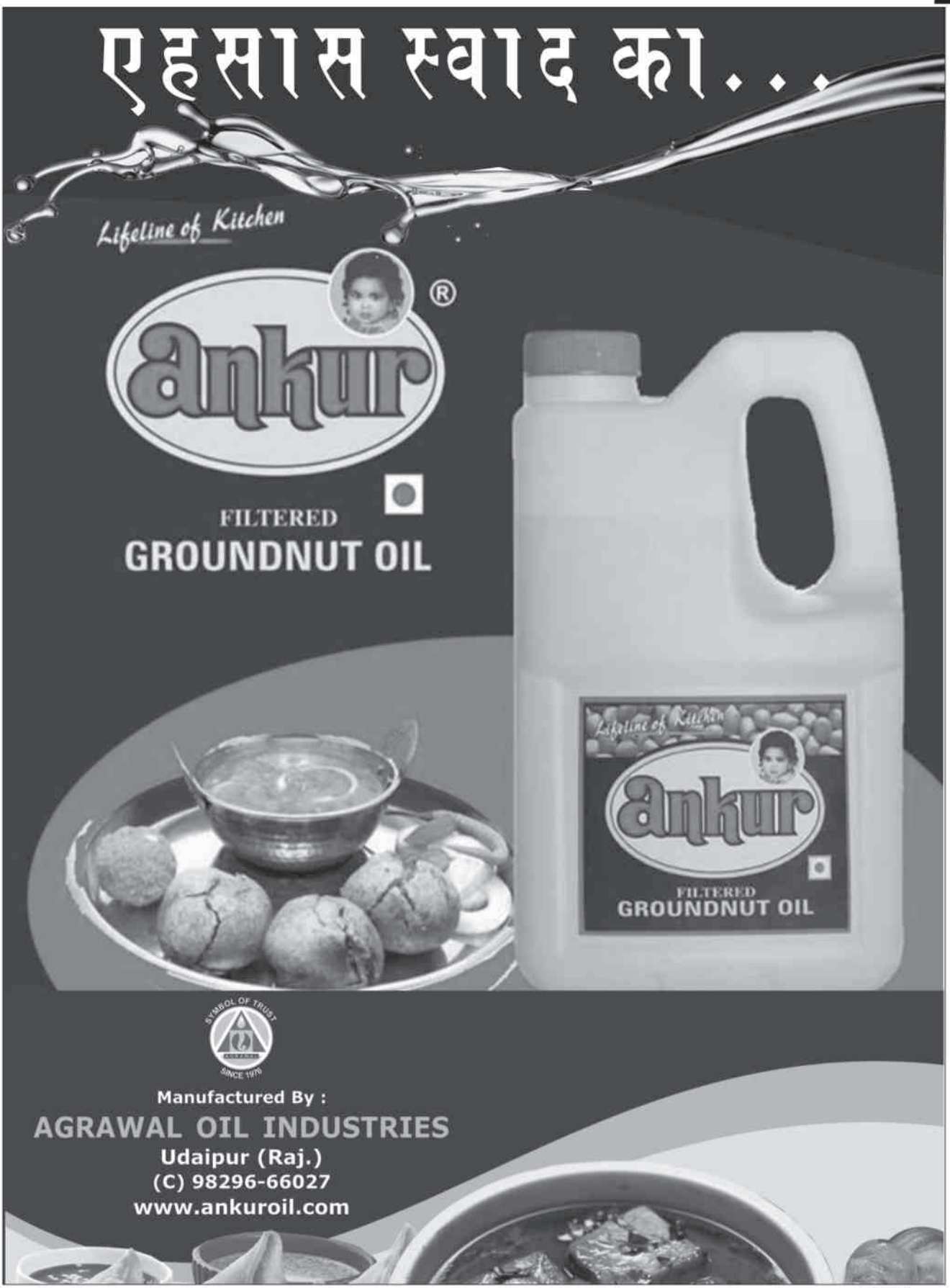
एहसास स्वाद का...
Lifeline of Kitchen
ankur
FILTERED
GROUNDNUT OIL
SYMBOL OF TRUST
SINCE 1976
Manufactured By :
AGRAWAL OIL INDUSTRIES
Udaipur (Raj.)
(C) 98296-66027
www.ankuroil.com

कोढ़ में खाज!

राजस्थान देश का एक मात्र ऐसा प्रदेश है जहां कभी कुछ भी हो सकता है और कभी कुछ भी दिख सकता है। अभी-अभी विदा हुए 2016 के वर्ष में हमने यहां विकास और परिवर्तन की दौड़ में कई अच्छे-बुरे दिन देखे हैं। लेकिन कुछ बात है कि हस्ती, मिटती नहीं हमारी। राजस्थान की जनता में जहां धीरज और धर्म का सागर लहराता है वहां असहमति और अराजकता की आंधियां भी चलती हैं। यहां सामाजिकता बदलती है किन्तु मानसिकता नहीं बदलती क्योंकि यहां संत, सती और सूरमाओं का सूरज कभी नहीं डूबता और आम नागरिक-अपने फायदे को ही सरकारी कायदा मानता है। पंचों की राय सिर माथै, लेकिन परनाला तो यहीं गिरेगा। यानी कि यहां लोगबाग बोलते कम हैं और सुनते समझते ज्यादा हैं। राजस्थान में लोकतंत्र की हवेली आज भी राजपूताना की चौखट से ही अपना विचार और व्यवहार बनाती है। ध्यान से मुड़कर देखने पर 1949 से 2016 तक हमें लगता है कि राजस्थान में भौतिक विकास तो बहुत हुआ है लेकिन सामाजिक और सांस्कृतिक विकास को चोट भी पहुंची है। शिक्षा, बिजली, पानी, चिकित्सा, सड़क जैसे सभी निरंतर विकास होने के बावजूद यहां के जनजीवन में खम्मा घणी! अन्नदाता का भाव ही गहरे पानी बैठा हुआ है। यह प्रदेश पूरी तरह अपनी प्रकृति और जलवायु के अनुशासन से संचालित तथा स्वभाव और संस्कार से ही आत्म संतोषी है। यही कारण है कि भारत के 31 राज्यों में वह किसी भी क्षेत्र में इक्कीस और अनुकरणीय नहीं बन पाया। न तो यहां जातियों में बंटा किसान खुशहाल और न ही यहां असंगठित मजदूर बदहाली और विस्थापन से मुक्त है और सरकारी घाटे की अर्थव्यवस्था में लगातार 5 प्रतिशत की विकास दर पर ही बैठा हुआ है।

वेद व्यास

यह जानकर आश्चर्य कि होता है कि राजस्थान में न औद्योगिक विकास का कोई ढांचा आज तक बन पाया और न ही यहां अभी तक जल, जंगल और जमीन की सम्पदा को किसी ने विकसित किया है। सारा राजस्थान पर्यटन और आबकारी पर आधारित है। यहां के हजारों दूरदराज के गांव आज भी बिजली, पानी, शिक्षा और सामुदायिक सुविधाओं से वंचित हैं। दु:ख तो इस बात का है कि - पंचायतराज का संस्थापक प्रदेश होकर भी यहां पंचायत राज का पौधा जातीय आस्थाओं की राजनीति का शिकार होकर मुरझा रहा है। एक औसत प्रदेश की तरह यहां की 8 करोड़ से अधिक की आबादी, किसी सामाजिक सुधार और व्यवस्था परिवर्तन के अभियान से कोसों दूर रहकर और राम और राज के भरोसे ही थान-देवरे ढोक रही है।

राजस्थान में 2016 का हिसाब-किताब भी यही कहता है कि - मेक इन राजस्थान, स्मार्ट राजस्थान, स्वच्छ राजस्थान अथवा केन्द्र सरकार का कोई सपना यहां कहीं भी साकार होता नहीं लगता। अपनी विशेषताओं और अनूठेपन का कोई आत्मगौरव भी यहां कहीं सुनाई नहीं पड़ता। कवि कन्हैयालाल सेठिया का गीत-'धरती धोरां री' दोहराते-दोहराते ही हमारी भाषा, संस्कृति और कला, साहित्य, संगीत जैसा सब कुछ, मनोरंजन और आत्ममुग्धता के बाजार में बदल गया है। पिछले तीन साल में तो कुछ ऐसा मौसम बदला है कि लोकायुक्त, मानवाधिकार आयोग, महिला आयोग, सूचना आयोग, अल्पसंख्यक आयोग, अनुसूचित जाति-जनजाति विकास आयोग और प्रदेश के 22 सांस्कृतिक प्रतिष्ठान गूंगे-बहरों के अनाथालय हो गये। कोई अपनी वृद्धावस्था पेन्शन ढूंढ रहा है तो कोई मुफ्त इलाज की पुरानी खिड़की पर खड़ा है। छोटे समाचार पत्रों की तो कमर ही टूट गई है जबकि बड़ा मीडिया सरकार और बाजार के अभिनन्दन में डूबा है। सभी जन सुनवाइयां फेल हो गई हैं। राजस्थान में जनता जनार्दन पिछले 67 साल से यह एक बात नहीं समझ पा रहा है हम दलित और महिला उत्पीड़न में हर साल देश का कीर्तिमान क्यों बना रहे हैं? सरकारी गोशालाओं में हजारों गोमाताएं कैसे मर रही हैं? और अरबों-खरबों रुपये के समझौते घोषित करके भी राजस्थान में विकास के लिये पूंजी निवेश क्यों नहीं आ रहा है? फिर भी भामाशाह योजना और अन्नपूर्णा योजना की झांकियां जरूर चल रही है, लेकिन ऐतिहासिक और आमूलचूल बदलाव का कोई विकासपथ हमें आगे अभी नजर नहीं आया। जयपुर की मेट्रो रेल घाटे में दौड़ रही तो बाड़मेर में रिफाइनरी कहीं

नजर ही नहीं आ रही? हां एक बात उल्लेखनीय है कि अब राजस्थान के देवस्थानों में भीड़, सवामणि, रतजगे और पूजा आराधनाएं बढ़ गई हैं, क्योंकि आस्थाओं से अधिक राजस्थान में कुछ भी नहीं है।

विज्ञान और ज्ञान के क्षेत्र में तो हम कहीं नहीं हैं और यही कारण है कि अभी राजा-महाराजा और सेठ-साहूकार अपने-अपने बापदादाओं की स्मृति में नये गुणीजनों को मान-सम्मान बांट रहे हैं। सभी उगते सूरज को सलाम कर रहे हैं। इस तरह हम 2016 का सफर पूरा करके अब राजी खुशी है और 2017 से गुहार लगा रहे हैं कि प्रभु! कुछ तो ऐसा विलक्षण करो कि राजस्थान का आत्मगौरव बढ़े और भ्रष्टाचार तथा युवा बेरोजगारी से मुक्त राजस्थान बन जाये।

राज्य कर्मचारी 7वें वेतन आयोग का इंतजार कर रहे, दलित-महिलाएं सम्मान और पहचान को तरस रही हैं, युवा पीढ़ी रोजगार तलाश रही है। राजस्थानी भाषा अपनी मान्यता को हाथ-पैर मार रही है। गांव और गरीब अपने विकास की रामधुन लगा रहे हैं। राजस्थान में कब कोई परिवर्तन का नया सवेरा आयेगा और आधे-अधूरे प्रदेश को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जायेगा।

आख्यान

दूसरी पुतली बोली ...

प्रारब्ध बड़ा या लब्ध?

राजा भोज के शासनकाल में एक किसान के खेत पर बोलते बिजूका के स्थान से जमीन खोदने पर एक सिंहासन निकला, जिस पर बत्तीस पुतलियां निर्मित थीं। राजा उसे अपने महल ले गए। साज-सज्जा के बाद जैसे ही वे उस पर बैठने लगे कि सभी पुतलियां खिलखिलाकर हंसने लगी। कारण पूछने पर उन्होंने बारी बारी से इस सिंहासन से संबधित बत्तीस प्रसंग सुनाए। पहली पुतली ने जो कहा वह पिछले अंक में आप पढ़ चुके हैं। प्रस्तुत है दूसरी पुतली का कथन -

सुनो, राजा भोज जीवन वही नहीं जो दिखलाई पड़ता है। और इंसान देख ही कितनी दूर पाता है। जीवन में प्रारब्ध दोनों हाथ उलीच कर देता है, परन्तु उपलब्ध को कौन सहेज पाता है? एक सम्राट हर रोज सिंहासन पर बैठ कर नज़राना कबूल करता था। बड़े-बड़े सामंत और धनपति उसे नज़राना भेंट करते। एक दिन बड़ी विचित्र घटना घटित हुई कि सम्राट के सामने एक साधारण संन्यासी दरबार में आया, जिसके हाथ में एक जंगली फल था। बड़े लोगों की कतार से सरकता हुआ वह भी सम्राट तक पहुंचा और उन्हें जंगली फल का नज़राना पेश किया।

चूंकि, फल भी ऐसा नहीं, जिसे अमूमन लोग जानते हों, फिर भी उसे स्वीकार कर लिया और बिना कोई ध्यान दिए सम्राट ने वह फल अपने मंत्री को दे दिया। मंत्री इसलिए सकपकाया कि इसे खजाने में रखे या बाहर फिंकवा दे। सम्राट अस्थिर विचार वाले भी होते और कभी भी इसके बारे में पूछ सकते, अत: मंत्री ने विशेष सावधानी रखते हुए महल के तहखाने के ऊपर लगते गुप्त छेद से हर रोज जंगली फल अन्दर डालता रहा। यह क्रम एक साल से भी अधिक चला। संन्यासी हर रोज आता और जंगली फल का नज़राना देता। एक दिन सम्राट को न जाने क्या शरारत सूझी, उसने संन्यासी के जाने के बाद वह जंगली फल मंत्री को देने के बजाय वहां पर मौजूद एक प्रशिक्षित बंदर के हाथ में दे दिया। वानर ने बिना कोई देर किए वह फल मुंह-हाथ से छील दिया। सम्राट और उपस्थित सभासदों के आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि उस फल को छीलने पर उसमें छिपे कई रत्न और हीरे फर्श पर बिखर गए। सम्राट ने मंत्री को पूछा कि अब तक संन्यासी द्वारा दिए सभी फल कहां रखे हैं? सभी लोग तहखाने को खोलकर भीतर घुसे तो वहां सड़ांध भरे वातावरण में हजारों हीरे-रत्न दमक रहे थे। उस दिन के बाद संन्यासी कभी नहीं आया। इस रहस्य का मामला राजा विक्रमादित्य तक पहुंचा। उसने इसी सिंहासन पर बैठ कर नीति-न्याय से व्यवस्था दी थी कि हर रोज सूर्योदय कई स्वर्णिम अवसर लेकर आता है, जिनका लाभ उठाया जाए तो जीवन हीरे-जवाहारात की तरह दमक सकता है। प्राप्त हुए स्वर्ण अवसर को इस सम्राट की तरह प्राय: सभी अत्यंत लापरवाही से गंवा देते हैं। बहुत कम लोग ही ऐसे होते जो परमात्मा के दिए अहोभाग्य को बचा पाते हैं, अन्यथा लोग आलस्य, अविवेक, तंद्रा और अनिच्छा के चलते पारस मणि जैसे अवसर को निरर्थक कार्यों में उलझते हुए जाया करते और जीवन के अंत समय तक भी प्रारम्भ के दिए अमूल्य उपहारों से वंचित रह जाते हैं।

ग्रहण के चार गजब नज़ारे

खगोलीय घटनाओं का सिलसिला 11 फरवरी से, भारत में दिखेंगे दो ग्रहण

वर्ष 2017 में सूर्य, पृथ्वी और चंद्रमा की 'त्रिमूर्ति' दुनिया के खगोल प्रेमियों को ग्रहण के चार रोमांचक दृश्य दिखायेगी। हालांकि, भारत में इनमें से केवल दो खगोलीय घटनाओं के नजर आने की उम्मीद है। उज्जैन की प्रतिष्ठित जीवाजी वेधशाला के अधीक्षक डॉ. राजेन्द्र प्रकाश गुप्त ने भारतीय संदर्भ में की गई कालगणना के हवाले से बताया कि ग्रहणों की अद्भुत खगोलीय घटनाओं का सिलसिला 11 फरवरी को लगने वाले उपच्छाया चंद्रग्रहण से शुरू होगा। नववर्ष का यह पहला ग्रहण भारत में दिखायी देगा।

उपच्छाया चंद्रग्रहण : उपच्छाया चंद्रग्रहण तब लगता है, जब चंद्रमा पेनुम्ब्रा(ग्रहण के वक्त धरती की परछाई को हल्का भाग) से होकर गुजरता है। इस समय चंद्रमा पर पड़ने वाली सूर्य की रोशनी आंशिक तौर पर कटी प्रतीत होती है और ग्रहण को चंद्रमा पर पड़ने वाली धुंधली परछाई के रूप में देखा जा सकता है। वर्ष 2017 में यह 11 फरवरी को लगेगा।

वलयाकार सूर्यग्रहण : 26 फरवरी को वलयाकार सूर्यग्रहण लगेगा। हालांकि, सूर्य, पृथ्वी और चंद्रमा की लुकाछिपी का यह रोमांचक नजारा भारत में दिखाई नहीं देगा।

अगस्त में दो ग्रहण

आगामी सात अगस्त को लगने वाले आंशिक चंद्रग्रहण का नजारा भारत में देखा जा सकेगा। गुप्त के अनुसार आगामी 21 अगस्त को लगने वाले पूर्ण सूर्यग्रहण का दुनिया भर के खगोल प्रेमी इंतजार कर रहे हैं। बहरहाल, वर्ष 2017 का यह आखिरी ग्रहण भारत में नजर नहीं आएगा। पूर्ण सूर्यग्रहण तब लगता है, जब सूर्य और पृथ्वी के बीच चंद्रमा कुछ इस तरह आ जाता है कि पृथ्वी से देखने पर वह पूरी तरह चंद्रमा की ओट में छिपा प्रतीत होता है।

कर्म में बसते हैं शिव

- डॉ. राम मनोहर लोहिया

शिव के हर कर्म सार्थक है। उनके हर काम में तात्कालिक औचित्य होता है, क्योंकि उसमें लोकल्याण निहित है।

शिव बिना जन्म और बिना अंत के हैं। ईश्वर की तरह अनंत हैं। लेकिन ईश्वर के विपरीत उनके जीवन की घटनाएं समय क्रम में चलती हैं और विशेषताओं के साथ। इसलिए वे ईश्वर से भी अधिक असीमित हैं।

धर्म और राजनीति, ईश्वर और राष्ट्र या कौम हर जमाने में और हर जगह मिलकर चलते हैं। हिन्दुस्तान में यह अधिक होता है। शिव के सबसे बड़े कारनामों में एक उनका सती की मृत्यु पर शोक प्रकट करना है। मृत सती का अंग-अंग गिरता रहा, फिर भी शिव ने अंतिम अंग गिरने तक नहीं छोड़ा। साहचर्य निभाने की ऐसी पूर्ण और अनूठी कहानी नहीं मिलती। केवल इतना ही नहीं, शिव की यह कहानी हिन्दुस्तान की अटूट और विलक्षण एकता की भी कहानी है। जहां सती का एक अंग गिरा, वहां एक तीर्थ बना। बनारस में मणिकर्णिका घाट पर मणिकुंतल के साथ कान गिरा, जहां आज तक मृत व्यक्तियों को जलाए जाने पर निश्चित रूप से मुक्ति मिलने का विश्वास किया जाता है। हिन्दुस्तान के पूर्वी किनारे पर कामरूप में एक हिस्सा गिरा, जिसका पवित्र आकर्षण सैकड़ों पीढ़ियों तक चला आ रहा है।

आनंद और बुद्धि का मेल

हाथी की सूंडवाले गणेश का अपूर्व चरित्र है, पिता के हस्तकौशल के अलावा अपनी मंद यद्यपि तीक्ष्ण बुद्धिमानी के कारण। जब वे छोटे थे, उनकी माता ने उन्हें स्नानगृह के दरवाजे पर देखरेख करने और किसी को अंदर न आने देने के लिए कहा। प्रत्युत्पन्न क्रियावाले शिव उन्हें ढकेलकर अंदर जाने लगे, लेकिन आदेश से बंधे गणेश ने उन्हें रोका। पिता ने पुत्र का गला काट दिया। पार्वती को असीम वेदना हुई। उस रास्ते जो पहला जीव निकला, वह एक हाथी था। शिव ने हाथी का सिर उड़ा दिया और गणेश के धड़ पर रख दिया। मुझे कभी-कभी विस्मय होता है कि क्या शिव ने इस मामले में अपने चरित्र के विरूद्ध काम नहीं किया। क्या यह काम उचित था? हालांकि उन्होंने गणेश को पुनर्जीवित किया और इस तरह व्याकुल पार्वती को दुख से छुटकारा दिया। लेकिन उस हाथी के बच्चे की मां का क्या हाल हुआ होगा, जिसकी जान गई? लेकिन सवाल का जवाब खुद सवाल में ही मिल जाता है। नए गणेश से हाथी और पुराने गणेश दोनों में से कोई नहीं मरा। शाश्वत आनंद और बुद्धि का यह मेल कितना विचित्र है।

कर्म ही धर्म है

शिव ने कोई भी ऐसा काम नहीं किया, जिसका औचित्य उस काम से ही न ठहराया जा सके। आदमी की जानकारी में वह इस तरह के अकेले प्राणी हैं, जिनके काम का औचित्य अपने-आप में था। किसी को भी उस काम के पहले कारण और न बाद में किसी काम का नतीजा ढूंढने की आवश्यकता पड़ी और न औचित्य ही ढूंढने की। जीवन कारण और कार्य की ऐसी लम्बी श्रृंखला है कि देवता और मनुष्य दोनों को अपने कामों का औचित्य दूर तक जाकर ढूंढना होता है। यह एक खतरनाक बात है। अनुचित कामों को ठीक ठहराने के लिए चतुराई से भरे, खीझ पैदा करने वाले तर्क पेश किए जाते हैं। इस तरह झूठ को सच, गुलामी को आजादी और हत्या को जीवन करार दिया जाता है। इस तरह के दुष्टतापूर्ण तर्कों का एकमात्र इलाज है शिव का विचार, क्योंकि वे तात्कालिकता के सिद्धांत का प्रतीक हैं। उनका हर काम स्वयं में तात्कालिक औचित्य से भरा होता है और उसके लिए किसी पहले या बाद के काम को देखने की जरूरत नहीं होती। जब देवों और असुरों ने समुद्र मंथन, तो अमृत के पहले विष निकला। किसी को यह विष पीना था। शिव ने उस देवासुर संग्राम में कोई हिस्सा नहीं लिया और न समुद्र-मंथन के सम्मिलित प्रयास में ही। लेकिन उन्होंने इस विष से जगत को बचाने की जिम्मेदारी ली। उन्होंने अपने गले में विष को रोक रखा और तब से वे नीलकंठ के नाम से जाने जाते हैं।

शिव-शक्ति के मिलन की इस महारात्रि को स्वनिर्मित शिवलिंग के पूजन का विशेष महत्व शास्त्रों और धर्म ग्रंथों में वर्णित है। इस शिवलिंग को तैयार करने के लिए शुद्ध चिकनी मिट्टी, दही, घृत, शहद, शर्करा, गुलाब जल, गाय का दूध, इत्र, केसर, कपूर, रक्त-चन्दन, श्वेत-चन्दन, बेल और धतूरे के बीज, श्वेत मदार के पुष्प और गंगाजल को अच्छी तरह मिला कर अर्घा सहित शिवलिंग तैयार करें और किसी पात्र में स्थापित करें। प्रदोष काल में श्वेत वस्त्र धारण कर कुशासन पर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख कर बैठें। सर्वप्रथम गंगाजल, पंचामृत और गुलाब-जल से इन मंत्रों का उच्चारण करते हुए एक धार में स्नान कराएं - 'ॐ भवम् देवम् तर्पयामि', ॐ सर्व देवम् तर्पयामि, ॐ ईशान देवम् तर्पयामि, ॐ पशुपति देवम् तर्पयामि, ॐ रुद्र देवम् तर्पयामि, ॐ उग्र देवम् तर्पयामि, ॐ भीम देवम् तर्पयामि, ॐ महन्तम् देवम् तर्पयामि!' स्नान के बाद 'ॐ शाम्ब सदा शिवाय नमः' बोल कर वस्त्र, 'ॐ नमः शिवाय कालाय नमः' बोल कर केसर युक्त चन्दन का तिलक करें, 'ॐ नमः शिवाय कल विकरणाय नमो नमः' से अक्षत और पुष्प अर्पित करें।

तीन दल वाले पांच बेल-पत्र गुलाब-जल में भिगो कर एक-एक मंत्र का उच्चारण कर शिवलिंग के ऊपर अर्पित करें। 'ॐ आकाश तत्वाम् पार्वती महेश्वराभ्याम् नमः! ॐ वायु तत्वाम् सती महेश्वराभ्याम् नमः! ॐ जल तत्वाम् उमा महेश्वराभ्याम् नमः! ॐ पृथ्वी तत्वाम् प्रकृति तत्वाम् नमः! ॐ अग्नि तत्वाम् महेश्वराभ्याम् नमः! ॐ अग्नि तत्वाम् शक्ति महेश्वराभ्याम् नमः!' इसके बाद 'ॐ नमः शिवाय भवोद्भवाय भूतद्मनाय नमः' से धूप दिखाएं। 'ॐ नमः शिवाय मनोन्मनाय नमः!' ॐ से दीप दिखाएं। 'ॐ नमः शिवाय!' से नैवेद्य और जायफल चढ़ाएं। इसके बाद लौंग इलायची के साथ ताम्बूल अर्पित करें।

Devendra Kumawat
Director

JAIDEEP PUBLIC SCHOOL
KIDS PARADISE

Admission Open
Play Group to Class V

English Medium & Co-Educational

TO PROVIDE FACILITIES TOWARDS COMPLETE AND ALL ROUND DEVELOPMENT OF THE CHILD

Modern Complex, Bhuwana, Udaipur Ph.: 0294-2440437, 9460028679

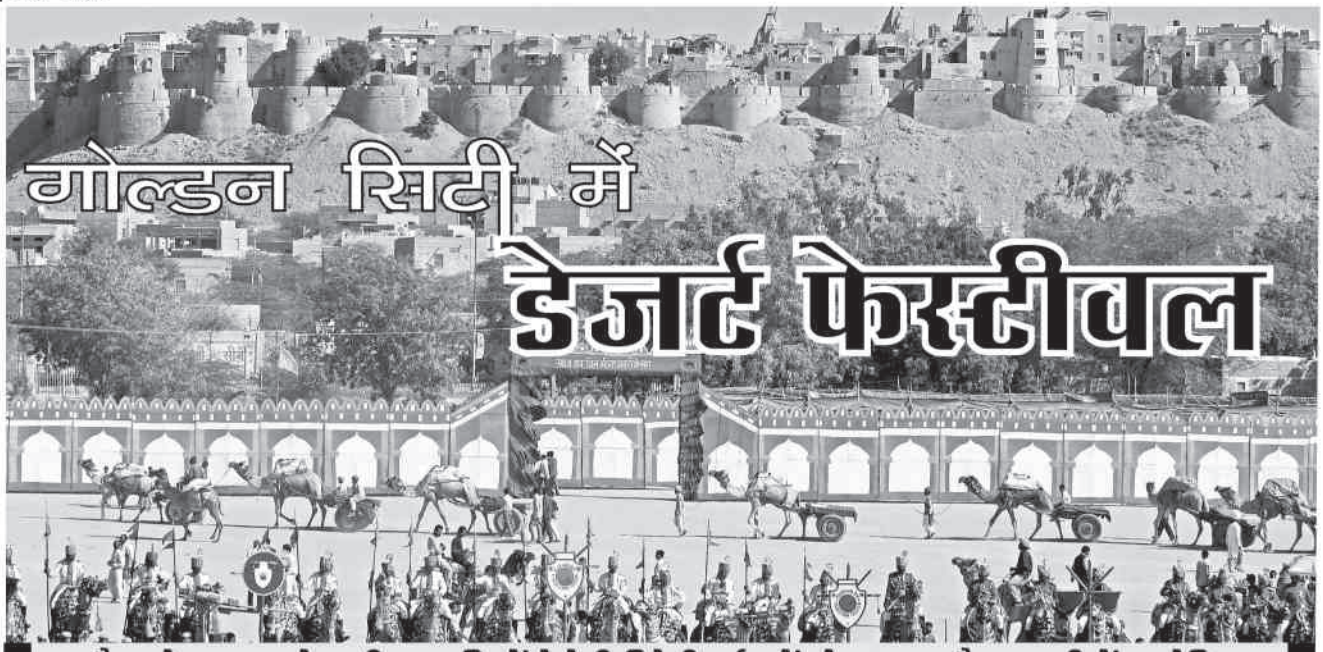

गोल्डन सिटी में डेजर्ट फेस्टीवल

जैसलमेर का मरु मेला तीन दशाब्दियों से देशी-विदेशी पर्यटकों को लुभा रहा है। फरवरी में आयोजित थार के मरुस्थल की स्वर्णिम आभा सबको अपनी ओर आकर्षित करती है।

मरुधरा की स्वर्णिम रेत का समंदर भला किसे आकर्षित न करेगा ? जैसल संस्कृति और ठेठ देहाती रंगों के इन्द्रधनुषी लोकोत्सव का मरु मेला इस बार 8 से 11 फरवरी तक जैसलमेर के सोनार किले की तलहटी में होगा। राजस्थान पर्यटन निगम के तत्वावधान में आयोज्य इस मेले में मरुधरा एवं पड़ौसी राज्यों के तथा बड़ी संख्या में विदेशी सैलानी इसमें शरीक होंगे । शाही आन, बान और शान, खूबसूरत धरती, दूर-दूर तक फैला रेगिस्तान, खुशमिजाज लोग, सुरीला लोकसंगीत, रंग-बिरंगे परिधान, ऐतिहासिक हवेलियों व आधुनिक इमारतों का खूबसूरत मंजर, अतिथि सत्कार के नायाब तरीके, ये खासियतें हैं पश्चिमोत्तर में स्थित जैसलमेर की। तभी तो इसके दीदार के लिए देश-विदेश से सैलानी यहां खिंचे चले आते हैं। थार के मरूस्थल की सुनहली आभा के बीच पसरे जैसलमेर को गोल्डन सिटी कहा जाता है। दरअसल अपनी विशेष भौगोलिक स्थिति के कारण इस भूभाग के मीलों फैले रेतीले धोरों पर सूर्योदय की स्वर्णिम किरणों से समूचा इलाका स्वर्णताल सा चमक उठता है। समीप ही त्रिकूट पहाड़ी पर जैसल किला सैन्ड स्टोन की दीवार से सुरक्षित है, जिसका निर्माण रावल जैसल ने 1156 ईस्वी में करवाया था। लगभग चौथाई आबादी किले पर बसी है, बाकी नीचे तलहटी में है। शहर इतना छोटा है कि सैलानी इसे कुछ ही घंटों में अपने पैरों से नाप लेते हैं। किले पर मौजूद शाही भवनों और नगरसेठों की हवेलियों की स्थापत्य कला इतनी नयनाभिराम कि पर्यटक चकित हो उठते हैं। यह इलाका राजस्थान में सैकड़ों मील फैले थार मरूस्थल की नयनाभिराम दृश्यावली का एक हिस्सा है। तेज हवाओं के साथ खिसकते रेतीले टीले और उनके बीच बसी आबादी का जीवन कितना संघर्षमय तथा कठिन है, इसकी असलियत वहां जाने पर ही जानी जा सकती हैं। पानी की अत्यन्त कमी, मुश्किल हालातों और मीलों फैला रेत का समंदर यहां के लोगों को जीवट का इतना धनी बना देता कि वे हर परिस्थिति में अविचलित रहते हैं। मेला का सिलसिला तकरीबन 30 साल से चला आ रहा है। लोकवाद्यों की सुरीली स्वर लहरियों के साथ जैसल संस्कृति के कलाकारों के अनूठे नृत्य व करतब सैलानियों को रोमांचित कर देते हैं। आवागमन के लिहाज से 'रेगिस्तान का जहाज' कहलाने वाले सजे-धजे ऊंटों की विश्वप्रसिद्ध दौड़, पोलो मैच, कठपुतली शॉ, दिलकश प्रतियोगिताएं, रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम, लोकगीत-संगीत व लोकवाद्यों की मधुर स्वर लहरियों, गैर, घूमर, डांडिया, चंग और सपेरों व कलाकारों के हैरतअंगेज करतब से हर कोई दांतों तले अंगुलि दबा उठता है। रंग-बिरंगे चटकीले परिधानों में सजे-संवरे लोक कलाकारों की उपस्थिति तथा चटकीले रेतीले टीलों पर ऊंटों की सवारी करते सैलानियों का उत्साह और विशुद्ध देहाती मनुहार से सारा वातावरण खुशनुमा बन जाता है। शुभारंभ का आगाज ऋतुराज वसंत के आगमन पर यहां के प्रसिद्ध गढ़सीसर सरोवर के किनारे शुरू होता है। सांय-सांय करती ठंडी हवाएं, झील का शांत किनारा उसमें चढ़ती-डूबती सूरज की परछाई, कलात्मक छतरियों का लहराता प्रतिबिम्ब देख कर नजर स्वत: ठहर जाती है। तीन दिवसीय मरु महोत्सव का समापन सम के स्वर्णिम धोरों के बीच मनाया जाता है। वहां के रेतीले टीलों के बीच सूर्यास्त का नयनाभिराम दृश्य भी देखते ही बनता है। सूरज ढलने के साथ ही पूर्णिमा का चन्द्रमा चांदी सी चमचमाती चांदनी बिखेरता है। अंत में होती है रंगारंग आतिशबाजी। सैलानियों की हर सुख सुविधाओं से लैस जैसलमेर के अनेक होटल व विश्रांतिगृह पलक पांवड़े बिछा कर तैयार मिलते हैं। वहीं तलहटी के आसपास टेन्ट-शामियाने से सुसज्जित अस्थाई पर्यटक गांव बनाया जाता है। पर्यटन विकास निगम की ओर से समूचा जैसलमेर दुल्हन की तरह सजाया जाता है। यहां के सोनार किले की हवेलियों पर की गई विद्युत व्यवस्था से पूरा इलाका रोशनी से जगमग हो उठता है। इस महोत्सव की देश में ही नहीं विदेशों तक में धमक है। यहां आने वाले हर सैलानी के दिलो दिमाग में मरुधरा की 'ढोला मारू', 'मूमल-महेन्द्र' के प्रणय की स्मृतियां जीवंत हो उठती है। हालांकि इस महोत्सव को बदलते युग के साथ नई पहचान देने की जरूरत है।

-पुष्कर जोशी

With Best Compliments From

Universal
Power Industries

Engineers & Manufacturer :

✦ Monoblock Pump ✦ Power Factor Correction ✦ AMF Panel ✦ Synchronizing of DG ✦ Switch Gear LT/HT ✦ Power Control Panel ✦ Motor Control Panel ✦ Stone Process Machine Panel ✦ Automation Panel ✦ Automatic Power Factor Panel

1, SPL. Com, Industrial Estate, Pratap Nagar, Udaipur-313 001
Ph. : 0294-2490230 (W) 2490373 (R)

Telemecanique
Square D
Merlin Gerin

Authorised Service Contractors
Schneider Electric India Pvt. Ltd.

गुलशन में कैसे-कैसे कैक्टस

इक्कीसवी सदी में आधुनिकता की ओर छलांग लगाता समाज जिस दिशा में जा रहा है, इसकी नज़ीर आए-दिन सुर्खियां बन कर अखबारों में उभरती हैं। सरकार के तमाम दावों और आश्वासनों के बाद भी गिरते नैतिक मूल्य, चिंता का विषय है।

देश में महिलाओं का जीवन दिनों-दिन असुरक्षित हो रहा है। नववर्ष की पूर्व संध्या पर सिलिकॉन वैली के नाम से मशहूर बेंगलूरू में कई युवतियों के साथ शराब के नशे में युवकों ने जो कुछ किया, वह कथित सभ्य समाज के लिए शर्म की बात है। हुड़दंगियों ने न सिर्फ महिलाओं के साथ छेड़खानी की, बल्कि छोटे बच्चों और परिजनों से भी धक्का-मुक्की की। खुशी के मौकों पर नशाखोरी का चलन बढ़ रहा है। आज और अभी नहीं जागे तो तस्वीर बेहद डरावनी होगी। इस घटना में पढ़े-लिखे और अच्छे घरों के युवक लिप्त बताए गए हैं। आश्चर्यजनक यह भी कि बेंगलूरू में ही इसके अगले दिन देर शाम वैसी ही अन्य घटना में घर जा रही युवती को बाइक सवार दो युवकों ने अगवा करने का प्रयास किया। इस दौरान कुछ लोगों के विरोध पर वे उसे घायल कर सड़क पर फेंक चलते बने। कुछ ऐसा ही वाकिया देश का दिल कहलाने वाली दिल्ली में भी इसी दिन हुआ, जहां मोटरसाइकल पर बैठी एक महिला को खींचने की कोशिश की गई। महिला से छेड़छाड़ किए जाने पर मौजूद पुलिसकर्मियों ने एतराज किया और उन्हें चेताया। इस पर दोनों छात्र एक बार तो चले गए, परन्तु कुछ ही देर बाद पचासों छात्रों ने पुलिसकर्मियों पर हमला बोल दिया। ये घटनाएं समाज के गुलशन में उगत कैक्टस का प्रतीक है।

सोलह दिसम्बर 2012 को दिल्ली में चलती बस में निर्भया के साथ सामूहिक दुष्कर्म और बर्बरता के चलते हुई मौत के बाद देश में फैले असंतोष की आग से लगा कि समाज और सरकार की नींद टूटेगी। उस दुखद घटना के बाद भले ही सरकार ने कानून को कड़ा कर दिया, परन्तु नहीं लगता कि इससे बदमिज़ाजों में कोई ख़ौफ पैदा हुआ। घटना के चार साल बाद भी हालत यह है कि शहर या गांव की सड़कों पर महिलाओं का अकेले निकलना जोखिम भरा है। महिलाओं के खिलाफ अपराधों का ग्राफ चढ़ता ही जा रहा है। घटनाएं नित नए रंग और ढंग से सामने आ रही हैं। हालात यह है कि केवल 2 प्रतिशत दुष्कर्मी सजा पाते हैं। 85 प्रतिशत कानून की पतली गलियों से बच निकलते हैं। देश की हर चार में से एक लड़की और सात में से एक लड़का यौन उत्पीड़न का किसी न किसी प्रकार से शिकार होता है। 54 फीसद मामले तो बदनामी के डर से दर्ज ही नहीं होते। रोंगटे खड़े कर देने वाली हर घटना के बाद अगले दिन फिर वैसी ही घटना सामने आती है। दुष्कर्म प्रवृत्तियों की बेल तेजी से फलती-फूलती जा रही है।

अन्तहीन सिलसिला थमता क्यों नहीं?

पिछले दिनों दिल्ली में ही नौकरी की तलाश में निकली एक लड़की के साथ चलती कार में रैप की घटना ने चार साल पहले सोलह दिसम्बर को हुए बर्बर कांड की याद ताजा कर दी। दोनों घटनाओं में एक सी समानता थी। 20 वर्षीय पीड़िता मोतीबाग इलाके में इंटरव्यू देकर घर जाने के लिए सड़क पर खड़ी थी। तभी एक कार चालक ने नोएडा छोड़ देने के बहाने गाड़ी में बिठाया। आरोपी युवक अवनीश तीन घंटे तक रास्ता भूलने का नाटक करते हुए सड़कों पर उसे घुमाता रहा। सुनसान स्थल पाकर युवती के साथ दुष्कर्म किया। पीड़िता ने किसी तरह जान बचाई और रात 1.30 बजे वारदात की सूचना पुलिस को देने में सफल हुई। दिल्ली के ही उत्तमनगर इलाके में एक अन्य घटना में तेरह साल की लड़की को दोस्तों ने जन्मदिन पार्टी में बुलाया, बेहोशी की दवा पिलाई और दुष्कर्म किया। ऐसी ही एक अन्य शर्मनाक घटना में न्यू अशोक नगर में दरिंदगी की सारी हदें पार करते हुए तीन दरिंदों ने 16 वर्षीय किशोरी से बेहोशी की हालत में भी पांच घंटे तक दुष्कर्म किया। जब उन्हें लगा कि किशोरी मरणासन्न हालत में पहुंच चुकी है तो उसे घर के बाहर फेंक भाग निकले। वारदात के एक घंटे बाद होश आने पर डरी सहमी किशोरी ने जो कहा, उसे सुनकर परिजन और पुलिस

भी सिहर उठी। आरोपी पीड़िता का मकान मालिक और किराएदार ही निकले। पुलिस जांच से पता चला कि दुष्कर्म से पहले तीनों आरोपियों ने छककर शराब पी।

इन्हीं दिनों दिल्ली के कारोबारी रामप्रसाद दीक्षित अपनी पत्नी, बेटे और बेटी के साथ यमुना एक्सप्रेस-वे पर चौपहिया वाहन से गुजर रहे थे, तभी बदमाशों ने तमंचा-चाकू दिखाकर घेर लिया। कार रुकते ही वे परिवार पर टूट पड़े। डरा-सहमा परिवार हाथ जोड़ कर जान की भीख मांगता रहा। जब बदमाश पत्नी-बेटी की ओर बढ़े तो पीड़ित परिवार की महिलाओं ने अपनी अस्मत लूटने के डर से नकदी व आभूषण खुद ही उतारकर दे दिए। सड़क पर आ रही गाड़ियों को देखकर बदमाश एक्सप्रेस वे के नीचे की ओर भाग निकले।

जिन पर जिम्मा वही हुए शरीक

ऐसा नहीं कि इस तरह की घटनाएं किसी शहर या प्रदेश विशेष में ही घटित हो रही हैं। अमूमन देश के सभी इलाकों में दरिंदगी या धोखाधड़ी की शर्मनाक घटनाओं की कालिख नजर आती है। अभी हाल ही में राजस्थान पुलिस(एसओजी) ने एक ऐसे गिरोह का पर्दाफाश किया जो बड़े धनपतियों या रसूखदार लोगों को महिलाओं के मार्फत बहला-फुसला कर वश में कर लेता था। फिर दुष्कर्म के फर्जी मुकदमों में फंसा कर करोड़ों रुपये झटक लेता था। इस गिरोह ने ढाई साल में कई लोगों को फंसा कर दुष्कर्म केस में राजीनामा कराने के नाम पर करोड़ों रुपये वसूले। ताज्जुब तो यह कि ऐसे गिरोह पर नकेल कसने की जिम्मेदारी रखने वाले पुलिस विभाग के एएसपी भी जाल में फंस गए। जो चाह कर भी इससे नहीं निकल पाए। एएसपी आशीष प्रभाकर अपनी महिला मित्र के रूप जाल में ऐसे फंसे कि आखिरकार उन्होंने सुसाइड किया और मित्र बनी महिला को गोली मारी।

ऐसा ही एक वाकिया पिछले दिनों केरल के कोच्चि शहर में सामने आया। हाई प्रोफाइल को अपना शिकार बनाने वाला यह गिरोह शादी से जुड़ी वेबसाइट के जरिए ऐसे लोगों से संपर्क कर खूबसूरत युवती से शादी का झांसा देता। उसकी आर्थिक हैसियत की छानबीन कर शादी का दबाव बनाता। दुल्हन घर पहुंचते ही परिजनों को नींद की गोलियां खिलाकर नकदी जेवर लेकर फरार हो जाती। 11 दूल्हों के साथ शादी कर फरार होने वाली ऐसी ही एक दुल्हन को कुछ दिनों पूर्व नोएडा से गिरफ्तार किया गया। यह लड़की केरल, महाराष्ट्र और राजस्थान में ग्यारह दूल्हों के घर हाथ सफाई कर करोड़ों के गहने व नकदी लेकर फरार थी।

जब तक सामाजिक और मानसिक स्तर पर बदलाव नहीं होंगे ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति होती रहेगी। सामाजिक विकास की समयानुकूल नीतियां प्राय: सरकार के पटल से नदारद रहती है और सामाजिक सुधार के अलम्बरदार भी सिर्फ अपने नाम को चमकाने में लगे रहते हैं। व्यक्ति और समाज निरन्तर मध्ययुगीन हालात की ओर बढ़ते जा रहे हैं। इसके लिए पश्चिमी रंग में रचा-पचा मीडिया भी कम जिम्मेदार नहीं है। संसद ही नहीं, न्याय व्यवस्था भी इसके लिए बराबर की उत्तरदायी है। आखिर समाज, सरकार और मीडिया हैं किस लिए?

- ओमपाल सोलन

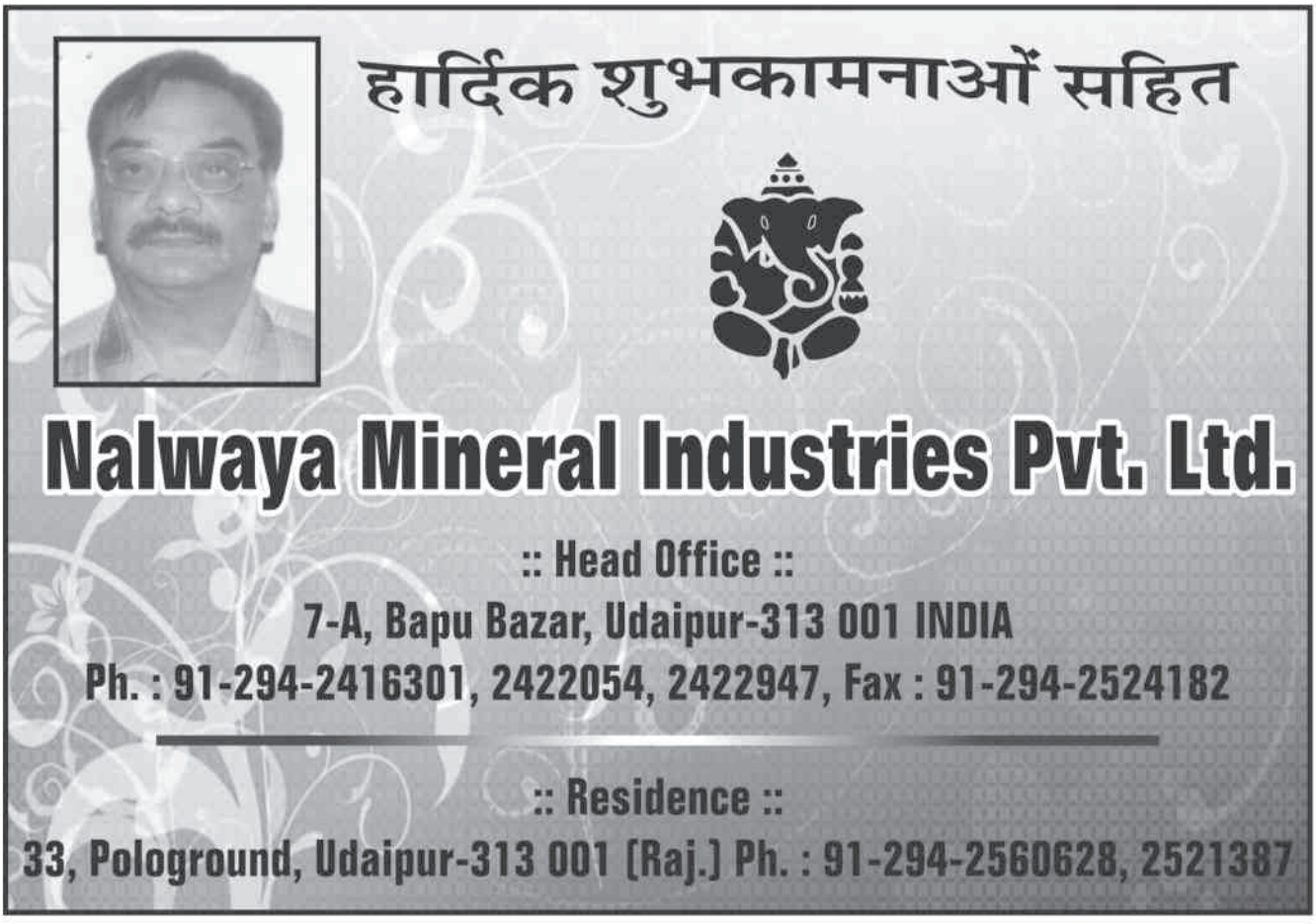

बेणेश्वर : लोक संस्कृति का महाकुंभ

डूंगरपुर व बांसवाड़ा जिलों की सरहद पर मनमोहक प्रकृति के आंचल में स्थित है बेणेश्वर धाम

22 फरवरी को माघ पूर्णिमा पर लगेगा महा मेला, जिसमें शिरकत करेंगे लाखों आदिवासी

सोम, माही व जाखम के संगम स्थित टापू पर उमड़ेगा लोक संस्कृति व धार्मिक आस्था का ज्वार

आदिवासियों का सबसे विराट समागम एवं श्रद्धास्थल है बेणेश्वर धाम। राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात सहित कई राज्यों में बसे आदिवासी समुदाय का यह महामेला इस बार 22 फरवरी को होगा, जिसमें आदिवासियों की उन्मुक्त जीवन शैली, उदार संस्कृति तथा लोकानुरंजक परम्पराओं का अद्‌भुत दिग्दर्शन होगा। हालांकि यह मेला दस दिन का होता है, लेकिन मुख्य मेला माघ पूर्णिमा को पूर्ण यौवन पर रहता है। इसमें पांच लाख से अधिक वनवासी शिरकत करते हैं। यह सिलसिला 250 वर्षों से चला आ रहा है। सबसे बड़ा आदिवासी जमघट वाला यह विशाल मेला बेणेश्वर टापू के समीप बहने वाली सोम, माही और जाखम सलिलाओं के पवित्र संगम पर प्रतिवर्ष लगता है। यह डूंगरपुर व बांसवाड़ा जिलों का सरहदी इलाका है। वनवासी लोक संस्कृति के जीवन्त दर्शन के लिए देशी-विदेशी सैलानी यहां उमड़ पड़ते हैं। इस स्थान की प्राकृतिक छटा इतनी रमणीय है कि पर्यटक इस अवसर के साक्षी बनने को बेताब हो उठते हैं।

सदानीरा नदियों में कलकल बहता पानी, हरियाली से आच्छादित पहाड़ियां, मंदिरों से उठते हुए प्रार्थनाओं के स्वर और रंग-बिरंगी पोशाकों में सजे-धजे युवकों व बालाओं के उन्मुक्त हास-परिहास से पूरा वातावरण घमक उठता है। लोक संस्कृति से रचे-पचे इस उत्सव में धार्मिक आस्था का भी दिग्दर्शन होता है। दरअसल संत मावजी और बेणेश्वर धाम एक-दूसरे के पूरक हैं। उन्हें भक्तजन व आदिवासी भगवान विष्णु का अवतार मानते हैं। त्रिकालदर्शी कहे जाने वाले मावजी महाराज के प्रति लाखों लोगों की अपार श्रद्धा है। उनकी लीलास्थली रहे बेणेश्वर का ज़र्रा-ज़र्रा तप कणों से आप्लावित है।

वर्तमान महंत एवं मावजी पीठ के गादीपति अच्युतानंद महाराज इस अवसर पर राधा-कृष्ण मंदिर स्थित मावजी आश्रम पर भविष्य दर्शक चौपड़े का वाचन करते हैं। देश भर में आदिवासियों का यही एकमात्र तीर्थ है जहां लाखों श्रद्धालू अपने पितरों के ऋण उऋण होने के निमित्त अस्थियां विसर्जन व तर्पण करते हैं। परिवार के साथ पहुंचने वाले ये आदिवासी इस पवित्र संगम पर स्नान, ध्यान, मुण्डन और सामूहिक भोजन बनाकर पितरों को भोग अर्पण करते हैं। वनवासियों के लिए बेणेश्वर धाम काशी, प्रयाग, हरिद्वार, पुष्कर और गया की ही तरह पवित्र है। पुरातन काल से चली आ रही आध्यात्मिक परम्पराओं व आस्थाओं से सराबोर वनवासी संस्कृति का यह महाकुंभ है। जहां जनजातीय जीवन दर्शन का हर पहलू अपनी सम्पूर्ण श्रेष्ठता व मौलिकता को समेटे अनेकता

के बीच एकता के स्वर गुंजायमान करता है। बेणेश्वर मेले का शब्दों में जितना विवेचन किया जाए कम है, वहां पहुंच कर ही इसका आनंद लिया जा सकता है। यह मेला देवाधिदेव महादेव को समर्पित है। धाम की सबसे ऊंची पहाड़ी पर विशाल शिवालय है। पास ही राधा-कृष्ण का मुख्य हरि मंदिर है। यहीं ब्रह्ममंदिर, पंचमुखी गायत्री मंदिर, शबरी मंदिर और राजा बलि की यज्ञस्थली, वाल्मीकि मंदिर भी हैं। महामेले के अवसर पर देश के विभिन्न हिस्सों से कई सम्प्रदायों, पंथों, अखाड़ों, आश्रमों से आए विभिन्न संत-महात्माओं के दुर्लभ दर्शन भी हो जाते हैं।

इस दौरान भक्तों, संतों व श्रद्धालुओं द्वारा प्रवाहित भक्ति स्वर लहरियों से पूरा इलाका गूंजायमान रहता है। सुमधुर संगीत और विभिन्न धार्मिक वाणियों से उल्लसित आदिवासी जीवन ऊर्जा को रिचार्ज कर अपने को धन्य समझते हैं। मेले के दौरान मनोरंजन के साधनों के अलावा जादुई तमाशों व करतबों का प्रदर्शन इसे और भी लोकप्रिय बना देता है। यहां पर पहुंचने वाले पर्यटक डूंगरपुर-बांसवाड़ा के आसपास स्थित दर्शनीय एवं प्राकृतिक स्थलों का अवलोकन करना भी नहीं भूलते हैं। सदानीरा नदियों में कलकल बहता पानी, हरियाली से आच्छादित पहाड़ियां, मंदिरों से उठते प्रार्थनाओं के स्वर और रंग-बिरंगी पोशाकों में सजे-धजे युवकों व बालाओं के उन्मुक्त हास-परिहास से पूरा वातावरण धमक उठता है। लोक संस्कृति से रचे-पचे इस उत्सव के बीच धार्मिक आस्थाओं का भी दिग्दर्शन भी होता है।

मावजी को कृष्णावतारी मानते हैं भक्त

लगभग तीन सौ वर्ष पहले वागड़ अंचल की पुण्यधरा बेणेश्वर के निकट साबला गांव में सिद्ध संत, त्रिकालदर्शी, धर्मरक्षक और कृष्णावतार मावजी का प्राकट्य हुआ। ब्राह्मण कुल में दालम ऋषि के घरे जन्मे इस बालक ने हिन्दू समाज में एकता स्थापित करने के लिए मानव धम्र का प्रतिपादन किया। उन्होंने जाति प्रथा, नशाखोरी और समाज में व्याप्त बुराइयों को मिटाने का भरसक प्रयास किया। माना जाता है कि वे कृष्णावतार थे तथा द्वापर युग की अधूरी रासलीला और धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए यहां अवतार लिया था। इसीलिए साबला व आसपास के क्षेत्र को गोकुल-मथुरा माना गया है। वे स्वयं गोपालन करते और गायों को चराने के लिए प्रतिदिन बेणेश्वर जाया करते थे। उनके जीवन से जुड़ी कई दंतकथाएं और चमत्कार आज भी लोगों की जुबान पर हैं। उन्होंने 750 ग्रंथ वागड़ी भाषा में लिखे। उनके चार बड़े ग्रंथों को चौपड़ा कहा जाता है, जिसमें उल्लिखित भविष्यवाणियां आज भी सटीक मानी गई है। 'डोरिए दिवा बरेगा, परिए पानी विसायेगा, वायरे वात थाएगा, भेत मतें भबूका फूटेगा, परवत गरी नी पाणी होसी' जैसी बातें सार्थक भी हो चुकी है। इन्होंने भगवान निष्कलंक अवतार के कई मंदिरों का निर्माण कराया। जाति धर्म से ऊपर उठ कर इन्होंने आदिवासी, अनुसूचित और पिछड़ों को अपना शिष्य बनाया। शिष्य परम्परा में गुरु गादी पर वर्तमान में गादीपति अच्युतानंदी महाराज हैं। - **अशोक तम्बोली**

पाठक-पीठ

अभिशप्त जीवन को विवश बुजुर्ग

अनुमान जताया जा रहा है कि आगामी तीन दशक बाद बुजुर्गों की संख्या 32.4 करोड़ तक पहुँचेगी। युवा जोड़ों को यह समझना होगा कि जिन्होंने उनके कल के लिए अपना आज न्योछावर कर दिया है, ऐसे बुजुर्गों को ढलती उम्र में प्रताड़ित न करें। उनकी पूरी देखभाल ओर सेवा-सुश्रूषा की जाए। अच्छा-बुरा सलूक किसी के भी साथ किया जाता है। कुछ अन्तराल बाद करने वाले पर ही लौट कर आता है। प्रत्यूष के जनवरी अंक में सांध्य वेला में 'सपने टूटे, राहे सूनी' आलेख दिल को छू गया। **-एस.एस. सजल**

क्यों न बदले चंबल के बीहड़?

'प्रत्यूष' के जनवरी अंक में चंबल नदी के बीहड़ों पर लिखा आलेख पंसद आया। यह सही है कि सात दशक बाद भी चंबल के बीहड़ों की स्थिति यथावत है। पहले सैकड़ों डकैत थे और आज सिर्फ गिनती के, मगर बीहड़ों में जनजीवन आज भी बाबा आदम के जमाने जैसा ही है। आखिर आजादी के बाद राज्यों और केन्द्र सरकारें कर क्या रही हैं। विकास नाम की चिड़ियां सिर्फ शहरों, बड़े कस्बों या राजमार्गों के ऊपर तो मंडराती नजर आती है। मगर सुदूर देहाती गांव तो वैसे के वैसे ही हैं, जैसे अंग्रेजी राज में थे। **-अलका शर्मा**

देखन में छोटे लगे - बात करें गंभीर

'प्रत्यूष' के कलेवर, साज-सज्जा और आलेखों में पिछले वर्षों में निरंतर सुधार देखने को मिल रहा है। किसी भी पत्रिका को पन्द्रह साल की दीर्घावधि तक पल्लवन, सिंचन और युगानुरूप आकार देना विलक्षण है। निश्चित रूप से प्रकाशक तथा सम्पादक इसके लिए बधाई के पात्र हैं। मैं पिछले पांच वर्ष से पत्रिका की नियमित पाठक हूँ। इसे प्रदेश की बेहतर सम्पूर्ण मासिक पत्रिका कहा जा सकता है। **-निर्मला दाधीच**

चिंतनधारा में बदलाव सुखद

कहा जाता है कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की वजह से प्रिंट मीडिया कमजोर हो रहा है, पर मुझे नहीं लगता कि प्रिंट मीडिया का महत्व कभी कम होगा। दैनिक व मासिक पत्र-पत्रिकाओं का अपना विशेष महत्व होता है। 'प्रत्यूष' पत्रिका के सम्पादकीय चुटीले व समसामयिक हैं। सिंहासन बत्तीसी के आख्यान की नई कड़ी अच्छी लगी। इसमें संदेह हैं। संसद में जनप्रतिनिधियों द्वारा हंगामा करने और देश का धन जाया करने सम्बन्धी संपादकीय मन को छू गया।

-शांतिलाल मेहता

पचास दिन की भरपाई करेगा पूरा साल

असल में विमुद्रीकरण के फैसले पर नहीं, बल्कि आम जन का आक्रोश इस बात पर है कि इतना बड़ा फैसला बिना तैयारी के लागू किया गया। आतंकवाद व नक्सलवाद पर लगाम ज़रूर लगी है। कालेधन के झंडाबरदारों ने बैंकों के भ्रष्ट अफसरों से मिलकर करोड़ों की नई करैंसी हथिया ली। सरकार सोती रही और आम जनता घंटों क्यू में खड़ी रही। व्यापार, खेतीबाड़ी, उद्योग-धंधे सहित पूरी अर्थव्यवस्था पटरी पर आने में अभी वक्त लग सकता है। मुद्रा चक्र का थमना मंदी की आहट का संकेत है।

मोदी सरकार यह दोहराते नहीं थक रही कि नोटबंदी देश में व्याप्त भ्रष्टाचार व कालाधन को समाप्त करने का ऐतिहासिक कदम है, वहीं लगभग नब्बे फीसदी आबादी की तकलीफें थमने का नाम नहीं ले रही हैं। 8 नवम्बर को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के राष्ट्र के नाम संबोधन से उत्साहित आम जनता की शुरूआती प्रतिक्रिया जरूर सकारात्मक रही, मगर पचास दिनों में उस पर विपदाओं का पहाड़ टूट पड़ा। लोगों को उम्मीद थी कि उनकी तकलीफों के बावजूद दूसरे चरण में भ्रष्ट नेता, अफसरों व काले धंधों में लिप्त घरानों पर गाज अवश्य गिरेगी। किन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ। लोगों को यह बात गले नहीं उतरी कि अपने खाते में ढाई लाख की रकम जमा होते ही वे मुजरिम क्यों साबित हो जाएंगे। जबकि इतनी रकम किसी भी साधारण परिवार के पास होना सामान्य बात है। जब देश आजाद हुआ, उस वक्त रुपया और डॉलर तकरीबन बराबर हुआ करते थे। आज रुपया वहीं खड़ा है और डॉलर उछलता इठला रहा है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि देश की पचास फीसद से अधिक संपदा धन्ना-सेठों व रसूखदारों के पास है, जिनकी कुल आबादी एक-दो प्रतिशत के आसपास है। ऐसे में देश के बाकी 97-98 फीसद लोगों को काला धन निकालने के नाम पर घोर विपदाओं में धकेल देना कैसे जायज हो सकता है। वैसे भी कालाधन का छोटा हिस्सा ही नकद में है।

नोटबंदी से केवल गरीबों को तकलीफ बढ़ी और नुकसान ज्यादा हुआ है। इससे अमीरों पर कोई खास असर नहीं पड़ा, न ही पड़ेगा और न ही काले धन की उत्पत्ति पर कोई फर्क पड़ने वाला है। देश में 5.84 करोड़ छोटे कारोबारी और 13.83 करोड़ छोटे कृषकों व खेत मजदूरों की लगभग कमर ही टूट गई। इसके अलावा अपंजीकृत काम करने वाले करोड़ों दिहाड़ी मजदूरों में से दो तिहाई का चूल्हा जलना भी मुश्किल हो गया।

एसोचैम के आकलन के अनुसार नोटबंदी से व्यावसायिक क्षेत्र 60 से 70 प्रतिशत तक प्रभावित हुआ। पर्यटन उद्योग से जुड़े लोगों की रोजी रोटी पर संकट छा गया। बड़ी तादाद में कारखानों से कारीगर-मजदूर निकाल दिए गए या उन्हें घर बैठने को कह दिया गया है। परिवहन क्षेत्र में ट्रकों के पहिए स्लो स्पीड में आ गए। कुल तस्वीर यह बनी कि उत्पादन रूक गया, उद्योग-धंधे ठप होने लगे। बेरोजगारी, भूखमरी, गरीबी का ग्राफ तेजी से बढ़ा जिससे लोगों का गुस्सा बढ़ा। चुनावी वेला में यह गुस्सा भाजपा के समीकरण बिगाड़ सकता है।

अपने ही पैसों के लिए बने याचक

असल में विमुद्रीकरण के फैसले पर नहीं, बल्कि आम जन का आक्रोश इस बात पर है कि इतना बड़ा फैसला बिना तैयारी के लागू किया गया। वैश्विक आर्थिक पत्रिका फॉर्ब्स के अनुसार 'न इंसानी फितरत बदलती है न बदलेगी। गलत काम करने वाले लोग रास्ता ढूंढ ही लेते हैं। इसलिए भारत सरकार द्वारा भ्रष्टाचार, कालाधन और आतंकवाद के साये से निजात पाने के लिए उठाए गए नोटबंदी के कदम से कुछ खास हासिल न हो पाएगा।' हुआ भी यही। सबको दिख रहा है कि नोटबंदी से कालेधन पर तो कोई विशेष असर नहीं पड़ा। आतंकवाद व नक्सलवाद पर लगाम ज़रूर लगी है। कालेधन के झंडाबरदारों ने बैंकों के भ्रष्ट अफसरों से मिलकर करोड़ों की नई करैंसी हथिया ली। सरकार सोती रही और आम जनता घंटों क्यू में खड़ी रही। अपने ही पैसों को पाने के लिए उन्हें अनायास याचक बना दिया गया। सौ से अधिक लोग क्यू में खड़े-खड़े मौत की आगोश में समा गए। बैंक के सामने कतार में एक भी रसूखदार, धन-कुबेर, अफसर और राजनेता खड़ा नहीं दिखाई दिया।

अर्थव्यवस्था को सरकार कैशलेस करने की तैयारी कर रही है, वह अभी लंबी प्रक्रिया है। व्यापार, खेतीबाड़ी, उद्योग-धंधे सहित पूरी अर्थव्यवस्था पटरी पर आने में अभी वक्त लग सकता है। मुद्रा चक्र का थमना मंदी की आहट का संकेत है। सिर्फ डिजिटल में जाने से हालात नहीं बदलेंगे, क्योंकि डिजिटल व्यवस्था को लागू करने के लिए संसाधन जुटाने और उसे व्यवहारपरक बनाना काफी चुनौतीपूर्ण है।

- जगदीश सालवी

अमीरों की ब्लैकमनी को किया व्हाइट

संसद का शीतकालीन सत्र ठप रहा। प्रधानमंत्री विपक्ष को कालेधन के बचाव में खड़ा चित्रित करते रहे और विपक्ष नोटबंदी को एक बड़ा घोटाला बताता रहा। कई अर्थशास्त्री और रेटिंग एजेंसियों ने नोटबंदी को अर्थव्यवस्था के लिए नुकसानप्रद माना। जमीनी हालात से भी यही अवधारणा बनती है। देश में नब्बे फीसद कामगार असंगठित क्षेत्र में काम करते हैं। वे कैसे चूल्हा-चौका चलाएंगे और कैसे अपने बच्चों की परवरिश करेंगे।

सरकार ने इस पर गौर ही नहीं किया। पचास दिन में आयकर विभाग ने 983 छापे डाले, जिनमें 458 करोड़ की नकदी जब्त की। इसमें 105 करोड़ की नई करैंसी भी शामिल है और 400 करोड़ के जेवर बरामद। कुल मिलाकर 858 करोड़ रुपये की अघोषित संपदा उजागर हुई।

सरकार ने इरादा जाहिर किया है कि नए साल में बेनामी संपत्ति पर बड़ा हमला होगा। लेकिन सरकार ने कालेधन के कारोबारियों को नकदी जमा करवाने पर पचास फीसद छूट का ऐलान भी किया जो कालेधन को सफेद बनाने का फॉर्मूला ही लगता है। पुराने नोटों पर राजनीतिक पार्टियों को दी गई छूट भी आम लोगों के गले नहीं उतर रही है। बड़े कारोबोरियों ने अपने चहेतों व अहसानमंदों के खातों में करोड़ों रुपये के पुराने नोट जमा करवा दिए और बड़ी आसानी से काला धन सफेद हो गया। देश के जन-धन खातों में इस अवधि के दौरान 70 हजार करोड़ से अधिक रुपये जमा हुए, जो एक रिकार्ड इसलिए है कि जो जन धन खाते जीरो बैलेंस पर निष्क्रिय से थे, उनमें कारोबारियों के बड़ी तादाद में रुपये जमा हो गए।

नववर्ष की पूर्व संध्या पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नोटबंदी की पचास दिवसीय मोहलत के बाद राष्ट्र के नाम संदेश दिया। उन्होंने पचास दिन की नोटबंदी से जख्मी अर्थव्यवस्था पर मरहम लगाने की कोशिश की।

हालांकि जनता को उम्मीद थी कि वे नोटबंदी से परेशान देशवासियों को यह आश्वासन देंगे कि आने वाले दिनों में परेशानियों की स्थिति से मुक्ति मिलेगी। लेकिन फिर वही 'भीम' एप, अंगूठे के इशारे पर 'बैंकिंग सिस्टम' और 'डिजिटल लेन-देन' को बढ़ावा देने का राग आलापा गया।

हालांकि उन्होंने पीएम आवास योजना, होम लोन पर 4 फीसद तक छूट, छोटे कारोबार की गारंटी दोगुनी बढ़ाने, किसानों के कर्ज के ब्याज पर कुछ राहत, गर्भवती महिलाओं को 6 हजार की आर्थिक मदद, वरिष्ठ नागरिकों द्वारा जमा राशि पर अच्छा ब्याज देने जैसी लोक-लुभावन कई घोषणाएं कर जन आक्रोश को न्यूट्रलाइज करने की कोशिशें ही की।

सरकार का केन्द्र बिन्दु गरीब, वंचित व हाशिए के लोग

नोटबंदी का फैसला अल्पकालीन लाभ के लिए नहीं, अपितु दीर्घकालिक ढांचागत बदलाव के वास्ते है। अर्थशास्त्र और समाज को कालेधन के अभिशाप से मुक्ति आवश्यक है। सीमा पार से जाली नोट छापने वालों और आतंकी समूहों को रोकना जरूरी है। इस मसले पर देश में असंतोष का न बढ़ना इस बात का सबूत है कि यह लोगों में स्वीकार्य बन गया। फैसला बहुत सोच-समझकर लिया गया है जो अर्थव्यवस्था सुदृढ़ीकरण की नींव को मजबूती देगा। नियमों में कई बार बदलाव रणनीतिक तौर पर किया गया। इससे जो राजस्व आएगा उसका इस्तेमाल गरीबों, वंचित और हाशिए के लोगों की भलाई के लिए किया जाएगा।

– नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

ओबामा की विदाई, ट्रम्प युग आरंभ

अमेरिका के चवालीसवें राष्ट्रपति बराक ओबामा ने अपना दूसरा कार्यकाल सफलतापूर्वक पूरा कर 20 जनवरी 2017 को विदा हो गए। इसी दिन डोनाल्ड ट्रंप ने नए राष्ट्रपति के रूप में शपथ ग्रहण की। भारत और अमेरिका दोनों ही लोकतांत्रिक देश हैं। बराक ओबामा अमेरिका के इतिहास में पहले ऐसे अश्वेत शख्स हैं, जो ऐसे मुल्क के राष्ट्रपति बने जो श्वेत लोगों की बहुलता वाला है। ओबामा का जन्म 4 अगस्त, 1961 को होनोलुलु(हवाई) में हुआ। वे अमेरिकी मूल की मां तथा केन्या मूल के मुस्लिम पिता की संतान हैं। उन्होंने कोलंबिया यूनिवर्सिटी से पॉलिटिकल साइंस और हावर्ड लॉ स्कूल और शिकागो यूनिवर्सिटी से उच्चतर शिक्षा प्राप्त की। उनका विवाह 1992 में मिशेल राबिंसन से हुआ। ओबामा दम्पती का गृहस्थ जीवन काफी खुशहाल है। वे कहते हैं कि अमेरिकी राष्ट्रपति कोई एलियन नहीं, वह भी आम इंसान है। 4 नवम्बर 2008 को और दूसरी बार 2012 में वे राष्ट्रपति बने। उन्हें 2009 में नोबेल शान्ति पुरस्कार से नवाजा गया।

केन्या की स्वाहिली भाषा में बराक ओबामा का मतलब है ऐसा शख्स, जो सौभाग्यशाली हो। जिन तीन लोगों का ओबामा सबसे ज्यादा गुणगान करते हैं वे महात्मा गांधी, अब्राहम लिंकन तथा मार्टिन लूथर किंग। ड्रीम्स ऑफ माय फादर, अ स्टोरी ऑफ रेस एंड इनहेरिटेंस तथा चेंज वी केन बीलिव उनकी लिखित पुस्तकें हैं। ऑक्सीडेंटल कॉलेज जॉइन करने के दौरान 1981 में उन्होंने लॉस एजेंल में अपना पहला भाषण दिया, जो साउथ अफ्रीका में चल रही नस्लभेद व रंगभेद नीतियों के खिलाफ था। राष्ट्रपति बनने के बाद भी हर पांचवा व्यक्ति उन्हें मुस्लिम समझता रहा। लेकिन यह मामूली बात नहीं कि अमेरिका जैसे गोरे लोगों के देश में वे राष्ट्रपति बने। उनका नाम 2005 में टाइम मैग्जीन द्वारा विश्व के सर्वाधिक प्रभावशाली शख्सियत के रूप में सम्मिलित किया गया।

भारत अमेरिकी रिश्तों का स्वर्ण काल

बराक ओबामा का कार्यकाल भारत-अमेरिकी सम्बन्धों के लिहाज से स्वर्णकाल सरीखा रहा। दोनों देशों के बीच ऐसी गर्मजोशी पहले कभी नहीं रही। 2010 में बराक ओबामा के पहले कार्यकाल में आपसी रिश्तों ने उड़ान भरी और 10 अरब डॉलर के सौदे हुए। दूसरे कार्यकाल के दौरान 2015 में ओबामा गणतंत्र दिवस पर मुख्य अतिथि बन कर आए तो अमेरिका भारत का भरोसेमंद मित्र बना। एटमी डील, स्मार्ट साझेदारी, रक्षा सहयोग ने नए सोपान प्राप्त किए। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अगुआई में आपसी विश्वास बहाली का सौहार्दपूर्ण परिवेश बना तथा भारत अमेरिका का रणनीतिक साझीदार ही नहीं अपितु स्वाभाविक साझीदार बन कर उभरा। ऐसा आजाद भारत में पहले कभी नहीं हुआ। बराक ओबामा दो बार भारत दौरे पर आए, परन्तु यहां से लौटते वक्त कभी पाकिस्तान नहीं गए। अन्यथा जब भी कोई अमरीकी राष्ट्रपति भारत आता तो अल्प समय के लिए ही सही पाकिस्तान अवश्य जाता था। दोनों देशों के बीच व्यापार 60 फीसद के आंकड़े तक पहुंचा। आपसी संबंधों पर कमाल का विश्वास जाग्रत हुआ और नागरिक परमाणु समझौता परवान पर चढ़ा। सितम्बर 2014 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व्हाइट हाउस में पहुंचे तो दोस्ती ने शिखर छुआ। ओबामा के कार्यकाल में आतंकवाद को लेकर पाकिस्तान की दोहरी भूमिका उजागर हुई और उसे मिल रही इमदाद में भारी कटौती हुई। पहली बार चीन पर नकेल कसने के लिए अमरीका को भारत के रूप में भरोसेमंद एक और साथी मिला।

डोनाल्ड ट्रंप और भारत-अमरीकी रिश्ते

नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनते ही भारत-अमेरिकी रिश्तों पर जमी बर्फ तकरीबन पिघल गई। बेशक भारत के आम लोग और अमेरिका में रहने वाले भारतीय मूल के ज्यादातर लोगों ने हिलेरी का समर्थन किया, लेकिन डोनाल्ड ट्रंप ने जिस राष्ट्रवाद की कश्ती पर सवार होकर चुनावी वैतरणी को पार किया, वैसा ही पिछले आम चुनाव में नरेन्द्र मोदी ने भी किया। इसी साम्यता के चलते भारत के लिए आपसी सम्बन्धों में टूटन का कोई खतरा नहीं है। दूसरा, अमेरिका परिपक्व लोकतंत्र है, जहां पर बनाई गई नीतियां वेशभूषा की तरह बदली नहीं जाती है। अमेरिका और भारत दोनों को बदलते परिवेश में एकदूजे की निहायत जरूरत है। पेंटागन द्वारा बनाई नीतियों में काफी स्थायित्व और दूरदर्शिता रहती है।

डोनाल्ड ट्रंप स्वयं भी चुनाव से पहले भारत के साथ रिश्तों व प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भारत को अपना मित्र मान चुके हैं। इसके अलावा वे रूस के साथ भी सम्बन्ध प्रगाढ़ रखना चाहते हैं, जो भारत के लिए फायदेमंद हो सकता है। ट्रम्प की मुस्लिम और आतंकवाद विरोधी नीतियों से पाकिस्तान की हवाइयां उड़ी हुई हैं, वहीं दक्षिण चीन सागर में चाइना के बढ़ते कदम से डोनाल्ड ट्रम्प खपा हैं। ये सारे हालात भारत के लिए अनुकूल माने जा रहे हैं। हालांकि पद संभालने से कुछ दिन पहले अमेरिका में हुए तीखे विरोध से ट्रंप की मुश्किलें बढ़ी हैं, जो उन्हें सर्व समावेशी नीतियों पर चलने को विवश कर सकती हैं। परन्तु संघर्ष और विरोध की परवाह किए बिना डोनाल्ड ट्रंप 20 जनवरी को विश्व के सर्वाधिक शक्तिशाली समझे जाने वाले अमेरिका के राष्ट्रपति पद पर आरूढ़ हो गए हैं। उन्हें मध्य-पूर्व में संघर्ष से हुए अस्थिर यूरोप, सीरिया के कारण रूस के साथ तनाव, अफगानिस्तान में अलकायदा का उभार, उत्तर कोरिया की धमकी, दक्षिण चीन सागर में सैन्य हलचल और अमेरिका की डोमेस्टिक स्ट्रेटेजी और अमेरिका फर्स्ट जैसे अहम् मसलों से रूबरू होना है।

- फिरोज अहमद शेख

डिसाइड का वादा, कपड़े धुले साफ और ज्यादा
डिसाइड
AADHAR PRODUCTS
वाशिंग पाउडर, डिटर्जेंट टिकिया एवं बर्तन बार
डिसाइड
वाशिंग पाउडर
डिसाइड
डिसाइड
बर्तन बार
Decide
एडवाइज़
Mfd. & Mktd. by : AADHAR PRODUCTS PVT. LTD., UDAIPUR Trade Enquiry 7727864004 | visit us at : www.aadharproducts.in

MIRAJ GROUP
तन भी शुद्ध, मन भी शुद्ध... तो वस्त्र क्यों रहे अशुद्ध!
मिराज शुद्ध
ऑयल सोप
100% पशु चर्बी रहित
MIRAJ
Family Pack
MIRAJ TRADECOM PVT. LTD.
Miraj Campus, Nathdwara - 313 301 (Raj.) India / Email : fmcg@mirajgroup.in / Web: www.mirajgroup.in
Contact us at : 88759 92317, 88759 33370

मादक मधुमास लिए

विष्णु शर्मा हितैषी

जीवन के उत्सव में, जीवन के रस में, जीवन के छंद में, उसके संगीत में, उसे देखने की क्षमता जुटाना ही वसंत मनाना है।

वसंत मूल रूप से प्रकृति का पर्व है। प्रकृति विविध रूपा है। कहीं वह स्वर्णिम आभा लिए सरसों तथा गेहूं की बालियों में लहलहाती है, तो कहीं मनमोहक तितलियों के भेष में मंडराती है। कहीं बौर से लदे, आम वृक्षों पर कोकिल बन कुहुकती है, तो कहीं पिहुकते मोर के रूप में नाचती तो कहीं नीले आकाश के रूप में विस्तारित हो जाती है।

वसंत ऋतु वनों में पलाश की मानिंद खिलने की सौंदर्य ऋतु है। बाह्य प्रकृति में देखें तो सूर्य के उत्तरायण के बाद शीत-ग्रीष्म ऋतुओं के संधिकाल में यह रंगों और गंधों का उत्सव है। पृथ्वी हरियाली की चादर ओढ़े कुछ ज्यादा ही इठलाती है। धूप कुछ ज्यादा ही उजली होती है और पौधे फूल खिलाकर खुशी का इज़हार करते हैं। कलियों और भौरों के बीच गुफ्तगू इस कदर मदहोश करने वाली होती है कि समूचा वातावरण गुनगुनाता जान पड़ता है। वसंत की यह गुनगुनाहट रसिक जनों को ऐसी गुदगुदाती है कि अनगिनत कवियों ने वसंत पर जितने गीत और गान लिखे हैं, उतने शायद किसी और ऋतु पर लिखे हों।

वसंत पंचमी उमंग, उल्लास, उत्साह के साथ विद्या, बुद्धि और ज्ञान के समन्वय का भी पर्व है। माता शारदे विद्या, बुद्धि, ज्ञान और विवेक की अधिष्ठात्री देवी हैं और इस दिन हम उनसे इन्हीं गुणों का वरदान चाहने के लिए उनकी अभ्यर्थना करते हैं।

शारदा प्रकटोत्सव के साथ वसंत पंचमी ऋतुराज के आव्हान एवं आमंत्रण का भी पर्व है। शीत के कारण घरों में सिकुड़े-दुबके लोगों के लिए यह बाहर निकल आनंद के अहसास का मौसम है। सुहानी-चटकती धूप, खुला आकाश एवं महक लुटाते इन्द्रधनुषी रंगों के पुष्प इन दिनों सबका मन उमंग से भर देते हैं। वसंत, विषादग्रस्त मानव के लिए एक संदेश भी है कि यहां कुछ भी स्थायी नहीं है, वह न शोक करे और न ही अहंकारग्रस्त हो। यहां दुःख है, तो सुख भी है, पतन है तो उत्थान भी है, विध्वंस है, तो सृजन भी है। इस मौसम में पंचतत्व अपना प्रकोप छोड़कर सुहावने रूप में प्रकट होते हैं। पंचतत्व- जल, वायु, पृथ्वी, आकाश और अग्नि सभी अपना मोहक रूप दिखाते हैं। आकाश स्वच्छ है, वायु सुहावनी है, अग्नि (सूर्य) रुचिकर है तो जल पीयूष के समान सुखदाता।

उम्मीद और उल्लास से सराबोर इस लोकपर्व में मज़हब के दायरे भी टूट जाते हैं, मंदिरों में जहां फाग गीतों के साथ लाल-पीली गुलाल उड़ने लगती है तो सूफी दरगाहों और मजारों में सरसों के फूल और आम के बौर चढ़ाए जाकर कव्वालियों के स्वर खनक उठते हैं।

सूफी दरगाहों में वसंत की शुरुआत को लेकर कहा जाता है कि अपने किसी प्रियजन की आकस्मिक मृत्यु से सूफी संत हजरत निजामुद्दीन औलिया बेहद उदास रहा करते थे। इन्हीं दिनों अमीर खुसरों ओखला के जंगल में टहल रहे थे। ये वसंत पंचमी का दिन था। पहाड़ी पर देवी काली के मंदिर में मेला लगा था, श्रद्धालु वासंती गीत गाते सरसों व अन्य पुष्प देवी को चढ़ाने जा रहे थे। खुसरो साहब को इस दृश्य ने बेहद प्रभावित किया। उन्होंने भी एक खेत से पुष्प खिले सरसों के कुछ पौधे लिये और मस्ताने अन्दाज में यह गाते हुए -

हज़रत ख्वाजा संग खेलूं धमाल
बायस ख्वाजा मिल बन आयो मैं
हजरत रसूल साहब जमाल
अरब यार तेरो वसंत मनायो।
सदा रक्खे लाल-गुलाल

हजरत निजामुद्दीन औलिया के पास पहुंचे। खुसरो की इस अदा ने उन्हें खुश कर दिया। कई माह बाद उनके चेहरे पर मुस्कान आई। शायद तभी से दरगाहों में वसंत का जश्न मनाया जाने लगा। दुःख का स्मरण दुःख को बढ़ाता है, इसके विपरीत वसंत की मधुरता आनंद को भी परमानंद में बदल देती है।

ए लो आए ऋतुराज!

ऋतुराज वसंत पर महाकवि पद्माकर की पंक्तियां मन को आनंद से भर देती है -

'केलिन में कछारन में कुंजन में, क्यारित में कलित वसंत किलकत है, पानन में पीकन में पलाशन पंगत में, बनन में बागन में बगर्‌यो वसंत है

मा शारदे के वरद पुत्र महाकवि कालीदास ने तो अपनी अमर कृतियों 'कुमार संभव', 'मेघदूत', 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' और 'ऋतुसंहार' में वसंत का जैसा अद्‌भुत वर्णन किया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। रामचरित मानस के अमर रचनाकार गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज की ये पंक्तियां भी दृष्टव्य हैं -

'सबके हृदय मदन अभिलाषा, लता निहारि नवहि तरुशाखा।'

मदभरे वसंत की इस आनंदातिरेक ऋतु पर निराला, महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत सहित अनेक कवियों ने प्रकृति की बड़ी खूबी के साथ अभ्यर्थना की है। निराला लिखते हैं -

'सखि! वसंत आया, भरा हर्ष वन के मन, नव उत्कर्ष छाया।' महादेवी कहती हैं -

'मुखर पिक, हौले-हौले बोल, जाग लुटा देंगी मधु कलियां, मधुप चलेंगे मोर।'

आप भी देखिए - अपने चारों ओर। नई कोंपले, नए पत्ते और नव पुष्प भी ऐसा ही कुछ संदेश दे रहे हैं। नव उत्साह और नई उमंग के साथ प्रकृति से तादात्म्य स्थापित कर कुछ नया और सबके हित में कर्म का संकल्प ले आगे बढ़ें।

ऋतुओं में न्यारा वसंत

महादेवी वर्मा

स्वप्न से किसने जगाया?
मैं सुरभि हूँ।
छोड़ कोमल फूल का घर
ढूँढती हूं कुंज निर्झर।
पूछती हूँ नभ धरा से -
क्या नहीं ऋतुराज आया?
मैं ऋतुओं में न्यारा वसंत
मैं अग-जग का प्यारा वसंत।
मेरी पगध्वनि सुन जग जागा
कण-कण ने छवि मधुरस माँगा।
नव जीवन का संगीत बहा
पुलकों से भर आया दिगंत।
मेरी स्वप्नों की निधि अनंत
मैं ऋतुओं में न्यारा वसंत।

वसंत आया

सूर्यकांत त्रिपाटी 'निराला'

सखि, वसंत आया!
भरा हर्ष वन के मन
नवोत्कर्ष छाया
सखि, वसंत आया!
किसलय-वसना नव-वय-लतिका
मिली मधुर प्रिय उर तरु-पतिका,
मधुप-वृंद बंदी
पिक-स्वर नभ सरसाया
सखि, वसंत आया!
लता-मुकुल हार गंध-भार भर,
बही पवन बंद मंद मंदतर
जागी नयनों में वन-
यौवन की माया
सखि, वसंत आया!
आवृत सरसी उर सरसिज उठे
केशर के केश कली के छुटे
स्वर्ण शस्य अँचल
पृथ्वी का लहराया
सखि, वसंत आया!

डॉ. स्वीटी छाबड़ा

स्किन की नमी में खिलता सौंदर्य

महिलाएं सजने-संवरने के लिए ब्यूटी पार्लर का रूख करती हैं। यह क्षेत्र किसी समय बहुत आसान हुआ करता था लेकिन इसमें आज अनेक चुनौतियां भी हैं। इस क्षेत्र में महिलाओं के लिए रोजगार की असीम संभावनाएं हैं। इसके लिए न्यू इंटरनेशनल कॉस्मेटिक केयर एकेडमी (एनआईसीसी) ने ग्रामीण बालिकाओं एवं महिलाओं को रोजगार से जोड़ने के लिए मेकअप के कुछ कोर्सेस भी प्रारम्भ किए हैं। जिसके जरिए वे अपने घर में ही रोजगार अर्जित कर सकती हैं।

इसी वर्ष एनआईसीसी एज्यूकेशनल सोसायटी एवं दृष्टि फाउण्डेशन स्वयं सेवी संस्था का गठन किया गया है। जिसके तहत महिलाओं के लिए बेसिक एवं एडवान्स हेयर कट, मेकअप, एडवान्स प्रोफेशनल्स डिप्लोमा इन मेकअप, डिप्लोमा इन ब्यूटी, डिप्लोमा इन स्पा के कोर्सेस कराये जा रहे हैं। समय-समय पर महिलाओं के लिए मेकअप की निःशुल्क क्लासेस भी चलायी जाती हैं ताकि वे मेकअप को लेकर अधिक जागरूक हो सकें।

दृष्टि फाउण्डेशन के जरिये एनआईसीसी ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं एवं महिलाओं को रोजगार के लिए उपरोक्त कोर्सेस की जानकारी देकर शिक्षित करती है। अब तक बांसवाड़ा, चित्तौड़गढ़ एवं डूंगरपुर की 50 से अधिक बालिकाओं को शिक्षित कर उन्हें प्रशिक्षित किया जा चुका है। एनआईसीसी शहर में ऐसी पहली संस्था है जिसने महिलाओं को हर तीज-त्यौहार एवं शादी के मौके पर बेहतर एवं गुणवत्तायुक्त मेकअप देने के लिए बॉलीवुड एवं विशेष रूप से बालाजी टेलिफिल्म्स से टाईअप किया है ताकि वहां के मेकअपमेन यहां आकर महिलाओं को बेहतर मेकअप सेवाएं दे सकें। इसके अतिरिक्त एनआईसीसी ने महिलाओं एवं पुरुषों को अपने जीवन चक्र के बारे में जानने के लिए औरा एवं महिलाओं के लिए चाईनीज टाईची थैरेपी की व्यवस्था की है। टाईची थैरेपी में मार्शल आर्ट जैसे पोश्चर होते हैं जो शरीर की नेगेटिव एनर्जी को निकाल कर उसमें पॉजीटिव एनर्जी डालते हैं। सर्दियों में त्वचा के शुष्क होने से वह बेरौनक और निर्जीव सी दिखने लगती है। शरीर में मौजूद पानी और पोषक तत्वों को शरीर के भीतर रोकने में हमारी त्वचा एक अहम भूमिका निभाती है।

हालांकि बाहरी वातावरण के प्रति हमारी त्वचा बहुत संवेदनशील होती है और आमतौर पर यही माना जाता है कि सर्दी के मौसम की तुलना में गर्म और नमी भरे वातावरण में हमारी स्किन से ज्यादा पानी का लॉस होता है। जबकि वास्तव में ऐसा है नहीं, क्योंकि ठंडे और सूखे मौसम में हमारी स्किन में मौजूद पानी की ज्यादा तेजी से हानि होती है। इस प्रक्रिया में स्किन सेल्स में पानी का स्तर अलग-अलग बन जाता है। स्किन में ड्राईनेस होने से सेल्स अधिक मात्रा में डेड होती है।

सर्दियों में त्वचा में पानी की कमी के साथ-साथ स्किन में लगातार बदलाव की प्रक्रिया भी चलती रहती है। इस प्रक्रिया में स्कीन सेल्स जिन्हें कॉर्नियोसाइट्स कहा जाता है, वह मृत हो जाती है। पानी की क्षति के कारण इन कोशिकाओं के मृत होने की गति बढ़ जाती है, लेकिन झड़ नहीं पाती। ऐसे में वे एक जगह पर जमने लगती है।

शरीर के जिस हिस्से में जहां ऐसा होता है वहां की स्किन मोटी ओर बेरौनक बन जाती है। स्किन के ड्राई होने का यह आम लक्षण है। बेरौनक सूखी और निर्जीव सी दिखाई देने वाली त्वचा यदि ज्यादा देर तक शुष्क रहे तो उस पर उम्र के निशान जल्दी उभरने लगते हैं, जिससे झुर्रियां दिखाई देने लगती है। ब्यूटी एक्सपर्ट के अनुसार, त्वचा में नेचुरल मॉस्चराइजर खोने के कारण पानी बहुत तेजी के साथ स्किन से उड़ने लगता है। यह स्थिति आने पर त्वचा की कोशिकाओं का विकास नहीं हो पाता है और त्वचा पर डेड सेल्स तेजी से जमने लगती है।

त्वचा की ऊपरी सतह पर कोई भी क्रीम लगाने से इस समय में फायदा इसलिए नहीं होता है क्योंकि त्वचा की भीतरी कोशिकाओं तक पानी की क्षति हो जाती है। स्किन की भीतरी कोशिकाओं तक पानी पहुंचे तभी वह वहां नमी बनाकर कोशिकाओं को पुनर्जीवित कर पाने में सक्षम हो पाता है। अगर विटामिन बी-3, नियासिनामाइड, हाईएल्यूरोनिड एसिड और ग्लिसरीन युक्त मॉइश्चराइजर को त्वचा पर लगाया जाए तो वह त्वचा की हर परत में पानी के स्तर को सही कर की नमी को बनाए रखता है। ज्यादातर महिलाएं गर्म पानी से नहाने के तुरंत बाद बाहर के ठंडे वातावरण के संपर्क में आ जाती है, जिससे स्किन पर बुरा असर पड़ता है। क्योंकि ठंडा और गर्म वातावरण बदलने से त्वचा के अंदर बारीक रक्त वाहिनियां फट जाती हैं, और त्वचा की कोशिकाओं के क्षतिग्रस्त होने की संभावना बढ़ जाती है, इसलिए त्वचा की नमी को बचाने के लिए नहाने या मुंह धोने के आधे घंटे बाद ही बाहर सर्द हवाओं में जाएं। बाहर से घर में आएं तो ठंडे पानी से मुंह धोएं।

त्वचा की नमी को कैसे बनाएं रखें।

त्वचा की खूबसूरती बरकरार रखने के लिए केवल बाहरी उपाय ही नहीं भीतरी उपाय भी जरूरी हैं। डाइटिशियन एक्सपर्ट इस संबंध में कहते हैं कि उचित खानपान से सर्दियों में त्वचा की चमक बरकरार रखी जा सकती है। इसमें पानी त्वचा के पोषण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सर्दियों में वैसे ही प्यास कम लगने के कारण पानी कम पिया जाता है, लेकिन त्वचा की खूबसूरती को ध्यान रखकर यदि सर्दियों में पानी उचित मात्रा में पिया जाए तो स्किन में पानी का स्तर बना रहता है। स्किन की कोशिकाओं में उपस्थित लिपिड का संतुलन बनाए रखने के लिए भीगे हुए बादाम, वॉलनट, मिल्क, पनीर और घी को भोजन में शामिल करना चाहिए।

साथ ही सोते समय एक कप गर्म दूध में एक चौथाई छोटा चम्मच घी डालकर पीन से भी लिपिड का संतुलन बना रहता है। सर्दियों में विटामिन सी का प्राकृतिक स्रोत आंवला है। अत: डाइट में आंवले को जरूर शामिल किया जाना चाहिए।

लेखिका न्यू इंटरनेशनल कॉस्मेटिक केयर एकेडमी, उदयपुर की संस्थापिका है

शून्य में समाया ओम

– गौरव शर्मा

ओमपुरी का यूं अचानक चले जाना ..... विश्वास नहीं होता। वे आर्ट सिनेमा के बड़े कलाकारों में से एक थे। श्याम बेनेगल की 'आक्रोश', गोविन्द निहलानी की 'अर्द्धसत्य' केतन मेहता की 'मिर्च मसाला' जैसी फिल्मों ने उन्हें एक बड़े कलाकार के तौर पर स्थापित किया। ओमपुरी दूरदर्शन की लोकप्रियता के दिनों में कुछ गुणवत्तापरक रचनाओं के मुखिया थे। या यूं कहे कि दूरदर्शन की लोकप्रियता के वे ही वाहक थे। भारत विभाजन की घटनाओं पर आधारित धारावाहिक 'तमस' हो या पं. जवाहरलाल नेहरू की 'भारत एक खोज ' पर आधारित बना सीरियल। श्याम बेनेगल का भारतीय रेलवे पर आधारित नायाब सीरियल 'यात्रा' और 'कक्काजी कहिन' में पान की गिलोरियां चबाने वाले नेताजी ओमपुरी को उनके चहेते दर्शक भला कैसे भूल सकते हैं।6 जनवरी 2017 की सुबह 'शून्य' में समा गया यह 'ओम'। उन्हें हृदयाघात हुआ। लेकिन सिर में गहना घाव होने से मामला संदिग्ध माना जा रहा है। पुलिस जांच में जुटी है। छियासठ वर्ष की उम्र में अपने चाहने वालों को वे सौ से ज्यादा हिन्दी और 20 हॉलीवुड फिल्मों की विरासत सौंप गए। उन्हें 1982 में 'आरोहण' और 1984 में 'अर्द्धसत्य' फिल्म में अभिनय का लोहा मनवाने के लिए श्रेष्ठ अभिनेता के राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से नवाजा गया। 1990 में वे 'पद्मश्री अलंकरण' से भी सम्मानित किए गए। 18 अक्टूबर, 1950 को अम्बाला में जन्मे ओमपुरी का बचपन काफी संघर्षों में बीता। परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए ढाबे में नौकरी भी करनी पड़ी। उनका मकान ऐसी जगह था, जहां कुछ ही दूरी पर रेलवे यार्ड था। वे अक्सर घर से निकल ट्रेन की किसी बॉगी में रात गुजारने के लिए निकल जाते थे। रेलों से उनका लगाव कुछ इस तरह हो गया कि वे बड़ा होकर रेलवे ड्राइवर बनने की चाह अपने में सिमटाए रहे। हालात कुछ ऐसे बने कि उन्हें कुछ समय बाद ननिहाल पटियाला जाना पड़ा। जहां प्रारंभिक शिक्षा के दौरान ही उनका रूझान नाटकों में अभिनय की ओर रहा। ओमपुरी का व्यक्तिगत जीवन भी विवादों से घिरा रहा। उन्होंने अभिनेता अन्नू कपूर की बहिन सीमा कपूर से विवाह किया। दूसरा विवाह 1993 में नंदिता दास से। सीमा और नंदिता के बीच प्राय: विवादों से ओम परेशान थे। नंदिता से एक-एक बेटा है ईशान। नंदिता ने ओम पर घरेलू हिंसा का आरोप लगाया और 2013 में दोनों अलग हो गए। साधारण चेहरे के बावजूद उन्होंने अपनी खास अदायगी और आवाज़ के बूते पर अपनी खास पहचान बनाई। उनकी पहली फिल्म 'घासीराम कोतवाल'(1976) थी। अमरीशपुरी, स्मिता पाटिल, नसीरूद्दीन शाह, शबाना आजमी, परेश रावल के साथ उन्होंने कई यादगार फिल्में दी।

नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, नई दिल्ली में ओमपुरी का एक चित्र देखकर तब की प्रतिभाशाली अभिनेत्री शबाना आजमी ने कहा था – 'इतना बदशक्ल इन्सान कैसे जुर्रत कर सकता है एक्टर बनने की।' लेकिन इसी शबाना को वर्ष 2005 ने यह कहने के लिए मजबूर कर दिया कि 'ओम उस विशाल वृक्ष की मानिंद हैं, जिसकी जड़ें पंजाब हैं और शाखाओं का फैलाव इतना कि पश्चिम भी शरमा जाए। हालांकि उसने कभी अपनी सफलताओं का हिसाब-किताब नहीं रखा और न ही कभी उसको सामने रखकर खेला।' शबाना कई कला फिल्मों में ओम की सह-कलाकार भी रहीं।

बेशक दर्पण ने भी ओमपुरी को एक्टर बनने की सलाह ना दी हो, लेकिन स्कूल और कॉलेज में उन्हें अभिनय का चस्का ऐसा लगा कि उन्होंने तय कर लिया कि उन्हें थियेटर ही करना है। वे पटियाला के रंगकर्मी हरपाल तिवाना के थियेटर ग्रुप से जुड़े जिसने अन्तत: उन्हें नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा तक पहुंचने का रास्ता दिखाया। यहीं उनकी दोस्ती नसीरूद्दीन शाह से हुई। जब वे यहां से पुणे फिल्म संस्थान गए तो इन्टरव्यू के दौरान उनके पास पहनने के लिए साफ-सुथरी कमीज भी नहीं थी। नसीर का टी-शर्ट पहन कर इंटरव्यू दिया। इंटरव्यू के दौरान गिरिश कर्नाड व जयराज ने उन्हें कहा कि उन्हें शक्ल नहीं बल्कि योग्यता के आधार पर दाखिला दिया जा रहा है। जब वहां से उन्होंने अभिनय का कोर्स पूरा कर लिया तो मुम्बई आ गए। गुजारे के लिए रोशन तनेजा के एक्टिंग स्कूल में नौकरी की। जहां उनके छात्रों में एक अनिल कपूर भी थे।

अनिल उन्हें याद करते हुए कहते हैं कि – 'हमारे सभी शिक्षकों में ओमजी आक्रामक, निर्दोष और एक बच्चे के स्वभाव वाले थे। वे बतौर शिक्षक हमें ज्यादा से ज्यादा देना चाहते थे।' कुल मिलाकर ओमपुरी ने जिंदगी भर दु:ख ही झेले। बचपन के अभावों से गुजरे तो जवानी में रुपया और शोहरत हासिल करने के बाद भी मानसिक शांति नहीं पा सके।

> ज़िन्दगी और मौत के बारे में मेरा एक फलसफा है। किसी पर निर्भर रहने की नौबत न आए। लाचारी का जीवन जीने से बेहतर है कि आप दुनिया से कूच कर जाएं। अब सवाल यह है कि ये सब खुद के हाथ में तो नहीं है। लेकिन हम जाएंगे तो चलते-फिरते हुए। हो सकता है कि हम सोते में निकल जाएं और दुनिया को अगले दिन पता चले कि ओमपुरी चला गया।
>
> **– ओमपुरी**
>
> पिछले वर्ष मुम्बई में दीप भट्ट को दिए इन्टरव्यू से

With Best Compliments

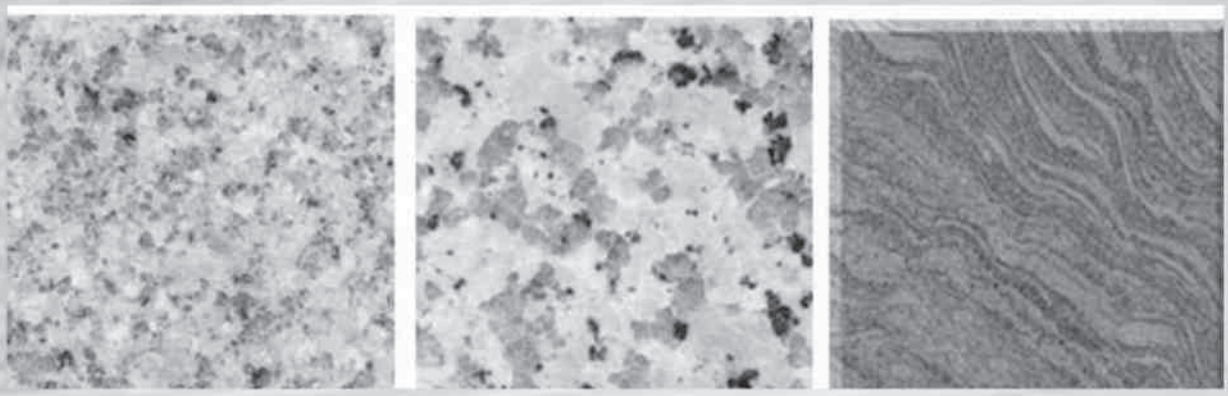

BALAJI KRIPA
MARBLE
&
GRANITE PVT. LTD.

ALL KINDS OF MARBLE AND GRANITE BLOCK, SLABS & TILES.

398-399, Sukher Industrial Area, Sukher, Udaipur (Rajasthan) INDIA
Phone : +91-294-2442370, Fax : +91-294-2441773
e-mail : balajikripa-udr@gmail.com

तीखे शब्द बाण से लैस अब राहुल गांधी

- सुधीर जोशी

प्रश्न मुंह बाएं खड़ा है कि क्या एक सौ बत्तीस साल पुरानी राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी बदलते राजनैतिक परिवेश में अपना खोया अखिल भारतीय स्वरूप फिर प्राप्त कर लेगी ? इस सवाल का जवाब इस बात पर निर्भर है कि कांग्रेस इस अभूतपूर्व हालत के लिए जिम्मेदार कारणों को कितने सटीक ढंग से समझ और उसके अनुसार पड़ताल कर पाती है कि बीजेपी के लगातार विस्तार के कारक क्या हैं ? उसकी वापसी इस पर भी निर्भर करेगी कि वह भविष्य के लिए कैसी रणनीति बनाती है। कांग्रेस पूरी तरह जिंदा है और जनता के बीच साख भी रखती है। पिछले आम चुनाव में उसे 20 फीसदी वोट मिले, भले ही वह महज 44 सीटों पर सिमट गई। कांग्रेस के मूल सिद्धांत उन मूल्यों से बने हैं जो उसे आजादी के आंदोलन से हासिल हुए थे, खासकर समेकित विकास, सामाजिक न्याय, गरीबी उन्मूलन और अल्पसंख्यक, महिला, दलित तथा आदिवासियों सहित हाशिए पर खड़े लोगों को सुरक्षा मुहैया कराना। 2004 में जब राहुल गांधी राजनीति में आए तो उन्हें पार्टी का स्वाभाविक उत्तराधिकारी माना गया और लोगों में उम्मीद जगी कि वे पार्टी का कायाकल्प करेंगे। हालांकि तब से वे कांग्रेस का भविष्य संजोने में लगातार प्रयासरत रहे। मगर यूपीए-प्रथम और यूपीए-द्वितीय के शासनकाल में प्रधानमंत्री रहे मनमोहन सिंह कांग्रेस के लिए शुभंकर साबित ही न हो पाए। उस वक्त राजनीतिक पिच पर राहुल कभी बल्लेबाज नहीं रहे मगर खेल को बारीकी से देखते रहे। कभी जोश से परिपूर्ण तो कभी हारे हुए राहुल गांधी पिछले तीन साल से अब सियासी रूप से काफी अनुभवी बन चुके हैं। तेरह साल का उनका राजनैतिक सफर काफी उथल-पुथल भरा रहा। जनवरी 2013 में उन्हें नेशनल कांग्रेस का उपाध्यक्ष बनाया गया, लेकिन 2014 के आमचुनाव में पार्टी को करारी हार का मुंह देखना पड़ा। इस हार के सदमे से उबरने के लिए पिछले तीन साल में उन्होंने अपने आप को काफी बदला तथा मायूस कार्यकर्ताओं में जोश भरा।

कठिन डगर पार कर बढ़े आगे

राहुल गांधी के नए तेवर देखकर कांग्रेस कार्यकर्ता उत्साह से उछल रहे हैं। पिछले महीनों में उन्होंने साबित कर दिया कि अब वे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की आंखों में आंखें गड़ाए बात करने की स्थिति में हैं। नवम्बर 2016 में नोटबंदी के मुद्दे पर राहुल ने कांग्रेस को जनता के बीच जिस तरह सक्रिय किया, वह उन्हें नए अवतार में स्थापित करता है। वे घायल सिंह की तरह गर्जना कर रहे हैं कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को हटा कर ही दम लेंगे और 2019 में कांग्रेस पूरे देश में प्रतिष्ठित होगी। उनका कहना है कि मोदी सरकार ने अपने निकट अमीरों को लाभ पहुंचाने के लिए ही जो किया वह आजादी के बाद का सबसे बड़ा घोटाला है। पिच्चानवे प्रतिशत जनता से धन खींच कर मुठ्ठीभर धनपतियों को सींचा गया। भारत का 60 फीसद धन अमीरों के पास है और उनमें भी 50 परिवारों के पास सबसे ज्यादा। यही लोग सरकार की रीति-नीति तय करते हैं। मोदी सरकार को किसानों, मजदूरों, दलितों और पिछड़ों की कोई परवाह नहीं।

बारां से परिवर्तन का फूंका बिगुल

राहुल गांधी ने राजस्थान के आदिवासी और जनजाति बहुल बारां में भारी भीड़ के बीच कहा कि आम लोगों को बहका कर सत्ता में बने रहने का जो काम दिल्ली में प्रधानमंत्री कर रहे हैं, वही काम राजस्थान में मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे कर रही है। दोनों ने विकास का रास्ता छोड़ लोगों को दिग्भ्रमित, बांटने और लड़ाने का काम पकड़ रखा है। अच्छे दिनों के सपने दिखाने की डुगडुगी बजाने वाली ये सरकारें अपने शासन में अभी तक कुछ भी बड़ी उपलब्धियां हासिल न कर पाई। उन्होंने जोर देकर कहा कि झूठे आश्वासनों से सत्ता में आने वाले इन लोगों को सत्ता से बाहर करना होगा, तभी गरीबों को न्याय मिल पाएगा। लोगों को अच्छे दिन तभी नसीब होंगे जब कांग्रेस का पूरे देश में फिर से राज हो।

राजस्थान कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सचिन पायलट ने इस सभा में कहा कि प्रदेश की आम जनता त्रस्त है। हर खेत को पानी और हर हाथ को काम देने का झांसा देकर सत्ता पाने वाली भाजपा सरकार के राज में न किसान-मजदूरों को कुछ ख़ास नसीब हुआ और न युवाओं को रोजी-रोटी। कानून-व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई और अल्पसंख्यकों, दलितों और वंचितों पर अत्याचार बढ़ गए हैं। राजस्थान भ्रष्टाचार का गढ़ बन चुका है। एक नहीं, अनेक घोटालों से प्रदेश की छवि तार-तार है। आने वाले बाइस माह बाद होने वाले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की ऐतिहासिक वापसी होगी। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस प्रभारी गुरुदास कामत ने कहा कि मैं इतना दावे के साथ कह सकता हूँ कि राजस्थान में भाजपा सरकार की विदाई तय है। आने वाले हर चुनाव में राहुल गांधी व सोनिया गांधी के नेतृत्व में पूरे देश में कांग्रेस की लहर चलेगी और झूठे आश्वासनों से जनता को बरगलाने वाले नेताओं को माकूल जवाब मिलेगा। पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि भाजपा की कार्यशैली और केन्द्र व प्रदेश की सरकार की जनविरोधी नीतियों से जनता त्राहिमाम है। समाज के दलित, आदिवासी और सभी वर्ग के लोग ऐसी सरकार को सबक सिखाने को प्रतिबद्ध है। एआईसीसी सचिव मिर्जा इरशाद बेग और विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष रामेश्वर डूडी का कहना है कि राहुल गांधी देश की उम्मीदों के सरताज होंगे।

Darcl
Logistics

Darcl Logistic Limited

(Formerly known as Delhi Assam Roadways Corporation Limited)

Branch Office :

2nd Floor, 26-NB Complex, Ahemdabad Road, Pratap nagar Chauraha, Udaipur (Raj.)
Tel. : +91-294-3296769, 3297688, Fax : +91-294-2494142
Email : surender.sharma@delhiassam.com | www.darcl.com

WITH BEST COMPLIMENTS

Dealer

इंडियनऑयल

IndianOil
Corporation Ltd.

Distributors :

ador WELDING

ADOR WELDING LTD.

J.R. Bhandari & Co.

Deals in :

All type of welding rods,
welding accessories,
Lubricants, Grease,
Furance oil & Cotton Waste

Outside Hathipole, Chetak Marg, Udaipur (Raj.)
Ph. : 0294-2524592, 2529617 (O) Fax : 0294-2524592

मौसम और माहौल के तेवर झेलना भी फायदेमंद

धूप में बिल्कुल ही न निकलने की वजह से समृद्ध लोगों को 'रीकेट्स' की वह बीमारी हो रही है जिसे कभी गरीबों का मर्ज माना जाता था।

स्कूल की किताबों में यह तो सभी ने पढ़ा ही होगा कि विटामिन 'डी' की कमी से रीकेट्स नाम की बीमारी होती है जिसमें हड्डियां कमजोर और टेढ़ी-मेढ़ी हो जाती हैं। यह भी सामान्य ज्ञान की किताबों की आम जानकारी है कि शरीर में विटामिन 'डी' के बनने के लिए धूप जरूरी है। पुराने जमाने में यह बीमारी खासतौर पर यूरोपीय देशों के गरीब बच्चों की बीमारी मानी जाती थी, जिन्हें पौष्टिक आहार नहीं मिलता था, साथ ही साथ धूप भी कम मिलती थी। भारत में वे गरीब बच्चे शिकार होते थे जिन्हें पूरा पोषण नहीं मिलता था। भारत जैसे देश में इसको कोई खास तवज्जो नहीं देता था, क्योंकि यहां साल में कम से कम आठ महीने तो धूप खिली होती है, लेकिन नए जमाने में रीकेट्स के मरीज दूसरे किस्म के लोग हैं। यूरोप में ही नहीं, भारत में भी खाते-पीते या समृद्ध लोग इस बीमारी के शिकार होने लगे हैं इसकी वजह यह है कि ऐसे लोग धूप में बाहर नहीं निकलते।

भारत में धूप तो निकलती है लेकिन समृद्ध लोग घरों से निकलते हैं, कार में बैठ जाते हैं, कार से उतरते हैं तो दफ्तर के अंदर एयरकंडीशन्ड माहौल में पहुंच जाते हैं, धूप मिलने का सवाल ही कहां उठता है। जरूरी मात्रा में विटामिन 'डी' मिलने के लिए रोज कम से कम एक-डेढ़ घंटा धूप मिलना जरूरी है। पहले इतनी फुरसत थी और खुले आंगन, बरामदे, चौपाल भी थे जहां लोग दोपहर में धूप सेक लेते थे, अब न वैसा वक्त रहा है न खुली जगह। यूरोप में भी रीकेट्स के मरीज बढ़ रहे हैं और उनमें ज्यादा बड़ी तादाद एशियाई और अफ्रीकन मूल के लोगों की है, क्योंकि अपेक्षाकृत गहरे रंग की त्वचा वाले लोगों को धूप की जरूरत ज्यादा होती है, कई पीढ़ियों से गर्म देशों में रहते हुए उनके शरीर की जरूरत वैसी हो गई है। इसके अलावा भी कुछ कारण हो सकते हैं, मसलन यूरोप के लोगों के लिए धूप इतनी बड़ी नियामत है कि मौका मिलते ही वे सन बाथ के लिए धूप में निकल जाते हैं, दूसरी तरफ हमारे जैसे मुल्कों में यही सिखाया जाता है कि धूप में मत निकलो, रंग काला हो जाएगा। रीकेट्स अकेली बीमारी नहीं है जो समृद्धि का अभिशाप है। ज्यादा नफ़ासत और सुरक्षित माहौल में रहने की वजह से शरीर में रोगों से लड़ने की क्षमता कम होती है, दमा या कई त्वचा के रोग, रोग प्रतिरोधक क्षमता के घटने से होते हैं और यह क्षमता ज्यादा सुरक्षित माहौल में रहने से घटती है, इसलिए कुछ हद तक मौसम और माहौल के उग्र प्रभाव को झेलना फायदेमंद है।

सुखी और समृद्ध जीवन के जो मानक पहले बने थे, वह अब संदेह के घेरे में आ गए हैं। शारीरिक श्रम न करना, पसीना न बहाना समृद्धि का प्रतीक था लेकिन अब लोग जिम में जाकर पसीना बहाते हैं या बगीचों में जॉगिंग करते हैं, सड़कों पर साइकिल चलाते हैं, तरह-तरह के डांस वगैरह करते हैं। किसी जमाने में हर संस्कृति में चर्बी या वसा का ज्यादा उपयोग समृद्धि की निशानी हुआ करता था, लेकिन अब असली घी खाने की शेखी नहीं बघारी जाती। मोटा अनाज, हरी सब्जियां खाना, शारीरिक श्रम करना, धूप, बारिश, ठंड या धूल की मार झेलना, ये सब अब आधुनिक जीवन शैली के प्रतीक बनते जा रहे हैं। इन सारी बातों का लब्बोलुवाब यही है कि किसी भी चीज की अति बुरी है, संतुलन बनाए रखना ही सही रास्ता है।

बच्चों में बढ़ रहा हड्डी रोग

पिछले माह जोधपुर में आयोजित 29वीं राज्यस्तरीय वार्षिक कॉफ्रेंस 'रोसाकॉन-2017' के दौरान अहमदाबाद से आए ऑर्थोस्पाइन सर्जन डॉ. अमित झाला का कहना था कि बच्चे यदि धूप में नहीं खेलेंगे तो उनमें विटामिन डी की कमी होने की आशंका अधिक होगी। ऐसे में वे कम उम्र में ही हड्डी संबंधी रोगों के शिकार हो जाएंगे। माता-पिता को इस सम्बन्ध में अधिक ध्यान देना चाहिए। उनका यह भी कहना था कि विटामिन बी-12 व विटामिन डी की कमी के कारण हड्डी के रोगी बढ़ रहे हैं। शुद्ध आहार, रात में जल्दी सोना, सुबह जल्दी उठना, व्यायाम और काम करने का अच्छा तरीका अपनाना चाहिए। हर व्यक्ति को बैठने का तरीका भी सही करना चाहिए। क्योंकि सीधे बैठने की आदत बनी रही तो अधिक उम्र में स्पाइन संबंधी रोग नहीं सताएंगे। पुणे के ऑर्थोस्कॉपी, ऑथोप्लास्टी ज्वाइंट रिप्लेसमेंट विशेषज्ञ सर्जन डॉ. सचिन तपस्वी का कहना था कि राजस्थान, पंजाब व गुजरात के लोगों के ज्वाइंट जल्दी खराब हो रहे हैं। यहां ऐसे मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। इसका मुख्य कारण विटामिन-डी की कमी के साथ ही खान-पान, बढ़ता वजन व लाइफ स्टाइल है।

- डॉ. ओ. पी. महात्मा

गरज रहे घनश्याम

-रमेश गोस्वामी

प्रदेश की भाजपा सरकार ने तीन सालाना जश्न मना कर भले ही अपनी सफलता का ढिंढोरा पीट लिया, परन्तु सरकार व संगठन में लाइलाज हो रहे अन्तर्विरोधों पर लगाम कसने में नेतृत्व अपने को असहाय महसूस कर रहा है। नेता एक दूजे पर घात-प्रतिघात से नस्र रहे हैं। विधायक और दीनदयाल वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष घनश्याम तिवाड़ी पिछले तीन साल से विभिन्न जन मुद्दों पर अपनी ही पार्टी की सरकार को कठघरे में खड़ा कर रहे हैं। वसुंधरा सरकार का सबसे बड़ा सिरदर्द बने तिवाड़ी न झुकने और न ही सियासी हमलों को विराम देने को तैयार हैं। उनके आरोपों के तीर इतने तीखे हैं कि सरकार व संगठन कराह कर भी आह नहीं कर पा रही है। सबको पता है कि वे अकेले नहीं है। संघ परिवार की उन्हें पूरी शह है।

पिछले दिनों अपने जन्मदिन पर बड़ा जलसा कर पार्टी की लक्ष्मण रेखा के भीतर रह कर सरकार की कार्यशैली की जम कर खिल्ली उड़ाई। उन्होंने कहा कि वे तीन साल से सरकार नाम की 'चिड़िया' को ढूंढ रहे हैं, मगर कहीं नजर नहीं आ रही है। एक अन्य समारोह में तिवाड़ी ने कहा कि अगले चुनाव में जीत कर फिर से सरकार का नेतृत्व करने की मुख्यमंत्री की स्वयंभू घोषणा सिर्फ अहंकार का पिष्ट पोषण है, जो लोकतांत्रिक मूल्यों और पार्टी संहिता के खिलाफ है। वे लोकतंत्र के आसन से राजतंत्र को सींच रही हैं। तिवाड़ी का कहना है कि वे आर्थिक न्याय और सामाजिक समरसता की लड़ाई पिछले एक साल से लड़ रहे हैं और एक लाख किलोमीटर की यात्रा कर प्रदेश के 25 जिलों की जनता से मिल चुके हैं। यदि प्रदेश की आर्थिक-सामाजिक समस्याओं पर ध्यान नहीं दिया गया तो पुरानी जागीरदारी प्रथा तो समाप्त हो गई, परन्तु छद्म रूप में वही बीमारी जनता को दु:खी कर देगी। तिवाड़ी ने स्पष्ट किया कि जनचेतना का उनका कारवां मंजिल तक पहुंचे बिना नहीं थमेगा।

घनश्याम आए दिन बिन मौसम के ही गरजते-बरसते रहे हैं। किसकी मजाल है कि उनके आरोपों के बादलों को तिरोहित करने का साहस कर सके। वे प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी को मजबूती से खड़ा करने व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा को हर शहर, गांव और गली तक पहुंचाने वालों में अग्रणी माने जाते हैं। पिछले भाजपा शासन में मंत्री और संगठन में बड़े पदों पर भी रहे। तिवाड़ी चतुर सुजान ठहरे, वे सरकार को आरसी दिखाने से नहीं चूके रहे हैं, परन्तु पार्टी की सीमा भी उन्हें पूरा ध्यान है। इसी के चलते मुख्यमंत्री को अपनी दूसरी पारी में कई मुश्किलों से दो-चार होना पड़ रहा है। आडवानी-वाजपेयी के दौर में राजे को बड़ी आजादी थी, परन्तु अब युग बदल गया और नरेन्द्र मोदी-अमित शाह का सिक्का चल रहा है। आलाकमान की भृकुटि तनी हुई है। संघ परिवार अपने एजेन्डे पर अमल नहीं हो पाने से खफा है। केन्द्र सरकार की फ्लेगशिप योजनाएं भी मंथर गति से चल रही हैं। कांग्रेस, राज्य सरकार की नाकामियों से संजीवनी प्राप्त कर अगले चुनावी समर के लिए सज्ज हो रही है। सरकार विपक्ष के प्रहारों को सहने की क्षमता ही खो चुकी है। ऐसे में सरकार को अपनों के शर-संधान की दिशा मोड़ने का कोई सटीक उपाय ही नहीं सूझ पा रहा है। बाइस महीने बाद विधानसभा चुनाव में इन दोहरे प्रहारों को झेल पाना काफी मुश्किल भरा होगा। इसी सोच से प्रदेश सरकार व संगठन सांसत में है।

>
> घनश्याम तिवाड़ी अश्वमेघ यज्ञ के ऐसे घोड़े हैं। जिन्हें कोई रोक-टोक नहीं सकता। उनकी इच्छा है तो वे पार्टी में बने रहे या छोड़ दें। तिवाड़ी पार्टी के काफी दिग्गज नेता हैं, लेकिन बहुत हल्के विचार वाले भी हैं। पार्टी उन्हें निकाल नहीं रही है, लेकिन वे खुद पार्टी को छोड़कर जाना चाहते हैं तो इसमें कौन क्या कर सकता है। मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने बीते तीन साल में राजस्थान के लिए जो विकास कार्य किए हैं, उनसे भी कई दिग्गजों के मन में ईर्ष्या पनप गई है। ईर्ष्यावश यदि कोई पार्टी छोड़ता है तो उसकी मर्जी। जाते हुए को पीछे से आवाज नहीं दी जाती ।
>
> **दिगम्बर सिंह**, उपाध्यक्ष, राजस्थान प्रदेश बीस सूत्रीय कार्यक्रम

Kamlesh Sen

championsaloon@yahoo.com

Mob:- 9829088841

www.championsallon.com

CHAMPION

HAIR SALON & SPA

Hair Dresigning

Tatto Studio

Skin Clinic

Bridge Groom Make-Up

STUDIO ADDRESS

- **CHAMPION HAIR SALON & SPA**
  Shakti Nagar, Main Road, Udaipur
  Ph : 2420729 Cell : 9829088841
- **CHAMPION FAMILY SALON**
  2/20 IInd Floor, Celebration Mall
  Udaipur Cell : 98286 88841
- **CHAMPION KID'S SALON**
  2-1 IInd Floor, Celebration Mall
  Ph.:5158886 Cell : 9772688841
- **CHAMPION HAIR SALON & SPA**
  Opp. National Mishthan Bhandar
  1st floor, Sec. 4, Hiran Magri, Udaipur
  Cell : 96020 88841

- **CHAMPION HAIR SALON & SPA**
  Subhas Vila, Near Gitanjali Sari
  Opp. Aravli Gas Office, Sec 13
  Cell : 9982188841
- **CHAMPION GAL'S SPA**
  M.G. College Road, Udaipur
  Ph: 5101089, Cell : 9799088841
- **CHAMPION HAIR SALON & SPA**
  Near Kotak Mahendra Bank,
  100Ft. Road, Kankroli, Rajnagar
  Mob:- +91 98289 88841
- **NAVRANG HAIR SALON & SPA**
  3/36, Behind S.S. Coaching, Sec.5
  Udaipur Ph.:- 2467725, Cell:- 9214688864

हरे मटर के मजेदार व्यंजन

रेणु शर्मा

मेथी मटर मलाई

सामग्री : 3/4 कप उबले हुए मटर के दाने, डेढ़ कप बारीक कटी मेथी, 1 बारीक कटा प्याज़, 2 टमाटर(हल्के उबले हुए और छिलका निकला हुआ), 1/2 चम्मच जीरा, 1/2 चम्मच काली मिर्च पाउडर, 1/4 कप दूध, 1 चम्मच मलाई, 6-7 काजू, 1 चम्मच खसखस, 1/2 चम्मच गरम मसाला पाउडर, डेढ़ चम्मच तेल/घी, थोड़ी-सी शक्कर और स्वादानुसार नमक।

पेस्ट के लिए : 1 छोटा प्याज, 4 हरी मिर्च, 1 इंच अदरक, 3 लहसुन की कलियां।

विधि : पेस्ट की सामग्री पीसकर अलग रख लें। टमाटर काट लें। काजू व खसखस को 2-3 चम्मच दूध में 15 मिनट के लिए भिगोएं और पेस्ट बना लें। एक बर्तन में आधा कप पानी, कटी हुई मेथी, चुटकी भर नमक व चुटकी भर शक्कर डालकर अलग रख दें। 15 मिनट बाद मेथी से पानी निथार कर अलग करें। कड़ाही में एक चम्मच तेल गर्म करें। इसमें मेथी डालकर मध्यम आंच पर लगभग 4 मिनट तक भूनें। मेथी अलग निकालकर ठंडी होने रख दें। इसी कड़ाही में 2 चम्मच तेल गर्म करें और जीरा तड़काएं। इसमें बारीक कटे प्याज डालकर सुनहरा होने तक भूनें। अब प्याज़ लहसुन-अदरक-मिर्च का तैयार पेस्ट डालकर 5 मिनट तक पकाएं। ऊपर से काली मिर्च छिड़कें और मिलाएं। कटे टमाटर डालें और 4 मिनट तक पकने दें। तैयार मिश्रण में पकी मटर व मैथी मिलाकर 1 मिनट तक पकाएं। अब काजू-खसखस का पेस्ट डालकर मध्यम आंच पर 2 मिनट तक पकाएं। आंच धीमी करें और दूध मिलाएं। 5-6 मिनट तक दूध उबलने दें। ग्रेवी गाढ़ी होने तक उबालना है। बीच-बीच में चलाते रहें। गरम मसाला पाउडर व नमक डाल मिलाएं। ऊपर से मलाई डालें, मिलाएं और आंच से उतार लें। गर्मागर्म पराठों के साथ परोसें।

मटर की गुझियां

सामग्री : 500 ग्राम मटर के छिले दाने, 500 ग्राम आलू, 500 ग्राम चीनी, एक किलो मैदा, एक किलो घी, इलायची, चिरौंजी, पिस्ता, नारियल किस, सभी अपने अन्दाज के अनुसार।

विधि : आलू उबालकर छील लें और मटर के दानों को धीमी आंच में पकाकर आलू के साथ पीस लें। इसके बाद घी में भूनकर इसमें चीनी व इलायची, चिरौंजी, पिस्ता, नारियल किस अच्छी तरह मिलाकर रख लें। मैदे में घी का मोयन देकर सान लें, अब इस मैदे की छोटी-छोटी लोइयां बनाकर चकले पर बेलकर आलू मटर का मसाला भरकर, गुझिया बना लें तथा घी में मंद-मंद आंच पर गुलाबी होने तक तल लें, मटर की टेस्टी और मीठी-मीठी गुझिया तैयार है।

मटर टिकिया

सामग्री : 200 ग्राम मटर के पिसे दाने, 500 ग्राम आलू, 2 प्याज, 4 लहसुन की कलियां, 5 हरी मिर्च, नमक, लाल मिर्च पाउडर, अमचूर पाउडर व तेल सभी अपने अन्दाज के अनुसार। **विधि :** पिसे मटर में बारीक कटी प्याज, कटी हरी मिर्च, बारीक कटी लहसुन को कतरें डालकर अलग रख दें।

आलू को उबालकर उसके छिलके उतार लें, फिर इन्हें नमक डालकर अच्छी तरह मसल लें। गर्म तेल में मटर के मिश्रण को डाल दें। जब मटर अच्छी तरह पककर महकने लगे तो इसमें लाल मिर्च, अमचूर पाउडर व नमक डालकर चम्मच से अच्छी तरह हिला मिला लें। अब इस मिश्रण को एक मिनट बाद आंच से उतारकर ठण्डा होने दें। मसले हुए आलू के अन्दर समान मात्रा में मटर के इस मिश्रण को भरकर टिकिया का आकार दें। तवे पर तेल गर्म करके टिकिया को दोनों तरफ से सेकें। तैयार टिकिया को हरे धनिए की चटनी, दही, इमली की चटनी व बारीक सेव के साथ पेश करें।

मटर की पूरी

सामग्री : गेहूं का आटा 2 कप, दही 1 चम्मच, बेकिंग पाउडर आधा चम्मच, घी 1 चम्मच, नमक स्वादानुसार।

तरावन के लिए अन्य सामग्री : उबले हरे मटर एक-डेढ़ कप, कटी मिर्च चार, जीरा 1 चम्मच, नीबू का रस आधा चम्मच, चाट मसाला 1 चम्मच, गेहूं का आटा 1 चम्मच, घी 1 चम्मच, नमक स्वादानुसार।

अन्य सामग्री : तेल या घी तलने के लिए।

विधि : आटा, दही, बेकिंग पाउडर, घी और नमक को मिलाएं। गुनगुने पानी से गूंद लें। आटे को छह से सात मिनट तक गूंदें ताकि आटा मुलायम हो जाए। आटे को गीले कपड़े से कुछ देर के लिए ढक दें। गूंदे हुए आटे को 12 हिस्से में बांट दें।

मटर और हरी मिर्च का पेस्ट तैयार करें। घी गर्म करें और उसमें जीरा डालें। जब पक जाए तो उसमें मटर का पेस्ट, नीबू का रस, चाट मसाला और नमक डालें और कुछ मिनट पकाएं। एक चम्मच गेहूं का आटा छिड़कें। दो से तीन मिनट और पकाएं ताकि मिश्रण पूरी तरह से सूख जाए। पूरी बेलें और उसमें मटर का थोड़ा-सा मिश्रण डालें। पूरी को बंद करें और सूखे आटे की मदद से उसे बेल कर तल लें।

With Best Compliments from
Dulux
Decorator Center
Want experts to paint your dream home ?
Call 1800-103-7373 (toll free)
WEATHERSHIELD
Power-packed Product Range
Weathershield Max
Technologically advanced 'Elastomeric' exterior emulsion that covers hairline cracks and prevents water seepage, thereby providing damp free homes.
CRACK PROOF TECHNOLOGY
Weathershield SunReflect
High quality acrylic based emulsion that protects the exteriors from the damaging effects of weather.
Weathershield Tile
Beauty Specialist for Tiles and Bricks
Weathershield Alkali Bloc
High performance primer that seals powdery surface and resists formation of alkali and efflorescence.
THE STAIN-FREE PAIN-FREE PAINT
3in1
SUPERclean
Premium Interior Emulsion
Features & Benefits:
Superior Washability
Superior Stain Protection
Superior Fungus Resistance
Nakoda Paints & Decor
(The True Colour Shop)
27-B, Ashwani Bazar, Udaipur, Ph.: 0294-2561676, Mob. : 09828140456
Email : nakodapaints.udr@gmail.com
Website : www.nakodapaints.com

भविष्यफल फरवरी 2016

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

कार्य विशेष में सफलता, आय पक्ष मजबूत, खर्चों में कटौती करनी होगी, मित्रों से अनबन, स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव, जीवन साथी से मधुरता, संतान पक्ष प्रतिकूल, भाग्य सामान्य, शत्रु परास्त होंगे, किसी पर विश्वास न करें।

वृषभ

संतान पक्ष से हर्षोल्लास, भाग्य साथ देगा, परन्तु कार्य एवं व्यापारिक गतिविधियों में बाधाएँ उत्पन्न होती रहेंगी। पारिवारिक मामले सुलझेंगे, स्वास्थ्य अच्छा, जीवन साथी से सम्बन्ध सामान्य, आय के नये स्रोत बनेंगे किन्तु, भौतिक सुख में कमी।

मिथुन

रचनात्मक कार्यों में रूझान, संतान से अपेक्षा पूरी होगी, दाम्पत्य जीवन उत्तम, महत्वाकांक्षाओं पर कुठाराघात की सम्भावनाएँ, स्वास्थ्य मध्यम, न्यायिक मामलों में सफलता, भावनाओं में न बहें, आय पक्ष सामान्य।

कर्क

साझेदारी लाभदायक, अस्थाई सम्पत्ति में वृद्धि, निवेश लाभदायक रहेगा। नये सौदों में लाभ, स्वास्थ्य में आकस्मिक गिरावट, शत्रु पक्ष का दमन, संतान पक्ष श्रेष्ठ, यात्रा योग, आय पक्ष श्रेष्ठ रहेगा, भौतिक सुखों में वृद्धि होगी।

सिंह

जिद्दी रवैया नुकसान पहुंचा सकता है, परिवार में तनाव सम्भव, जोड़-तोड़ से कार्य करने का तरीका नुकसान दे सकता है। स्वास्थ्य सामान्य, दाम्पत्य जीवन में कड़वाहट, आय के अनुपात में खर्च अधिक, राजकीय मामलों में रूकावटें आएंगी।

कन्या

3 से 17 फरवरी के मध्य आवश्यक कार्य निपटा दीजिये तत्पश्चात् आत्मबल में कमी। सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में खर्च की अधिकता, स्वास्थ्य उत्तम, जीवन साथी का पूर्ण सहयोग, भाग्य श्रेष्ठ, संतान पक्ष से अनुकूलता, आय पक्ष उत्तम है।

तुला

रोग, ऋण एवं शत्रु का शमन, नई कार्य योजना बनायेंगे एवं सही ढंग से सम्पादित करेंगे। जितनी मेहनत उतना फल नहीं मिलेगा, धैर्य रखें। आय पक्ष में उतार-चढ़ाव एवं संतान की ओर से संताप, जीवन साथी की चिन्ता, युवा वर्ग में असन्तोष।

वृश्चिक

कार्य की अधिकता से मन खिन्न रहेगा एवं राजकीय मामलों के उलझने से अकारण परेशानियां। मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि। सार्वजनिक मंच पर सम्मानित हो सकते हैं। आय पक्ष उत्तम, संतान की ओर से हर्षोल्लास, स्वास्थ्य उत्तम, भाई-बहिनों में मनमुटाव दूर होंगे।

धनु

भौतिक सुखों में वृद्धि, जोखिम के कार्यों में नुकसान उठाना पड़ सकता है, अपने ही लोगों के व्यवहार से खिन्नता, बड़े-बुजुर्गों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में अधिक रूचि रहेगी। स्वास्थ्य उत्तम, संतान पक्ष श्रेष्ठ, भाग्य अवरूद्ध रहेगा।

मकर

माह का पूर्वार्द्ध आत्म विश्वास से भरपूर रखेगा, लेकिन सावधान रहें। अपनों से विरोध सम्भव, कर्ज एवं शत्रुओं से छुटकारा मिलेगा, कार्य क्षेत्र में वृद्धि होगी, भाग्य साथ देगा, आय पक्ष सामान्य, दाम्पत्य जीवन अनुकूल, पुराने मित्रों से मिलन होगा, नई सोच बनेगी।

कुम्भ

कार्य क्षेत्र में नवीनता एवं नये सम्पर्कों से लाभ। स्थाई एवं दीर्घ कालीन कार्य योजना बनेगी, परन्तु क्रियान्वयन में देरी होगी। राजकीय एवं न्यायिक मामलों में विजय प्राप्त होगी, स्वास्थ्य सामान्य, जीवन साथी के स्वास्थ्य को लेकर सावधान रहें।

मीन

मनोवांछित कार्यों में सफलता, अटके काम बनेंगे, भाग्य का पूर्ण सहयोग प्राप्त। आय पक्ष सुदृढ़, अपने ही सहकर्मी अवरोधक बनेंगे। सावधानी रखें। नेतृत्व क्षमता का विकास, धार्मिक यात्रा योग, स्वास्थ्य ठीक।

With Best Compliments from

VARDHAN BOOK HOUSE

(Vardhan Publishers & Distributors)

(Educational Book Seller & Distributors)
Shop No. 240, Chaura Rasta, Jaipur-302003

We Deal in all kinds of Technical and Non-Technical Book. We are the Library suppliers of Nursing, Medical, Dental, Homeopathy, Pharmacy, Technical and other College books. We also published Medical (Nursing) & Technical Books under the Name **"VARDHAN PUBLISHERS & DISTRIBUTORS".**

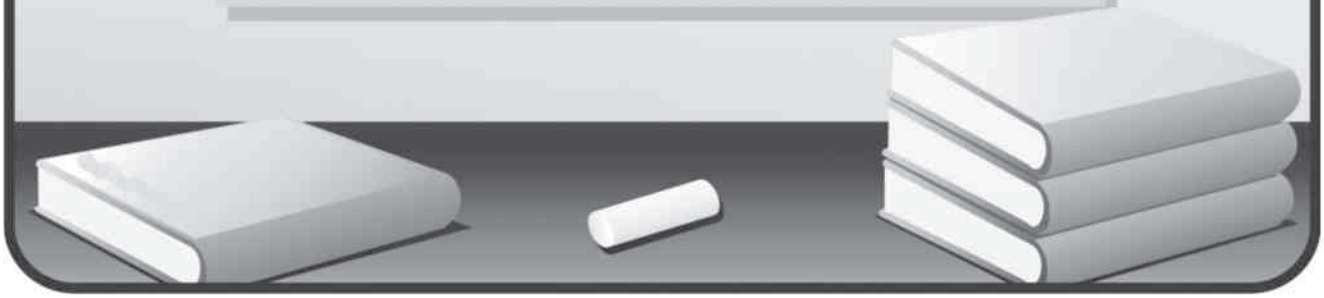

श्रद्धांजलि

जन्म
2 फरवरी 1931

निधन
30 जनवरी 2016

उदयपुर जिले के आदिवासी बहुल भोमट (झाड़ोल-फ.) क्षेत्र में घर-घर शिक्षा की अलख जगाने वाले सरलमना, प्रेरक व्यक्तित्व, कीर्तिशेष

श्रीयुत पं. जीवतरामजी शर्मा

(संस्थापक, राजस्थान बाल कल्याण समिति)

की प्रथम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धांजलि।

श्रद्धावनत :

समस्त परिवार।

आपकी अपनी मासिक पत्रिका

'ए' ग्रेड पाने वाला विद्यापीठ पहला विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय को 'ए' ग्रेड का दर्जा मिलने पर कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत का सम्मान करते विद्यार्थी एवं शिक्षकगण।

उदयपुर। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय का मूल्यांकन व प्रत्यानन परिषद(नेक) ने रिविजिट का प्रस्ताव स्वीकार कर अब इसे ए ग्रेड विश्वविद्यालय होने का दर्जा प्रदान कर दिया है। विद्यापीठ नेक से एक साल में दो बार निरीक्षण करा ए ग्रेड प्राप्त करने वाला प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय स्टाफ व विद्यार्थियों ने इसका श्रेय कुलपति एस. एस. सारंगदेवोत को दिया है। सारंगदेवोत ने कहा कि वह संस्थापक जन्नू भाई के सपनों को साकार करने में कार्य करते रहेंगे। उन्होंने 'प्रत्यूष' को बताया कि नेक की 11 सदस्यीय टीम ने तीन दिन विश्वविद्यालय की सम्पूर्ण कार्य प्रणाली, नवाचार, परीक्षा परिणाम एवं संकायों के कार्यें की गहन समीक्षा की और विश्वविद्यालय उसमें खरा उतरा। उन्होंने कहा कि अब विद्यापीठ की प्राथमिकता एक्सीलेंस टीचिंग और रिसर्च की रहेगी। इससे आदिवासी बहुल उदयपुर संभाग को अधिक लाभ होगा। युवाओं को रोजगार के नए अवसर उपलब्ध होंगे। विद्यापीठ ने एक साल के कम अंतराल में 110 से ज्यादा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार और कांफ्रेंस का आयोजन करवाया।

चुघ अध्यक्ष, गुप्ता महासचिव

डॉ. सुनील चुघ

डॉ. आनंद

उदयपुर। भारतीय चिकित्सा संघ के चुनाव में डॉ. सुनील चुघ अध्यक्ष, डॉ. आनंद गुप्ता महासचिव, डॉ. अनुराग तलेसरा व डॉ. राहुल जैन उपाध्यक्ष, डॉ. प्रशांत अग्रवाल सहसचिव, डॉ. दीपक शाह कोषाध्यक्ष मनोनीत किए गए। मनोनयन डॉ. एस. एस. गुप्ता के मार्गदर्शन में हुआ।

प्रातःकाल-मिराज कैलेण्डर का विमोचन

कैलेंडर का विमोचन करते मिराज ग्रुप के सीएमडी मदन पालीवाल, सुशीला देवी, मंत्रराज पालीवाल, जगदीश सोनी एवं अन्य।

नाथद्वारा। मिराज समूह के सीएमडी मदन पालीवाल ने नववर्ष 2017 के प्रथम दिन यहां 'प्रातःकाल-मिराज कैलेण्डर' का विमोचन किया। उन्होंने प्रातःकाल दैनिक की पाठकों के बीच विशेष साख की चर्चा करते हुए प्रगति की कामना की। प्रातःकाल ब्यूरो प्रमुख जगदीश सोनी ने अपने स्वागत उद्‌बोधन में समाचार पत्र की दीर्घावधि प्रकाशन यात्रा पर विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर श्रीमती सुशीला पालीवाल, मंत्रराज पालीवाल, वरिष्ठ पत्रकार अरविंद मुखिया, पालिका उपाध्यक्ष परेश सोनी भी उपस्थित थे।

रॉयल इनफील्ड बाइक का नया शोरूम

उद्घाटन करते चेम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष पारस सिंघवी। साथ में केपीएस मोर्टस के निदेशक मनीष गहलोत, कुमुद गहलोत व अन्य।

उदयपुर। शोभागपुरा स्थित मेवाड़ सर्किल के समीप रॉयल इनफील्ड मोटरसाइकिल के नया शोरूम का शुभारंभ 15 जनवरी को मुख्य अतिथि उदयपुर चेम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष पारस सिंघवी ने किया। केपीएस मोटर्स के डायरेक्टर मनीष गहलोत व कुमुद गहलोत ने ग्राहकों को नई गाड़ियों की चाबियां सौंपी। कंपनी के एरिया सेल्स मैनेजर तुषार और राजेन्द्र, शोरूम मैनेजर संजय पंवार व गौरव शर्मा भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

कूबड़पन से मिली निजात

पेसिफिक हॉस्पीटल के चेयरमैन राहुल अग्रवाल के साथ माफी कुंवर

उदयपुर। जालोर के अजीतपुरा की 10 वर्षीय माफीकुंवर को जन्म से ही कूबड़पन की समस्या थी। परिवार वालों ने कई जगह दिखाया लेकिन दो से ढाई लाख खर्च के महंगे इलाज और गरीबी के चलते इलाज कराना संभव नहीं था। ऐसे में पेसिफिक हॉस्पीटल के चेयरमैन राहुल अग्रवाल की ओर से इलाज में मदद मिलने से माफी कुंवर को नई जिन्दगी मिल गई। परिवार वाले उसे पेसिफिक हॉस्पीटल लाए जहां जोइन्ट एवं स्पाइन सर्जन डॉ. सालेह मोहम्मद कागजी ने जांच करने पर स्कोलियोसिस-काइफोसिस की बीमारी से ग्रस्त पाया। उनकी देखरेख में तीन घंटे चले सफल ऑपरेशन डॉ. प्रकाश औदिच्य, डॉ. समीर गोयल, सुभाष और बृजेश भारद्वाज की टीम ने सहयोग किया। माफी कुंवर की रीढ़ की हड्डी में रॉड डालकर कूबड़पन(टेढ़ापन) खत्म करने में सफलता हासिल की। अब वह बिल्कुल सही है व सामान्य जीवन जी सकती है।

स्ट्रेटजिक बिजनेस ग्रोथ पर व्याख्यान

संगोष्ठी को सम्बोधित करते अर्थ डायग्नोस्टिक के सीईओ डॉ. अरविन्दर सिंह।

उदयपुर। अर्थ डायग्नोस्टिक के डॉ. अरविंदर सिंह ने दिल्ली में पैथोलोजिस्ट की नेशनल कॉन्फ्रेंस में 'स्ट्रेटजिक बिजनेस ग्रोथ' पर व्याख्यान दिया। बिजनेस ग्रोथ के लिए क्वालिटी और कम मूल्य पर टेस्ट करने की नीति बनाने पर विचार व्यक्त किए। 'पोर्टर फाइव फोर्स मॉडल' द्वारा प्रॉफिट बढ़ाने के तरीके तथा मरीजों के लिये कम दर पर उच्च क्वालिटी डिलीवर करने की मैट्रिक्स भी समझाई। उन्हें पैथोलोजिस्ट एसोसिएशन द्वारा सम्मानित किया गया।

श्रेष्ठ छात्रों का सम्मान

छात्रों का सम्मान करते निदेशक अंकित अग्रवाल, डॉ. किशोर पुजारी एवं डॉ. जयालक्ष्मी एल.एस।

उदयपुर। गीतांजली स्कूल एवं कॉलेज ऑफ नर्सिंग का वार्षिकोत्सव 'गुंजन'-द ईको नृत्य, संगीत व पुरस्कारों के साथ मनाया। मुख्य अतिथि गीतांजली यूनिवर्सिटी के कार्यकारी निदेशक अंकित अग्रवाल और विशिष्ट अतिथि गीतांजली हॉस्पीटल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. किशोर पुजारी और गीतांजली नर्सिंग की डीन डॉ. जयालक्ष्मी एल. एस. थी। इस मौके पर उत्कृष्ट छात्रों का सम्मान किया गया।

नागदा-उदय कप क्रिकेट प्रतियोगिता

विजेता टीम के साथ सोजतिया ग्रुप के एमडी रणजीत सिंह सोजतिया, विष्णु शर्मा हितैषी, मयूरध्वज सिह एवं अन्य।

उदयपुर। नागदा ब्राह्मण युवा मंच संस्थान के तत्वावधान में 13वीं उदय कप-क्रिकेट प्रतियोगिता गत दिनों रेलवे ग्राउण्ड पर सम्पन्न हुई, जिसमें टूस डांगीयान विजेता व मीठानीम टीम उपविजेता रही। टूस डांगीयान ने मीठा नीम की 119 रन की चुनौती को ओपनर आशीष नागदा के नाबाद 119 रन ने विफल कर दिया। मुख्य अतिथि सोजतिया ग्रुप के संस्थापक रणजीत सिंह सोजतिया, समारोह अध्यक्ष प्रत्यूष के प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी, विशिष्ट अतिथि सुखाड़िया विश्वविद्यालय छात्रसंघ अध्यक्ष मयूरध्वज सिंह एवं एडवोकेट चन्द्रभान सिंह ने विजेता टीमों को पुरस्कृत किया। मंच पदाधिकारी देवीलाल व नरेश नागदा ने अतिथियों का स्वागत किया।

अजय बने व्यापार संघ के अध्यक्ष

उदयपुर। पूर्व पार्षद अजय पोरवाल को उदयपुर बड़ा बाजार व्यापार संघ का निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया। संगठन के जनरल हाउस की नजर बाग में आयोजित बैठक में उन्हें अध्यक्ष बनाने का निर्णय लिया गया। उनका कार्यकाल 3 वर्ष का होगा।

पेंटिंग प्रदर्शनी

प्रदर्शनी का शुभारंभ करते अरविंद सिंह मेवाड़।

उदयपुर। महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन द्वारा सिटी पैलेस के छोटा दरीखाना में इमैजिनेशन्स ऑफ के बैनर तले तीन दिवसीय कला प्रदर्शनी इमोशनल ऑउटबर्स्ट का शुभारंभ महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन के प्रबंध न्यासी एवं ट्रस्टी अरविंद सिंह मेवाड़ ने किया। फाउण्डेशन के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी भूपेन्द्र सिंह आउवा ने बताया कि प्रदर्शनी में एब्स्ट्रेट पेंटिंग्स की थीम पर विविध कलर कॉम्बिनेशन्स के उपयोग से बनाई गई पेंटिंग प्रदर्शित की गई थीं।

जिंक भवन को ग्रीन बिल्डिंग अवार्ड

उदयपुर। वेदान्ता समूह की कंपनी हिन्दुस्तान जिंक को कन्फेडरेशन ऑफ इण्डिया ने आईजीबीसी ग्रीन एग्जिस्टिंग बिल्डिंग्स रेटिंग के लिए 'प्लेटीनम रेटिंग' अवार्ड से नवाजा गया। यह सम्मान जिंक के प्रधान कार्यालय के (यशद भवन) को हरा-भरा, जल क्षमता, ऊर्जा दक्षता, नवाचार, स्वस्थ एवं स्वच्छ वातावरण, उत्कृष्ट प्रबन्धन और सुविधाओं से युक्त बनाए रखने के लिए इण्डियन ग्रीन बिल्डिंग काउन्सिल हैदराबाद ने दिया। यह सम्मान सीआईआई-सोहराबजी गोदरेज ग्रीन बिजनेस सेन्टर हैदराबाद के कार्यकारी निदेशक के. एस. वैंकटगिरी ने जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील दुग्गल को दिया। वैंकटगिरी ने बताया कि जिंक का प्रधान कार्यालय देश की उन इमारतों के लिए श्रेष्ठ उदाहरण है, जो कार्यस्थल में हरियाली रखे हुए हैं। जिंक इस अवार्ड से सम्मानित होने वाली राजस्थान की पहली कंपनी है।

जिंक के सीईओ सुनील दुग्गल को अवार्ड देते के. एस. वैंकटगिरी।

पुंगलिया अध्यक्ष निर्वाचित

चित्तौड़गढ़। मार्बल लघु संस्थान के चुनाव में सोहनलाल पुंगलिया निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित हुए। चुनाव अधिकारी जगदीश भाराड़िया ने उनके नाम की घोषणा करते हुए बताया कि चंदेरिया स्थित संस्थान भवन में निर्धारित समय तक अध्यक्ष पद के लिये एक मात्र नामांकन प्राप्त होने पर यह घोषणा की गई। पुंगलिया ने निवर्तमान अध्यक्ष नरेन्द्र बल्दवा को संरक्षक मनोनीत किया।

जी-मीडिया रीजनल चैनल्स के सीईओ बने जगदीश चंद्रा

जयपुर। ईटीवी न्यूज चैनल्स हैड जगदीश चंद्रा अब जी मीडिया रीजनल चैनल्स के सीईओ होंगे। उन्होंने आठ साल के लंबे कार्यकाल के बाद ईटीवी नेटवर्क को छोड़ दिया। ईटीवी छोड़ने के तत्काल बाद उन्होंने जी मीडिया कॉर्पोरेशन ज्वाइन कर रीजनल चैनल्स के सीईओ का पद संभाला। जी मीडिया के रीजनल चैनल्स में जी मरुधरा राजस्थान, जी मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़, जी पूरविया, जी सलाम, 24 घंटा, जी 24 ताश और जी पंजाब-हरियाणा-हिमाचल प्रदेश शामिल हैं।

आदिवासी बच्चों को मिले स्वेटर

आदिवासी बच्चों के साथ सांसद अर्जुन मीणा, प्रवीण रातलिया, जितेन्द्र हरकावत, गौरव तिवारी एवं अन्य।

उदयपुर। आदिवासी बहुल ऋषभदेव उपखंड क्षेत्र के बेमला गांव में सुहानी सर्दी पार्ट दो आंदोलन के तहत सर्दी से बचाव के लिए बच्चों को स्वेटर वितरण किए गए तो पहली बार स्वेटर पहनकर राजू गमेती गदगद हो उठा। यह अकेला राजू ही नहीं था बल्कि उसके जैसे अन्य बच्चे भी हैं, जिन्होंने जीवन में पहली बार स्वेटर पहना। उदयपुर-एक टीम के फाउंडर प्रवीण रतलिया ने बताया कि सुहानी सर्दी पार्ट दो के तहत सांसद अर्जुनलाल मीणा ने बच्चों को नए स्वेटर वितरित किए। इस दौरान जितेन्द्र हरकावत, गौरव तिवारी आदि भी उपस्थित थे। सुहानी सर्दी आंदोलन के तहत गत वर्ष दस हजार बच्चों को जिले भर में स्वेटर वितरित किए गए थे।

शाह सह संयोजक

उदयपुर। राजेश शाह को भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक महोत्सव 2018 की कलश आवंटन उपसमिति का सह-संयोजक नियुक्त किया गया। जगद्गुरु कर्मयोगी स्वस्ति चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी की अनुशंसा पर यह निर्णय लिया गया। श्रीफल परिवार से जुड़े शाह देव शास्त्र और गुरु सेवा में सदा तत्पर रहते हैं। अभी वे भारतवर्षीय दिगम्बर जैन धर्म संरक्षणी महासभा के उदयपुर संभाग अध्यक्ष भी हैं।

नई कार्यकारिणी ने शपथ ली

अध्यक्ष मनोज जैन नई कार्यकारिणी के साथ शपथग्रहण करते हुए।

उदयपुर। व्यापार मंडल सेक्टर 5 व 6 के शपथ ग्रहण समारोह में नई कार्यकारिणी ने शपथ ली। नवनिर्वाचित अध्यक्ष मनोज जैन ने बताया कि इसके साथ ही रक्तदान शिविर लगाया गया। इसमें 80 यूनिट रक्तदान किया गया। मुख्य अतिथि गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया, एसपी राजेन्द्र प्रसाद गोयल और विशिष्ट अतिथि ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, यूआईटी चेयरमैन रवीन्द्र श्रीमाली थे। कार्यकारिणी में सचिव कुलदीप मेहता, उपाध्यक्ष लोकेश नन्दवाना व वालसिंह राठौड़ तथा कोषाध्यक्ष रमेश बोकड़िया चुने गए।

'आर्टिफिशियल लिम्ब वर्कशॉप ऑन व्हील' का लोकार्पण

नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक-चेयरमैन कैलाश 'मानव' आर्टिफिशियल लिम्ब वर्कशॉप का लोकर्पण करते हुए।

उदयपुर। बड़ी ग्राम स्थित नारायण सेवा संस्थान सेवा महातीर्थ में संस्थापक 'कैलाश मानव' ने नारायण मॉड्यूलर आर्टिफिशियल लिम्ब वर्कशॉप ऑन व्हील का लोकार्पण हुआ। यह एक मोबाइल वेन है, जो देश के विभिन्न हिस्सों में जाकर दिव्यांगों को कृत्रिम अंग नि:शुल्क उपलब्ध कराएगी। संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि नारायण मॉड्यूलर आर्टिफिशयल लिम्ब वर्कशॉप ऑन व्हील में तीन इंजीनियरों सहित आठ लोगों की टीम होगी। कैलाश मानव ने कहा कि जीवन वही सार्थक है, जो दूसरों के काम आए। इस दौरान मानव का 71वां जन्मदिवस भी मनाया गया। निदेशक वंदना अग्रवाल ने सर्दी के मौसम में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आठ हजार लोगों व स्कूली बच्चों को कंबल, स्वेटर, जैकेट आदि प्रदान करने की जानकारी दी। कमला देवी अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा, डॉ. ए एस चूण्डावत आदि ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन महिम जैन ने किया।

डीपी ज्वैलर्स को 'बेस्ट ब्राइडल नेकलेस ऑफ द ईयर' अवार्ड

समारोह में अवार्ड प्राप्त करते डीपी ज्वेलर्स के अनिल कटारिया।

उदयपुर। डीपी ज्वैलर्स अपनी उत्कृष्ट वेराइटी एवं प्रतिष्ठित व्यवसाय के लिए जाना-पहचाना नाम है। गत दिनों जे जे एस-आई जे ज्वैलर्स चॉइस डिजाइन के लिए इसे 'बेस्ट ब्राइडल नेकलेस ऑफ द ईयर' अवार्ड दिया गया। जयपुर में आयोजित समारोह में फिल्म जगत की जानी-मानी हस्तियों सहित प्रतिष्ठित व्यक्ति सम्मिलित हुए। यह अवार्ड डीपी ज्वैलर्स के अनिल कटारिया ने ग्रहण किया।

सारंगदेवोत को कर्नल उपाधि

उदयपुर। जेआरएन विद्यापीठ विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर एवं शिक्षा जगत के चमकते सितारे प्रोफेसर एस एस सारंगदेवोत को केन्द्र सरकार की ओर से सेना की कर्नल मानद उपाधि से विभूषित किया जाएगा। यह प्रतिष्ठित सम्मान उनके द्वारा उच्च शिक्षा शोध में उत्कृष्ट योगदान, एनसीसी कैडेट्स को मोटिवेशन के लिए दिया जा रहा है। विद्यापीठ में आयोज्य समारोह में सेना के डीजीपी उन्हें कर्नल रैंक एवं युनिफॉर्म नवाजेंगे। उल्लेखनीय है कि विद्यापीठ के संस्थापक जनार्दनराय नागर के स्वप्न को साकार करते हुए कुशल प्रबंधन एवं नवाचारों के माध्यम से उन्होंने कम समय में ही विद्यापीठ को विश्वविद्यालय का दर्जा दिलवाया। सारंगदेवोत के सान्निध्य में 50 स्कॉलर पीएचडी कर चुके तथा उनकी लिखित 15 पुसतकें, 300 आलेख और एक दर्जन से अधिक जर्नल्स प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी सरलता, सहजता हर किसी को प्रभावित करती है। इन्हें जौहर स्मृति सम्मान भी मिल चुका है। वे कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हैं।

मंदवानी वरिष्ठ उपाध्यक्ष मनोनीत

उदयपुर। भूपालपुरा सिंधी सेवा समिति की गत दिनों हुई साधारण बैठक में अध्यक्ष अशोक कुकरेजा ने कार्यकारिणी में नंदलाल मंदवानी को वरिष्ठ उपाध्यक्ष मनोनीत किया। बैठक की अध्यक्षता संरक्षक चंदर राजानी ने की। महासचिव रवि कुकरेजा ने संचालन किया।

भटनागर ने जीता स्वर्ण पदक

उदयपुर। मुख्य वन संरक्षक राहुल भटनागर ने हैदराबाद में आयोजित 23वीं ऑल इंडिया फोरेस्ट स्पोर्ट्स मीट में लॉन टेनिस के सीनियर वैटरन वर्ग में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। उन्होंने फाइनल में मध्यप्रदेश के रमेश गुप्ता को 6.1 व 6.3 से हराया। इस स्पोर्ट्स मीट में राजस्थान ने 2 स्वर्ण एवं 4 कांस्य पदक हासिल किए। राजस्थान को दूसरा स्वर्ण टेबल टेनिस में जयपुर के सतीश भार्गव ने दिलाया।

इन्दिरा आईवीएफ अब वाराणसी व इलाहाबाद में भी

इलाहाबाद में सेंटर का शुभारम्भ करते नागरिक सुरक्षा मंत्री रघुराज प्रताप सिंह, अक्षय प्रताप सिंह, ग्रुप चेयरमैन डॉ. अजय मुर्डिया, डॉ. क्षितिज मुर्डिया, ऑपरेशन्स डायरेक्टर मनीष खत्री एवं अन्य।

वाराणसी। नि:संतान दम्पतियों के लिए उम्मीद की किरण इन्दिरा आईवीएफ ने इलाहाबाद में भी अपना 18वां सेंटर खोल दिया है। उत्तर भारत में नि:संतानता की बढ़ती समस्या को देखते हुए इस सेंटर का शुभारंभ किया गया। उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि उत्तरप्रदेश के नागरिक सुरक्षा मंत्री रघुराज प्रताप सिंह 'राजा भैया', विशिष्ट अतिथि उत्तरप्रदेश विधान परिषद के सदस्य अक्षय प्रताप सिंह, इन्दिरा आईवीएफ ग्रुप के चेयरमैन डॉ. अजय मुर्डिया, ग्रुप मेडिकल डायरेक्टर डॉ. क्षितिज मुर्डिया, ऑपरेशंस डायरेक्टर मनीष खत्री और सेंटर के डॉक्टर्स की टीम के साथ इन्दिरा आईवीएफ से लाभान्वित दम्पती उपस्थित थे। इससे पूर्व इन्दिरा आईवीएफ एण्ड टेस्ट ट्यूब बेबी ग्रुप ने वाराणसी में भी 17वें सेंटर की शुरुआत की।

मेनारिया प्रतिभा सम्मान समारोह

उदयपुर। मेनारिया दर्पण न्यास, उदयपुर एवं मेनारिया समाज भाटोली ब्राह्मण के संयुक्त तत्वावधान में ग्राम भाटोली ब्राह्मणान में गत दिनों मेनारिया समाज का प्रतिभा सम्मान समारोह हुआ। इसमें नवचयनित दो आरएएस सहित कुल 549 प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि इंदौर के जसराज मेहता थे। समारोह की अध्यक्षता रामचन्द्र नागदा(घोसूंडी) ने की। मुख्य अतिथि जसराज मेहता व अतिविशिष्ट अतिथि चित्तौड़ के सांसद सीपी जोशी, बड़ी सादड़ी विधायक गौतम दक, विशिष्ट अतिथि बीएसएनएल के वरिष्ठ महाप्रबन्धक जगदीश मेनारिया, गोपाल आश्रम पीठ बड़ीसादड़ी के महंत बंशीधराचार्य, मेनारिया समाज के अखिल भारतीय अध्यक्ष गणपतलाल, देवराज जोशी(सलूम्बर), प्रतापगढ़ भाजपा जिलाध्यक्ष धनराज शर्मा (चान्दोली), ओम पानेरी थे। न्यास अध्यक्ष रामचन्द्र मेनारिया ने न्यास की योजनाओं एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। महासचिव ओंकारलाल मेनारिया ने न्यास का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

बान्सी अध्यक्ष निर्वाचित

उदयपुर। कस्तूरबा मातृ मंदिर डॉ. आत्मप्रकाश भाटी हॉस्पीटल की साधारण सभा की 15 जनवरी को हुई बैठक में प्रबंध समिति के अध्यक्ष पद के लिए हुए चुनाव में तेजसिंह बांसी को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया। सचिव डॉ. जयप्रकाश भाटी ने बताया कि संस्था परिसर में सम्पन्न चुनाव में उनके नाम का प्रस्ताव डॉ. गिरिराज शर्मा गुंजन व अनुमोदन प्रो. लक्ष्मीलाल वर्मा ने किया। इसके बाद बी. एन. संस्थान के पूर्व प्रबंध निदेशक तेजसिंह बांसी को अध्यक्ष चुन लिया गया। इस अवसर पर एडवोकेट शांतिलाल पामेचा व विष्णु शर्मा हितैषी ने शिक्षा व समाज सेवा के कार्यों में बांसी के उल्लेखनीय योगदान पर विचार व्यक्त किए। कार्यकारिणी सदस्य एडवोकेट फतहलाल नागौरी, सरदार प्रीतम सिंह, डॉ. जगदीश भाटी, गणपत सिंह हिंगड़ व विपिन गांधी भी उपस्थित थे।

नाहर वैश्य महा सम्मेलन के जिलाध्यक्ष

उदयपुर। अंतर्राष्ट्रीय वैश्य फैडरेशन के महासचिव बाबूराम गुप्ता एवं राजस्थान वैश्य फैडरेशन के प्रदेशाध्यक्ष आत्माराम गुप्ता ने उदयपुर जिला वैश्य महासम्मेलन के जिलाध्यक्ष पद पर एक बार पुन: अनिल नाहर को नियुक्त किया है। नाहर ने कहा कि जल्द ही महा सम्मेलन की नई कार्यकारिणी की घोषणा की जाएगी। नाहर वर्तमान में जैन सोश्यल ग्रुप विजय के अध्यक्ष भी हैं एवं लायंस क्लब के पूर्व प्रांतपाल, उदयपुर ऑटो मोबाइल डीलर्स एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष, साधुमार्गी शांत क्रांति संघ के राष्ट्रीय मंत्री एवं अन्य कई सामाजिक संस्थानों से सम्बद्ध रहे हैं।

स्कूली बच्चों को स्वेटर वितरित

उदयपुर। बी. चौधरी मेमोरियल ट्रस्ट व जावर माइन्स मजदूर संघ, जावर माइन्स के संयुक्त तत्वावधान में माइन्स के आस-पास के स्कूली बच्चों को 3000 स्वेटर वितरित किये गये। कार्यक्रम में हिन्दुस्तान जिंक वर्कर्स फेडरेशन के कल्याणसिंह शक्तावत, मांगीलाल अहीर, कृष्णगोपाल पालीवाल, लालूराम मीणा, इकाई प्रधान पी. एस. जेतावत, साई राम, सुशील कुमार व पदाधिकारी तथा कार्यकारिणी सदस्य भी उपस्थित थे।

नर्सिंग स्कूल कॉलेज फेडरेशन की स्वास्थ्य मंत्री से भेंट

जयपुर। प्रदेश में स्वास्थ्य विभाग की नीतियों के सफल क्रियान्वयन के बारे में प्राइवेट नर्सिंग स्कूल कॉलेज फेडरेशन ने 6 जनवरी को स्वास्थ्य मंत्री कालीचरण सर्राफ से भेंट की। शिष्ट मंडल में फेडरेशन के संयुक्त सचिव डॉ. प्रमोद पाल, सचिव विमल मीणा, डॉ. सुमन रावत व कैलाश सोनी सहित अन्य सदस्य शामिल थे। इस अवसर पर स्वास्थ्य विभाग के सहायक कुल सचिव शशिकान्त शर्मा भी मौजूद थे।

मेवाड़ा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

उदयपुर। अखिल भारतीय जायसवाल(सर्ववर्गीय) युवा महासभा संस्था के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद पर दीपक मेवाड़ा को मनोनीत किया गया है। उनका मनोनयन राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय जायसवाल ने किया।

शोक समाचार

उदयपुर। **श्रीमती कंचन देवी जी नाहर** धर्मपत्नी स्व. श्री भगवती लाल नाहर का 20 दिसम्बर 2016 को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे पुत्र रवि, पुत्री अंजलि कच्छारा व स्व. पुत्र पंकज का भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। गुरुधाम शिशवी के महंत श्रीमनोहर गिरधारीजी महाराज की माताश्री श्रीमती **मोहिनी बाई** का 17 जनवरी 2017 को निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल महंतश्री सहित चार पुत्र व चार पुत्रियां छोड़ गई हैं।

उदयपुर। राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान की पूर्व संयुक्त निदेशक **शारदा पांडोर** पत्नी स्व. वल्लभराम डामोर का 30 दिसम्बर को निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल सास वरजू बाई, पुत्र शोभित एवं पुत्री महिमा सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्री चम्पालाल जी जोशी का आकस्मिक निधन 10 जनवरी को हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती हीरा बाई, पुत्र नरेन्द्र, दुर्गेश, पुत्रियां निर्मला, मंजू, दुर्गा, कमला सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गए।

उदयपुर। **श्री विमलचन्द जी जैन (सौगाणी)** का आकस्मिक निधन 16 जनवरी को हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती विमला देवी, पुत्र दीपेन्द्र, पुत्रियां मधु, मंजू, सरिता सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गए।

आनंद वृद्धाश्रम में नववर्ष समारोह

उदयपुर। भारतीय सेना की उदयपुर स्थित छावनी के सेना अधिकारियों की पत्नियों ने नववर्ष को विशेष ढंग से मनाया। श्रीमती सोनाली पाटिल पत्नी ब्रिगेडियर एस. एस. पाटिल, श्रीमती गीतांजलि शर्मा पत्नी कर्नल पंकज शर्मा तारा संस्थान के आनंद वृद्धाश्रम पहुंचे तथा वहां बुजुर्गों को शुभकामनाएं देकर उनके साथ नववर्ष मनाया। संस्थान द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया।

With Best Compliments

Deepak Bordia

Chartered Engineer. M.I.E., F.I.V.
Approved Valuer

BORDIA & ASSOCIATES

ARCHITECTURAL DESIGNER, PLANNER &
BUILDER EXECUTE
ALL KIND OF CIVIL ENGINEERING WORKS

211, Shubham Complex, 11-A New Fatehpura, Near Sukhadia Circle
Uaipur -313 004 (Raj.), Ph.: 2419465 (O) 2524202 (R)
e-mail : deepakbordia@hotmail.com I bordiaandassociates@gmail.com

BDGH since 1980

बिलासी देवी गट्टानी अस्पताल

36 Years of Quality care Gattani Hospital

शास्त्री सर्कल, उदयपुर (राज.) मो. 9414162750, 9414169339, 9214460062

Web site - www.pileshospitaludaipur.com, www.childvaccinationudaipur.com

पाइल्स (क्रायो द्वारा) फिशर, फिस्टूला चिकित्सा का एक मात्र विश्वसनीय केन्द्र

पाइल्स (क्रायो द्वारा)

एक दिन में छुट्टी
18,000 सफल ऑपरेशन

बच्चेदानी ऑपरेशन (बिना टांके / दूरबीन द्वारा)

रियायती दरों पर
सामान्य प्रसव एवं सिजेरियन

डॉ. मुकेश देवपुरा
एम.बी.बी.एस., डी.सी.एच.
मो. 94141-69339

नि:संतानता एवं स्त्री रोग चिकित्सा

शिशु चिकित्सा एवं टीकाकरण केन्द्र

पेट एवं गर्भाशय केंसर का आधुनिकतम् इलाज

डॉ. कल्पना देवपुरा
एम.बी.बी.एस., एम.एस.
मो. 94141-62750

सभी प्रकार के दूरबीन ऑपरेशन (हर्निया, पथरी)

A Product of अर्चना Panch 5 mani Fragrance

अर्चना एक्टिव डिटर्जेन्ट वॉशिंग पाउडर
कपड़े रहे एक्टिव अर्चना एक्टिव डिटर्जेन्ट के साथ

आधुनिक एवं सर्वश्रेष्ठ तकनीक का आविष्कार एक्टिव डिटर्जेन्ट पाउडर

1 Kg. वाले कट्टे में 25 पाउच
500 Gram वाले कट्टे में 40 पाउच
200 Gram वाले कट्टे में 80 पाउच

निर्माता : **पंचमणी फ्रेगरेन्स**

कार्यालय : ने. हा. 76, एयरपोर्ट रोड
ग्लास फैक्ट्री चौराहा, खेमपुरा की तरफ
उदयपुर-313001 (राजस्थान)

वेबसाईट : www.archanaagarbatti.com
ई-मेल : sales@archanaagarbatti.com
www.facebook.com/Archana Agarbatti

फोन : 0294-2492161, 2490899

व्यावसायिक पूछताछ एवं डीलरशिप हेतु आर्थिक रूप से सुदृढ़ पार्टियां (वितरक रहित क्षेत्र में) सम्पर्क करें।

मो.: +91-98290 42705, +91-99508 15555

कस्तूरबा मातृ मन्दिर:

डॉ. आत्मप्रकाश भाटी हॉस्पिटल

देहलीगेट बाहर, उदयपुर (राज.) फोन नं. 0294-2411050

Email : kasturbamm67@gmail.com

हमारी विशेषता – कम से कम पैसा – आवश्यक चिकित्सा एवं स्वच्छता।

योग्य और अनुभवी स्त्री रोग विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा आधुनिक एवं उत्तम चिकित्सा सेवाएं

- IUI-IVF की सुविधा।
- महिलाओं से संबंधित सभी बीमारियों का उपचार एवं ऑपरेशन जैसे बच्चेदानी निकालना, बच्चेदानी से रक्तस्त्राव, बच्चेदानी की गाँठ आदि।
- डिलीवरी (प्रसूति व स्त्री रोग) चिकित्सा एवं सिजेरियन ऑपरेशन।
- परिवार नियोजन से संबंधित महिला नसबंदी की सुविधा।
- नि:संतान स्त्रियों की उचित जाँच एवं इलाज की उत्तम व्यवस्था।
- शिशु रोग विशेषज्ञ की सेवाएँ।
- प्रयोगशाला संबंधी जाँच की सुविधा ।
- सोनोग्राफी की सुविधा।
- भर्ती हेतु जनरल वार्ड एवं प्राइवेट वार्ड की सुविधा उपलब्ध।
- एम्बुलेन्स सुविधा।

दांत के रोगों के इलाज की सुविधा।

- दाँतों में दर्द व ठंडा गर्म लगना
- रूट कैनाल (RCT) द्वारा सड़े दांतों का इलाज।
- डिजिटल कम्प्यूटर एक्सरे (RVG)
- दर्द रहित दांत व दाढ़ निकलवाने की सुविधा
- नई बत्तीसी लगाने की सुविधा एवं सभी प्रकार के दांत लगाना। (Fixed & Removable)
- बच्चों में विभिन्न प्रकार के दन्त रोगों का बचाव एवं इलाज
- कॉस्मेटिक डेन्टिस्ट्री की विशेष सुविधा।
- आधुनिक तकनीक एवं मेटेरियल (CERAMIC) द्वारा कैपिंग, ब्रिज की सुविधा।
- टेढ़े-मेढ़े दांतों का इलाज।
- अक्ल दाढ़, जबड़ों एवं फेक्चर का इलाज।
- दांतों का पीलापन दूर करना।
- सभी प्रकार के दांतों में फीलिंग (FILLING) आदि।

बेसिक बॉडी प्रोफाइल में 44 जांचें इस प्रकार हैं

1.	ब्लड शुगर जांच	- 02
2.	लिपिड प्रोफाइल जांच	- 10
3.	लीवर संबंधी जांच	- 09
4.	रिनल संबंधी जांच	- 03
5.	मूत्र संबंधी जांच	- 05
6.	सम्पूर्ण खून (रक्त) संबंधी जांच (सी.बी.सी.)	- 20
	कुल जांचें	- 44

Go for an Exclusive Marble

ARAVALI ONYX

Only at Aravali

ARAVALI GROUP

ARAVALI

Minerals & Chemical Industries Pvt. Ltd.

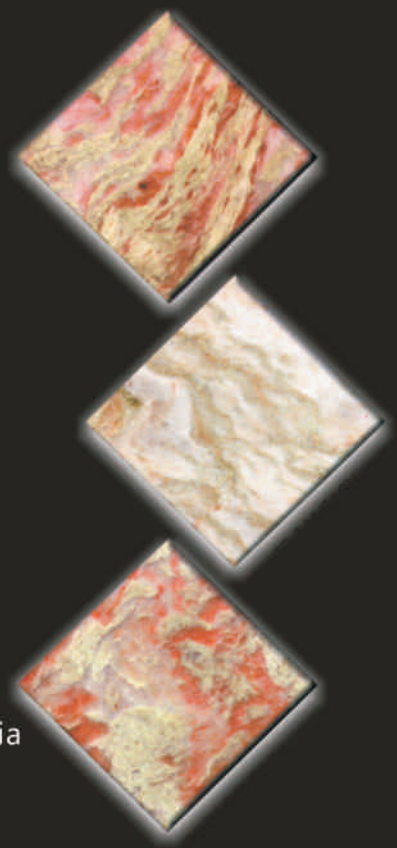

B-132, Mewar Industrial Area, Madri, Udaipur (Raj.) India
Tel. : 91-294-2490675, 2491357
Fax : 91-294-2491675
E-mail : aravali1975@gmail.com, info@indianonyx.com